हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

16 जनवरी, 1974 (प्रथम बैठक)

खण्ड 1, अंक 10

अधिकृत विवरण

विषय–सूची

सोमवार, 14 जनवरी, 1974

		पृष्ठ संख्या
तारांकित प्रश्न एवं उत्तर	(10)	1
अतारांकित प्रश्न एवं उत्तर	(10)	27
सचिव द्वारा घोषणा	(10)	29
कार्य मन्त्रणा समिति का चौथा प्रतिवेदन	(10)	29
सदन पटल पर रखे गए कागज–पत्र	(10)	30
वर्ष 1974–75 के बजट पर सामान्य चर्चा (पुनरारम्भ)	(10)	31

हरियाणा विधान सभा

बुधवार, 16 जनवरी, 1974 (प्रथम बैठक)

विधान सभा को बैठक, हरियाणा विधान सभा हाल, विधान भवन, सैक्टर 1, चण्डीगढ में प्रातः 9.30 बजे हुई । अध्यक्ष (चौधरी सरूप सिंह) ने अध्यक्षता की

Mr. Speaker : The Question Hour please.

तारांकित प्रश्न एंव उत्तर

Co-operative Consumer Stores

***549. Chaudhri Ram Lal Wadhwa :** Will the Minister for Irrigation and Power be pleased to state—

(a) the number of Co-operative Consumers Stores in the State; and

(b) whether they are running in profit or in loss ?

Minister of State for Co-operation and Local Government (Chaudhri Goverdhan Dass Chauhan) : (a) 72

(b)	Profit	Loss
	20	29

चौधरी राम लाल वधवा : क्या वजीर साहब बतायेंगे कि पार्ट 'ए' में जो उन्होंने बताया है उसकी जिलावार पोजीशन क्या है? सिंचाई तथा विंद्युत मन्त्री (श्री बनारसी दास गुप्ता) रू

इस बारे में अध्यक्ष महोदय जिलावार पोजीशन इस प्रकार है । अम्बाला में दो सैट्रल और आठ प्राइमरी स्टोर हैं । कुछ ऐसे भी हैं जिनको हम वाइड अप कर रहे हैं । लेकिन जिला अम्बाला में कोई नहीं है । कुरूक्षेत्र में ल्क सैट्रल, दो प्राइमरी और एक सैट्रल जो है उसे बंद करने जा रहे हैं । करनाल में दो सैंट्रल, 9 प्राइमरी और इन में से दो प्राइमरी वंद करने जा रहे हैं । जीद में सैट्रल कोई नहीं पांच प्राइमरी और इम में से चार बंद करने जा रहे हैं । हिसार में एक सैंट्रल, सात प्राइमरी और इन में से प्राइमरी दो को बन्द करने जा रहे हैं । भिवानी में एक सैड़ल, सात प्राइमरी और इन प्राइमरी में से चार को बन्द कर रहे हैं । महेन्द्रगढ में सैट्रल कोई नहीं 6 प्राइमरी और इन 6 में से 5 को बन्द करने जा रहे हैं रोहतक में एक सैट्रल पांच प्राइमरी और इन पांच में से दो को बंद कर रहे हैं । सोनीपत में सैट्रल कोई नहीं पांच प्राइमरी और बंद कोई नहीं कर रहे हैं। गुड़गांव में एक सैंट्रल 9 प्राइमरी और 9 में से पांच को बंद करने जा रहे हैं । श्री गिरीश चन्द्र जोशी रू क्या मंत्री महोदय बतायेगे कि अम्बाला का सुप्र बाजर प्राफिट पर चल रहा है और जगाधरीका जो कंज्यूमर कुआप्रेटिव स्टोर है वह घाटे पर चल रहा है तो क्या जगाधरी के स्टोर को अम्बाला के सुप्र बाजार की ब्रान्च बनाने की स्कीम है ताकि उस का काम ठीक चल सके और लौस में न जाये ?

श्री बनारसी दास गुप्त : इस पर विचार कर लेंगे ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या वजीर साहब बतायेंगे कि यह जो बंद करने की बात कर रहे हैं तो क्या कहीं पर नये खोलने का भी विचार है?

श्री बनारसी दास गुप्ताः जहां आवश्यकता होगी वहां जरूर खोलेंगे ।

चौधरी दल सिंह : क्या वजीर साहव बतायेंगे कि यह जो सैंट्रल और प्राइमरी स्टोर बंद करने जा रहे है उनके बंद करने का क्या कारण है?

श्री बनारसी दास गुप्त : उनका काम ठीक प्रकार से नहीं चल रहा है । कोशिश तो बड़ी की कि उनके काम को इम्प्रूव किया जाए लेकिन जब वह इम्प्रूव नहीं हो पाया तो बंद करने का निश्चय कर लिया है ।

श्री गुलाब सिंह जैन : क्या वजीर साहब बतायेंगे कि हिसार का जो स्टोर रहा है वह मुनाफे पर चल रहा है या नुक्सान पर और अगर वह नुक्सान पर रहा है तो क्या उसे बंद करने का विचार रखते हैं?

चौधरी गोवर्धन दास चौहान : वह नुक्सान पर चल रहा है हम उसको इम्प्रूव कर रहे हैं और उसे बंद करने का विचार नहीं है ।

श्री के ० एन ० गुलाटी : क्या वजीर साहब बतायेंगे कि कंज्यूमर स्टोर्ज की कमेटियां जो 16/12/73 को खत्म हो चुकी है उनकी नामीनेशन और इलैक्शन कब होंगे?

श्री अध्यक्ष : यह सप्लीमैटंरी इससे अराइज नहीं होता है ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या वजीर साहब बतायेंगे कि यह जो नुक्सान में. रहे हैं इनके नुक्सान में चलने का कारण क्या है?

श्री बनारसी दास गुप्त : अध्यक्ष महोदय, इसके कई प्रकार के कारण हैं । वह जो स्कीम है यह चाइनीज एग्रेशन के बाद सैंट्रल गवर्नमैंट के कहने पर प्रारम्भ की थी । सैंट्रल गवर्नमैट ने भी इसकी इनक्वायरी करवाई है और स्टेट गवर्नमैंट ने भी इन्कवारी करवाई है । कई जगह ऐसा है कि इन में ज्यादा चीजें वह बेची जाती दैं जे कटरोल्ड आइटम्ब हैं जैसे शूगर, मिट्टी का तेल है और कई प्रकार के ऐसे जइटम्ज हैं जिन पर मारजिन आफ प्राख्यि कम है । कई स्टोर ऐसे हैं जिन में प्रबन्ध कुशल आदमियों के हाथ में न्हीं है । कोशिश यह की जा रही है कि अच्छे लोगों को इन स्टोर्ज में लगाया जाये । तो इ स प्रकार के कई कारण हैं जिमकी वजह से बह घाटे में चल रहे हैं । कोशिश यह है कि या तो इन स्टोज को इमप्रूव किया जावे और या फिर इनको वाइडअप किया

चौधरी दल सिह : क्या वजीर साहब बतायेंगे कि यह जो उन्होंने 20 स्टोर बताये कि मुनाफे में चल रहे हैं और 29 घाटे में चल रहे हैं तो पिछले साल जो घाटे मे रहे उनको कितना घाटा हुआ और जो मुनाफे में रहे उनको कितना मुनाफा हुआ?

चौधरी गोवर्धन दास चौहान : स्पीकर साहब, जो प्राफिट पर चल रहे हैं उनके प्राफिट की पोजीशन इस प्रकार है :

List of the Co-operative Consumers Stores Running in Profit as on 30-6-1973,

Name of Store	Amount of profit
Faridabad (Central)	Rs. 3,000/-
Northern Rly. (Primary) Employees Kalka	Rs. 1,176/-
H.M.T.Pinjore	Rs.24,031/-
Ambala Cantt.	Rs. 5,676/-
Ambala Cantt. Sethi	Rs. 2,418/-
Mullana	Rs. 310/-
Jagadhri Railway Employees.	Rs.7,790/-

Naraingarh Rs. 473/-

Shishu Rs. 45/-

Nilokheri ITC Centre Rs, 2,079/-

Nilokheri T.C. Centre Rs. 1,025/-

Sonepat Rs. 4,076/-

Ganaur B.S.T. Rs, 5,117/-

Ganaur Mahavir Rs. 5/-

Textile Indl.

Workers Faridabad Rs. 26,148/-

Hyderabad Asbestors

Employees Faridabad. Rs. 1,871/-

Manohar at Dadri Rs. 50,274/-

Hissar Textile Mill Rs. 792/-

Hansi Haryana Rs.12,723/-

Jind Northern Rly. Employees Rs. 746/-

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या वजीर साहब बतायेंगे कि यह जो मुनाफा हुआ है यह कितनी सेल के अगेन्सट हुआ है?

श्री अध्यक्ष : यह सप्लीमैटरी क्वैश्चन इस सवाल से एराइज नहीं होता चौधरी राम साल वधवा रू क्या वजीर साहब बतायेंगे कि करनाल के कज्यूमर स्टोर में घाटा है आंर उसका कारण क्या है?

श्री गोवर्धन दास चौहान : करनाल के स्टोर को 1,60, 000 का घाटा है ।

चौधरी हरि सिंह : क्या वजीर साहब बतायेंगे फि यह जो 72 स्टोर्ज हैं इन में से देहात में कितने थैं और शहरों में फितने हैं और अमर देहात में नहीं है तो क्या खोलने का विचार रखते हैं?

श्री बनारसी दास गुप्ता : दिहात में जहां आवश्यकता होगी वहां खोलने पर विचार कर लेंगे ।

चौधरी धजा राम : क्या वजीर साहब बतायेंगे कि इन 72 स्टोर्ज के अन्दर कुल इनवैस्टमैंट कितनी है और वकिंग कैपीटल कितनी है?

श्री अष्यक्ष : यह सप्लीमैंटरी क्यैश्चन नहीं है ।

श्री अमर सिंह : क्या वजीर साहब बतायेंगे फि करनाल के स्टोर में जो 1,64,000 रुपये का घाटा है इसका कारण क्या है ?

श्री बनारसी दास गुप्ता : इसके कारण भी वही हैं जो मैंने पहले अभी–अभी बताये हैं ।

चौधरी शिव राम वर्मा : क्या वजीर साहब बतायेंगे कि इन में कुल घाटा कितना है और इसे पूरा कैसे किया जायेगा?

श्री अध्यक्ष : यह सप्लीमैंटरी क्वैश्चन एराइज नही होता है ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या वजीर साहब बतायेंगे कि तरावडी में जो मारकिटिंग एड प्रासैसिंग सोसायटी है जिसके चौधरी शिव राम भी मैंबर हैं उस में जो गबन हुआ है उसकी क्या पोजीशन है?

श्री अध्यक्ष : यह सप्लीमैंटरी क्वैश्चन एराइज नहीं होता है ।

श्री गुलाब सिंह जैन : क्या वजीर साहब बतायेंगे कि हिसार के कंज्यूमर स्टोर मे चीनी के मामले में काफी गड़बड़ हुई है क्या कोई इस किस्म की शिकायत सरकार के पास आई है और अगर आई है तो क्या कार्यवाही की जा रही है?

श्री अध्यक्ष : यह सप्लीमैंटरी क्वैश्चन एराइज नहीं होता है ।

Emporia Established

***569. Chaudhri Phool Singh Kataria :** Will the Minister for Industries be pleased to state—

(a) the total number of emporia established in the State as on 31st December, 1973 ; and

(b) the number and names of emporia running in profit and in loss, separately ?

Industries Minister (Shri Harpal Singh) :

(a) Six, including three Mini Emporia.

(b) Information cannot be supplied at this stage as the accounting year of the Haryana State Small Industries & Export Corporation which runs these Emporia closes on 30th June, 1974.

चौधरी राम लाल वधवा : क्या वजीर साहव बतायेगे कि क्या यह एम्मोरियम्ज अगले साल कहीं और भी खोलने की योजना है?

श्री हरपाल सिंह : अभी तो कोई योजना नहीं है ।

चौधरी हरि सिंह : क्या वजीर साहब बतायेंगे कि इन एम्पोरिया में कौन कौन सी चीजें बेची जाती हैं और वइ कहां–कहां से आती हैं ।

श्री हरपाल सिंह : स्पीकर साहब, वह जो एम्पोरिया बनाये गये थे इनके बनाने का मेन इडिया यह था कि हमारी स्टेट में जो स्माल स्केल इन्डस्टरीज ह वे जो चीजें बनाता हैं उनको मारकिटिंग मिलें बाहर एक्सपोर्ट के लिये भी और दूसरी स्टेटस में बेचने के लिये भी, और आज हरियाणा में जितने यूनिटसु हैं हैं डी–काफ्टस के, हैंड लूम के और स्माल स्केल इन्डस्टरीज के, उन में जो माल तैयार होता है वह इन एमपोरिया मै डिसपले होता है और उसे बे सेल भी करते हैं। इससे मैनुफेक्चरज को हैल्प मिलती है क्योंकि ये उनका माल बाहर एक्सपोर्ट करते हैं । यह इम्पोरिया बहुत अच्छा काम कर रहे हैं

मलिक सतराम दास बतराः क्या मन्त्री महोदय बतायेगे कि हरियाणा का एम्पोरियम जो कैनाट प्लेस दिल्ली में है. उसकी सेल की क्या पोजीशन है दूसरी स्टेटों के मुकाबले में?

श्री हरपाल सिंह : दूसरी स्टेटों की इन्फर्मेशन देने के लिए तो सैप्रेट नोटिस चाहिए लेकिन जहां तक कैनाट प्लेस के एम्पोरियम को सेल का ताल्लुक है, उसमें बहुत अच्छी सेस है ।

श्री अमर सिंह : जैसा कि मन्त्री महोदय ने बताया कि सवाल के पार्ट (ए) के जवाब में बताया कि 6 एम्पोरिया हैं । क्या वे बतायेंगे कि वे कहा–कहां हैं और इनकी रोजाना सेल कितनी है? श्री हरपाल सिंह रू तीन एम्पोरिया बड़े हैं ओर तीन छोटे हैं ।

जो बड़े हैं वे एक चण्डीगढ, एक अम्बाला और एक नई–दिल्ली में है । छोटे एक पिंजौर, एक उचाना और एक सुलतानपुर मैं है ।

चौधरी दल सिंह : क्या मन्त्री महोदय बतायेंगे कि दिल्ली में जो इम्पोरिया चल रहा है उगमें सालाना क्या नफा रहा और क्या घाटा रहा?

Mr. Speaker : it is a separate question and not a supplementary.

Employment in Public Sector

***589. Shri Behari Lal Balmiki :** Will the Minister for Development be pleased to state-

(a) the steps taken by the Government to generate employment in the public sector;

(b) the total number of persons who got employment in public sector during the period from 1st May, 1968 to 31st December, 1973 ; and

(c) the steps taken further to provide jobs to the unemployed in the State ?

Chief Minister (Chaudhri Bansi Lal) :

(a) The following steps in general have been taken ;—

(i) The development programmes in the State have been intensified resulting in substantial employment opportunities particularly for the educated unemployed ;

(ii) The likely expenditure for the Fourth Plan would be Rs. 342 crores against an outlay of Rs. 225 crores.

The specific steps taken in this behalf are ;—

(i) Special Employment Programme ;

(ii) Half-A-Million Jobs Programme ;

(iii) Crash Scheme for Rural Employment ; and

(iv) Special Employment Programme for Educated Unemployed.

(b) According to Employment Market Information, employment in the public sector has increased from 137601 at the end of June, 1968 to 203078 at the end of June, 1973 providing additional employment to 65477 persons.

(c) Emphasis has been given in the Fifth Plan to labour intensive programme, where feasible, to provide more employment opportunities. The special employment schemes mentioned under item 'A' above are likely to continue during the Fifth Plan as well.

Pass Books to the Land owners

***604. Chaudhri Dal Singh : Will the** Minister for Revenue be pleased to state —

(a) whether the Pass Books have been supplied to the Land owners in the State ;

(b) if so, the total number of Pass Books supplied to the landowners so far ;

(c) the total number of Pass Books yet to be supplied to the landowners in the State ; and

(d) the time by which the Pass Books as referred to in Part (c) above are likely to be supplied to the land owners ?

Revenue Minister (Pandit Chiranji Lal Sharma) ;

(a) Yes.

(b) 6,31,514.

(c) 8,53,571.

(d) By the end of the year 1974.

चौधरी दल सिंह : स्पीकर साहब, मन्त्री महोदय ने फरमाया कि 8,53,571 पास–बुक्स इशु करना वाकी रहती हैं । क्या मन्त्री महोदय बतायेंगे कि इतनी जिले का क्या कारण है? क्या गवर्नमैंट डिले का कारण है या पटवारी?

Pandit Chiranji Lal Sharma : The pass-books are under preparation. There was some slackness for sometime. When I took over charge a decision was taken that Pass-books must be distributed as early as possible and instructions were issued accordingly and I hope, we will be able to distribute the remaining pass-books by the end of this year.

श्री जगजीत सिह टिक्का : क्या मन्त्री महोदय बतायेंगे कि क्या इस किस्म की कोई स्कीम है कि पास–बुक में जमींदार की जमीन की वैल्यूएशन भी लिखी जाएगी ? अगर जमीन की

वैल्यूएशन लिखी जाए तो ठीक रहेगी, क्योंकि किसान को कर्ज लेते वक्त सैप्रेट वैल्यूएशन लेनी पड़ता है ।

Pandit Chiranji Lal Sharma : The pass-books have already been , printed.

चौधरी फूल चन्द (मुलाना) : क्या मन्त्री महोदय बतायेंगे कि किसानों को पास बुक सप्लाई करने से कितना लाभ हुआ है?

Pandit Chiranji Lal Sharma : It is just to facilitate the zamindars or the land-owners to know their position where they stand. Whenever any transactions take place, entries to that effect are made in the passbooks and they have not to go to the Patwari time and again.

श्री अमर सिंह : स्पीकर साहब, मन्त्री महोदय ने फरमाया है कि 8, 53,571 पास–बुकें सप्लाई करनी हैं । मैं जानना चाहता हूं कि अब तक टोटल कितनी दे चुके । और जो बाकी रह गई हैं उन को कब तक इशू करने का इरादा है?

Pandit Chiranji Lal Sharma : The reply is positively clear. In reply to part (b), I have stated that 6,31,514 pass-books have been distributed.

चौधरी दल सिंह : मन्त्री महोदय ने बताया है कि 6,31,514 पास बुक्स तकसीम हो चुकी हैं । क्या मन्त्री महोदय बतायेगे कि इनकी डिस्ट्रिक्ट–वाईज तादाद कितनी है?

Pandit Chiranji Lal Sharma ; The district-wise information is as under :-

Hissar	1,66,291
Bhiwani	61,400
Rohtak	25,259
Sonepat	23,518
Gurgaon	48,304
Karnal	33,150
Kurukshetra	47,641
Ambala	1,09,779
Sind	61,203
Mohindergarh	54,961

Government Payment and Receipts

***733. Shri K. N. Gulati : Will** the Minister for Finance be pleased to state :

(a) whether there is any proposal under consideration of the Government to start the work of Government payments and receipts in the Treasury, NIT. Faridabad ; and

(b) if so, when it is likely to be finalized ?

Finance Minister (Shri Ram Saran Chand Mittal) :

(a) No.

(b) Question does not arise.

Municipal Dispensaries

***679. Chaudhri Mehar Chand :** Will the Minister for Industries be pleased to state :

(a) the total number of Municipal Dispensaries in the State which have been provincialised during the period from 1st January, 1973 to date ; and

(b) the number of such Municipal Dispensaries which are likely to be provincialised?

गृह एवं स्वास्थ्य राज्य मंत्री (श्रीमती शारदा रानी) :

(ए) वर्ष 1973 के दौरान किसी भी नगरपालिका को डिस्पैंसरी का प्रान्तीकरण नहीं किया गया । तथापि अम्बाला कन्टोनमैंट बोर्ड हस्पताल का, उसके साथ लगती हुई 3 डिस्पैंसरियों सहित 19–12–173 को प्रान्तीकरण किया गया ।

(बी) नगरपालिका डिस्पैंसरीं फरीदाबाद (ओल्ड) का अगले वित्तीय में प्रान्तीकरण करने का प्रस्ताव है यदि वित्तीय साधन उपलब्ध

चौधरी राम लाल वधवा : क्या मन्त्री महोदया बतायेंगी कि अम्बाला की डिस्पंसरियो को लिया है, वहां स्टाफ पूरा था या नहीं?

श्रीमती शारदा रानी : स्टाफ पूरा नहीं था इसीलिए तो ली हैं ।

Home for Aged and Infirms

***695. Chaudhri Surjit Singh Mann :** Will the Minister for Social, Welfare and Taxation be pleased to state :

(a) the total number of aged and infirm persons residing in the. Home for Aged, Infirms, Rewari as on 31st March, 1973 and

(b) the details of the facilities which are being provided to them?

Social Welfare & Taxation Minister (Shri Syham Chand) :

(a) 40/-

(b) Free boarding, lodging and medical facilities are provided to the inmates.

Shri Shyam Chand : That is a separate question and I need a separate notice for it.

चौधरी सुरजीत सिह मान : क्या मन्त्री महोदय बतायेंगे कि इनको कितना देते हैं?

श्री श्याम चन्द : 52 रुपये 50 पैसे माहवार ।

श्री गुलाब सिंह जैन : क्या मन्त्री महोदय बतायेंगे कि इन को किस रिकमैंडेशन पर लिया जाता है?

श्री श्याम चन्द : कोई आदमी जिसकी उम्र 55 साल हो और कोई और जिसकी आयु 60 साल हौ उसको एस ० डी० ओ ० और तहसीलदार को रिकमैंडेशन पर लिया जाता है?

चौधरी पीर चन्द : क्या मन्त्री महोदय इस मंहगाई के जमाने में इनका स्टाइपैड दोगुना करने की कृपा करेंगे?

श्री श्याम चन्द : पहले 35 रुपये था और इस साल रढा कर साढ़े 52 किया है ।

चौधरी फूल चन्द (मुलाना) : क्या मन्त्री महोदय बतायेंगे कि इस वक्त राज्य जितने होम हैं और क्या आगे अधिक खोलने का बिचार है? वक्त एडमिट हुए है इसलिए और होम खोलने की कोई आवशयकता नही है।

चौधरी राम लाल बधबा : क्या मन्त्री महोदय बतायेंगे कि पिछले साल 40 एडमिट होने के लिए कितनी दरखास्तें आई थी? क्या रिकमैंडेशन वाले सब आदमी दाखिल लिए हैं?

श्री श्याम चन्द : जिन की रिकमैडेशन आई थी वे सब एडमिट हो चुके हैं ।

श्री हरि सिंह : क्या मन्त्री महोदय बतायेंगे कि जो आदमी दाखिल होते हैं उनकी देखरेख के लिए क्या स्टाफ होता है?

श्री श्याम चन्द : सारा स्टाफ होता है जो रिक्वायर्ड है ।

चौधरी दल सिंह : क्या मन्ती महोदय बतायेंगे कि डिस्ट्रिक्ट जींद में भी इस किस्म का होम खोलने का विचार है?

श्री श्याम चन्द : यह सारे हरियाणा का है और इसकी कपैसिटी 100 की हं । अगर जींद डिस्ट्रिक्ट में कोई हो तो हभ एडमिट कर लेंगे ।

श्री के 0 एन 0 गुलाटी : क्या मन्त्री महोदय बतायेंगे कि इनको पैन्शन भी दी जाती है?

Starred Question No. 701

As the hon'ble Member was not present in the House, this Question was not put,

Western Jamuna Canal Augmentation Project

***710. Shri Girish Chander Joshi :** Will the Minister for Irrigation and Power be pleased to state

(a) the total expenditure incurred by the Government on the Western Jamuna Canal Augmentation Project in the State; and

(b) the additional area which is likely to he irrigated by this Project ?

Minister of State for Irrigation & Power (Sardar Harmohinder Singh Chatha) :

(a) Rs. 1361.39 lakhs, upto November, 1973.

(b) 1,38,000 acres.

श्री गिरीश चन्द्र जोशी : क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि औगमैंटेशन कैनाल बनने के वाद ट्यूबवैल्ज का पानी नीचे चला गया है, कम हो गया है या खारा हो गया है?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा : हमें कोई शिकायत नहीं आई और हमें यकीन है कि न पानी खारा होगा और न कम होगा ।

चौधरी दल सिंह : क्या मन्त्री महोदय बतायेंगे कि इस कैनाल की कपैसिटी क्या है और इसके पानी को डिस्ट्रिक्स में किस तरह बांटेंगे?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा : यह सारा पानी वैस्टर्न जमुना कैनाल में जाता है किसी पर्टिकुलर एरिये में नहीं जाता ।

मलिक सतराम दास बतरा : क्या मन्त्री महोदय बतायेंगे कि वाटर लोगिंग एरिये मै जहां टयूबबैल लगे हैं, उसमें कोई सुधार हुआ वे?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा : जी ही, खासी इम्प्रूवमैंट हुई है ।

चौधरी राम लाल वधवा : स्पीकर साहब, पानी नीचे हो जाने की कई शिकायतें आई हैं, क्या मन्त्री महोदय एक और सर्वे करवाने के इसिलिए तैयार हैं?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा : ऐसी कोई शिकायत नहीं है ।

मुख्य मन्त्री (चौछरी बंसी लाल) : हकीकत यह है कि जहां से औगमैंटेशन कैनाल गुजरती है वह सारा इलाका वाटर लौग्ड था, बहुत बुरी हालत थी । अब इस कैनाल से कई हजार एकड़ जमीन काबलेकाश्त हो गई है ।

Upgradation of Schools

***550. Chaudhri Ram Lal Wadhwa :** Will the Minister for Education be pleased to state:—

(a) whether there is any proposal under consideration of the Government to up-grade the Primary Schools to Middle Schools and Middle Schools to High Schools in the State during the next financial year ; and

(b) if so, the district-wise names of such schools ?

शिक्षा तथा परिवहन राज्य मन्त्री (श्रीमति प्रसन्नो देवी) :—

(क) नहीं ।

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

चौधरी राम लाल बधबा : क्या मन्त्री महोदया बतायेगी कि अगले साल में अप– ग्रेड करने की कोई योजना है?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : जी नहीं ।

श्री अमर सिह : क्या मंत्री महोदया यह वताने की कृपा करेगी कि प्राईमरी से मिडल और मिडल से हाई स्कूल अप–ग्रेड करवाने के लिए कितनी ऐप्लीकेशन्ज डिपार्टमैंट के पास पेंडिंग हैं?

Mr. Speaker : This is not a supplementary question.

चौधरी दल सिंह : स्पीकर साहब जब ये एक भी स्कूल अप–ग्रेड नहीं कर रहे हैं तो फिर ढिंढोरा किस बात का पीटते हैं.. ..

Mr. Speaker : Order please. The reply has come. Not a supplementary question.

चौधरी दल सिंह : स्पीकर साहब, मैं तो यह जानना चाहता हूं कि इसका कारण क्या है?

मुख्य मंत्री (चौधरी बंसी लाल) : स्पीकर साहब, हकीकत यह है कि कोई डिसक्रिमिनेशन इनके साथ हम नहीं कर रहे हैं, हम तो अपने इलाके में भी कोई स्कूल अप–ग्रेड नहीं कर रहे हैं ।

चौधरी राम लाल बधवा : क्या मत्री महोदया बताएगी कि स्टूडेन्टस के लिहाज से जितने हाई स्कूल्ज हैं वे कम नहीं ह?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : ऐसी कोई बात नहीं हे ।

Haryana Land Ceiling Act, 1972

*** 605. Chaudhri Dal Singh** : Will the Minister for Revenue be pleased to state —

(a) whether the Government has allotted any surplus land to the tenants or landless persons in the State out of the surplus area declared under the „Haryana Land Ceiling Act, 1972; and

(b) if so, the number of such tenants or landless persons together with their addresses and the area so allotted in Jind District ?

Revenue Minister (Pandit Chiranji Lal Sharma) : Sir, before replying to this question, may I know whether the same question can be repeated in the same session ?

Mr. Speaker : The reply has come. It is the same reply which was given to previous question.

Pandit Chiranji Lal Sharma : Still if you say, I will give the reply.

Mr. Speaker ; Part (b) of the question is about Jind District. But the reply is the same.

Pandit Chiranji Lal Sharma : Sir, the reply to this question is as under

(a) The Haryana Ceiling on Land Holdings Act, 1972, came into force in the State of Haryana on the 22nd December, 1972. Under this Act, all those persons, who on 24.1.1971 held land in excess of the permissible limit, are required to submit the details of their land in the prescribed declaration form by 3! .12.1973. In the case of the members of the Armed Forces, such declarations have to be filed by 27th August, 1974. It would be possible to allot surplus land to the tenants and landless persons only after such declarations have been received. So far, no land has been declared surplus or distributed under the Haryana Ceiling on Land Holdings Act, 1972.

(b) Nil.

चौधरी दल सिंह : स्पीकर साहब, मिनिस्टर साहब के मुताबिक सरप्लस जमीन डिक्लेयर करने की लास्ट डेट 31 दिसम्बर थी लेकिन बहुत से गांवो के अन्दर अनपढ़ लोग है, उनको इस बात का पता नहीं लगा ओर वे अपनी सरप्लस जमीन डिक्लेयर नहीं कर सके । तो क्या मिनिस्टर साहब, इस डेट को फरदर ऐस्सटेंड करने के लिए तैयार है?

Pandit Chiranji Lal Sharma : No. The date was already extended by 43 days, otherwise declaration forms were to be filed by 28th of November.

मलिक सतराम दास बत्तरा : क्या मंत्री महोदय बताऐगे कि भूमि जोत की लिमिट आपके डिपार्टमैंट ने कितनी असैस की है जो कि एक परिवार के लिए इको– नौमिकल रहे?

Pandit Chiranji Lal Sharma : It is a legal question, Sir.

चौधरी राम लाल वधवा : क्या मंत्री महोदय बताने को कृपा करेंगे कि इस वक्त तक कितने डैक्लेरेशन फार्म दाखिल हो चुके है'?

Pandit Chiranji Lal Sharma : Since 31st December was the last date, I could not collect this information. If the Hon. Member is particular, he should give notice and I will collect the information.

चौधरी पीर चन्द : क्या मंत्री महोदय बतलाने की कृपा करेंगे कि जो लोग गलती की वजह से डैक्लेरेशन फार्म भर नही पाए उनके लिए डेट आगे बढ़ाने की कोई तजवीज है?

Pandit Chiranji Lal Sharma : I have already replied.

X-Ray Plant in B.K. Hospital, Faridabad

***734. Shri K.N. Gulati :** Will the Minister for Industries be pleased to state :-

(a) whether it is a fact that the X-Ray Plant in the B.K. Hospital, Faridabad, remained out of order from time to time ; and

(b) if so, the steps, if any, taken or proposed to be taken by the Government to keep the said X-Ray Plant in working order ?

गृह एवं स्वास्थ्य राज्य मंत्री (श्रीमती शारदा रानी) : (ए) तथा (बी) बी. के. हस्पताल फरीदाबाद के दो एक्स–रे प्लीटस में एक मेन प्लान्ट अप्रैल, 1973 के आरम्भ से एक अगस्त, 1973 तक खराब रहा जोकि मुरम्मत और नपे पुर्जे लगाने के बाद सन्तोषजनक ढंग से कार्य कर रहा है । दूसरा प्लान्ट पूरा समय सन्तोषजनक ढंग से कार्य करता रहा है ।

श्री के0 एन 0 गुलाटीः क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि पिछले दो तीन साल से इस ऐक्स–रे प्लांट की रिपेयर पर कितना पैसा खर्च किया गया है?

श्रीमती शारदा रानी : स्पीकर साहब, यह एक ही बार खराब हुआ था और पैसा खर्च होने के बारे में क्योंकि इन्होंने पूछा नहीं था इसलिए इस समय मैं बता नही सकती ।

श्रीमती लेखवती जैन : क्या मंत्री महोदया बताएगी कि अम्बाला का ऐक्स–रे प्लांट कितने दिनों से खराब पड़ा है? स्पीकर, साहब इसी हाउस के एक आनरेबल मैम्बर राव अभय सिंह जी के हाथ में जब चोट लग गई तो उनको लेकर ऐक्स–रे करवाने के लिए मैं वहां पर गई लेकिन वहां पर बताया गया कि प्लांट खराब पड़ा है । इस वजह से उन्हें ऐक्स–रे करवाने के लिए चंडीगढ आना पड़ा ।

Mr. Speaker : This is not a supplementary question.

Shrimati Lekhwati Jain : I should get a reply

Mr. Speaker : Order please. The question is about Faridabad. How can she give a reply about Ambala ?

श्रीमती लेखवती जैन : स्पीकर साहब, कम से कम वे यह तो बता दे' कि वह कब तक ठीक हो जाएगा?

श्रीमती शारदा रानी : जनाब, अम्बाला का ऐक्स–रे प्लांट खराब है, यह मेरे नोटिस में नही था लोंकन अब हमने हिदायत करदी है कि जहां भी ऐक्स–रे प्लांट खराब हो जाता है वहा सी० एम ० ओ ० अपने लैवल पर तुरन्त ठीक करवाने की कार्यवाही कर ले ।

श्री के ० एन० गुलाटी :क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि चूंकि यह प्लांट बार बार खराब हो जाता है इसलिए नया प्लांट खरीदने का इंतजाम किया जाएगा?

श्रीमती शारदा रानीः जनाब वहां दो प्लांटस है । यह जो प्लांट है यह सिर्फ एक ही बार खराव हुआ था, बार–बार खराब नहीं हुआ । यह बहुत पुराना प्लांट है औत्र युनिसिफ द्वारा हमको मुफ्त में दिया गया कप । जव यह बिल्कुल खराब हो जाएगा वर्किग आर्डर मैं नहीं रहेगा, तो द्वारा खरीद लेगे ।

चौधरी राम लाल वधवा : क्या मंत्री महोदय को मालूम है कि करनाल का ऐक्स–रे प्लांट भी खराब पड़ा हुआ है?

श्रीमती शारदा रानी : जी नहीं ।

श्रीमती लेखवतो जैन : स्पीकर साहब, मिनिस्टर साहिबा ने पहले तो बताया कि नालेज में नही है लेकिन फिर कह दिया कि मैंने आर्डर कर दिया है कि जहां भी प्लांट खराब हो सी०एम ०ओ ० ठीक करवा ले । क्या वे अम्बाला के बारे में खास तौर पर बताएंगी कि उसे कब तक ठीक करवा दिया जाएगा?

श्रीमती शारदा रानीः वह मैंने सभी के लिए बताया था ।

चौधरी राम लाल वधवा : स्पीकर साहब, मंत्री महोदया ने अभी माना है कि जो ऐक्य–रे प्लांट फरीदाबाद के लिए लिया गया है वह खराव हो जाता है । क्या वे बताने की कृपा करेंगी कि जव ये खरीदे जाते हैं तब गारंटी नहीं ली जाती?

श्रीमती शारदा रानीः स्पीकर साहब, यह तो मुफ्त में आया हुआ है ।

उद्योग मंत्री (श्री हरपाल सिंह) : स्पीकर साहब, प्लांट को लाईफ 10– 12 साल की होती है । कई प्लांटस पुराने हैं और उनका कोई न कोई पुर्जा खराव हो जाता है कम्पनी वाले कई दफा पुर्जे बाहर से मंगवाते हैं और बाहर से मंगवाने में कई दफा देर भी लग जाती है ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मंत्री महोदया फरमायेंगी कि जब तक बहन लेखवती जैन दुबारा वहां जाएंगी तब तक वह ऐक्स–रे प्लांट ठीक हो जाएगा? ––(हंसी)––

श्रीमती लेखवती जैन : मुझे तो किसी न किसी के साथ जब भी ऐक्सीडेंट होता है रोज ही जाना पड़ता है । (विघ्न)

श्री अमर सिंह : क्या आनरेबल मिनिस्टर साहिबा बताएंगी कि फरीदाबाद का जो ऐक्स–रे प्लांट खराब हो गया था वह कब खरीदा था और कब खराब हुआ?

श्रीमती शारदा रानी : यह अब से 18 वर्ष पूर्व खरीदा गया था और यूनिसिफ से यह हरियाणा को मुक्त में मिला था । यह साईमन का है और वैस्ट जर्मनी का बना हुआ है और इस समय बहुत अच्छी हालत में काम कर रहा है ।

X-Ray Plants

***680. Chaudhri Mehar Chand**: Will the Minister for Industries be pleased to state :-

(a) the district-wise total number of Hospitals where the X-Ray plants existed as on 1st May, 1968 together with the district-wise total number of Hospitals, where this facility has been provided during the period from 1st May, 1968 to 31st December 1973; and

(b) whether this facility is likely to be further provided in more Hospitals in the State during the next financial year, if so, the names of such Hospitals ?

गृह एवं स्वास्थ्य राज्य मंत्री (श्रीमती शारदा रानी) :

(ए) वांछित सूचना हाउस के टेबल पर रखी जाती है (विवणी I-II)

(बी) नहीं ।

Statement—I

Names of Hospitals where X-Ray facilities existed before 1,5.1968;

District Ambala

1. Civil Hospital, Ambala.

2. Civil Hospital, Naraingarh. District Karnal

3. Civil Hospital, Karnal.

4. Civil Hospital, Panipat.

5. Civil Hospital, Kaithal.

District Hissar

6. Civil Hospital, Hissar.

7: Civil Hospital, Fatehbad.

District Bhiwani

8: Civil Hospital, Bhiwani.

9. Civil Hospital, Dadri

District Rohtak

10. Civil Hospital, Rohtak.

11. Civil Hospital, Bahadurgarh.

12. Medical College Hospital, Rohtak.

District Gurgaon

13, Civil Hospital, Gurgaon.

14. B.K. Hospital, Faridabad.

District Mohindergarh

15. Civil Hospital, Narnaul. 16: Civil Hospital, Rewari.

District Sonepat

17. Civil Hospital, Sonepat. District Kurukshetra.

18. Referral Hospital, Kurukshetra. District Jind.

19. Civil Hospital, Jind.

20. Civil Hospital, Narwana.

21. Civil Hospital, Safidon.

Statement—II

District-wise total No. of Hospitals where X-Ray facilities have been provided during the period from 1-5-1968 to 31-12-1973.

District Hissar

1. Civil Hospital, Hansi.

2. Civil Hospital, Adampur.

3. Civil Hospital, Mandi Dabwali.

4. Civil Hospital, Sirsa.

5. Civil Hospital, Tohana.

6. T.B. Hospital, Hissar.

District Rohtak.

7. Civil Hospital, Jhajjar.

8. C.R, Dass Mobile Hospital, Rohtak.

District Gurgaon.

9. Civil Hospital, Ferozepur Jhirka.

10. Civil Hospital, Nuh.

11. Civil Hospital, Palwal.

District Kurukshetra.

12. Civil Hospital, Shahbad.

District Ambala.

13. Civil Hospital, Ambala Cantt.

14. Civil Hospital, Kalka.

15. Civil Hospital, Jagadhri.

16. M.L. Civil Hospital, Yamunanagar.

District Mohindergarh.

17. Civil Hospital, Mohindergarh.

District Bhiwani.

18. Civil Hospital, Tosham.

19. Civil Hospital, Loharu.

District Sonepat.

20. Civil Hospital, Gohana.

चौधरी मेहर चन्द : क्या मंत्री महोदया से मैं यह पूछ सकता हूं कि वे पार्ट (बी) का उत्तर 'न में ही क्यों देती हैं, कभी तो रहा कर दिया करें? (हंसी)

श्रीमती शारदा रानी : स्पीकर साहब, इन्होंने पूछा या कि क्या 1974–75 मे कही ऐक्स– रे प्लांटस दे रहे हैं? इसके बारे में मैंने पहले भी कह दिया था कि नशे दे रहे है उसी प्रश्न को बार–बार पूछें तो जवाब तो इनको हर बार 'नही' में ही मिलेगा

चौथरी फूल चन्द (मुलाना) : क्या मंत्री महोदया बताएंगी कि जो लोग अस्पताल में ऐक्स–रे करवाने जाते है, उनसे कुछ चार्जिज लिए जाते हैं या मुक्त ही किया ?

श्रीमती शारदा रानी : कुछ केसिज में मुपत किया जाता तूँ लेकिन जो लोग वहां पर दाखिल नहीं होते हैं या बाहर से इलाज करवाने के लिए जाते हैं उनसे घार्जिज लिए जाते है ।

श्री अमर सिंह : क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि अस्पताल में ऐक्स–रे प्लांट से जो ऐक्स–रे कराते हैं उनसे चार्जिज लेने के लिए इन्कम की कोई लिमिट रखी गई है?

श्रीमती शारदा रानी : जी हां ।

चौधरी शिव राम वर्मा : कक्या मत्री महोदया को मालूम है कि मैडिकल कालेज रोहतक के हस्पताल के डैन्टल विंग का ऐक्स–रे प्लांट कई दिनों से खराब पड़ा है क्या दे यह भी बताने की कृपा करेंगी कि वह कब तक ठीक हो जाएगा?

Mr. Speaker : Order please. This is not a supplementary question.

Facilties to Blinds

***696. Chaudhri Surjit Singh Mann;** Will the Minister for Social Wellfare and Taxation be pleased to state :-

(a) the total number of blind persons who are getting education and vocational training in the Institution for Blinds located at Panipat and Sonepat as on 31st March, 1973 ;

(b) the details of the facilities which are being provided to them; and

(c) whether any arrangement have been made for providing jobs. to such persons after their getting training from there ?

Social Welfare & Taxation Minister (Shri Shyam

Chand) :

(a) (i) Govt. Institute for the Blind, Panipat.

(ii) Training Centre for the Adult Blind, Sonepat.

(b) Free boarding, lodging, medical, educational and training facilities are provided to the inmates in these Institutions.

(c) A Production Unit is being set up for providing gainful employment to the inmates after their training during the current financial year.

चौधरी राम लाल वधवा : क्या मत्री महोदय यह बताने का कष्ट करेगे कि इनमें से कितने ऐसे हैं जिनको जाब प्रोवाइड हुई हुं?

10.00 बजे।

Shri Shyam Chand : I need a separate notice for this.

श्री के ० एन ० गुलाटी : क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि कोई ऐसी योजना है कि और बलाईड हाउसिज खोले जायें ताकि उनको उसी के काम पर लगाया जा सके?

श्री श्याम चन्द : बलाइन्ड हाउसिज खोलने की कोई योजना नहीं है । हां हाउसिज फार बलाडन्ड खोलने की योजना को कन्सिडर कर रहे हैं ।

श्री अमर सिंह क्या : मंत्री महोदय बतायेंगे कि जो इस समय ट्रेनिंग दी जाती है वह कितने साल की है और कितने साल के बाद उनको जौब मिल जाता है?

श्री श्याम चन्द : तीन साल की ट्रेनिंग है । Employment depends upon the availability of posts and other factors.

चौधरी रामलाल वधवा : क्या मंत्री महोदय बतायेंगे अगर किसी को काम सीखने के पश्चात जौब नही मिलता है तो क्या उनको कोई और काम देंगे जिससे उनको कोई इन्कम हो सके?

Shri Shyam Chand : There is a production centre, Sir, where these blinds are employed. We have also requested all these industries to provide employment to these blinds and other handicapped.

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि जो पोलिटिकल तौर पर अन्धे हैं उनके लिए भी कोई ट्रेनिंग स्कूल खोलने की योजना है? (हंसी)

श्री अमर सिंह : क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि पानीपत और सोनीपत में जो बलाइन्ड इंस्टीट्यूशन हैं उनमें ऐसे कितने ट्रेन्ड परसन हैं जिनको गवर्नमैंट जौब मिली हे?

Shri Shyam Chand ; At Panipat and Sonepat, we have provided training facilities. So, I don't have the information asked for with me. The Hon. Member may please give a separate notice for this.

चौधरी फूल सिह कटारिया : क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि जहां–जहां पर सैन्टर बोले गये हैं और उनमें जो सामान बनाते है, क्या उस सामान को खरीदने के लिए गवर्नमैंट ने दफतरो में यह हिदायत कर रखी है कि नहीं से सारा सामान खरीदें जो वहां बनता है?

Shri Shyam Chand ; Yes, we have requested all the Departments.

चौधरी पीर चन्द : क्या मंत्री महोदय यह बताने का कष्ट करेंगे कि जो अन्धे लोग वहां से काम सीख कर निकलते हैं, तो क्या सरकार की उनको कोई ग्रान्ट या लोन देने की प्रापोजल है जिससे वे अपना काम कर सकें?

Shri Shyam Chand ; Every grant and loan is given on merits.

चौधरी राम लाल वधवा : क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि कितने ऐसे ट्रेन्ड आदमी हैं जिनको अभी तक जौब नही मिला है?

Shri Shyam Chand : I need a separate notice for this.

श्री अमर सिंहः क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि हरियाणा में पानीपत और सोनीपत में ही ये इन्स्टीटयुशन क्यों है? क्या पानीपत और सोनीपत मैं ज्यादा अन्धे हैं या दूसरी जगहों पर भी है?

Shri Shyam Chand : These two places are centrally located places and people from all the States come to these places.

चौधरी राम लाल वधवा : क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि सरकार कितना रुपया सालाना खर्च कर रही है ?

Shri Shyam Chand : The entire expenditure is met by the State. As to the expenditure, it depends upon the strength of the inmates in these centres.

Starred Question No. 702

As the hon'ble Member was not present in the House, this question was not put .

Concessions to the Students belonging to Scheduled Castes

and Backward Classes

***706. Shri Jagjit Singh Tikka :** Will the Minister for Education be pleased to state—

(a) the details of concessions given to the

students belonging to Scheduled Castes and Backward Classes in the state ;

(b) the maximum limit of income of the parents of the children to whom the concessions as referred to in part (a) above are given ; and

(c) whether the government intends to increase such limit keeping in view the rise in price ?

शिक्षा एवं परिवहन राज्य मंत्री (श्रीमती प्रसन्नी देवी) :

(क) अनुसूचित जाति तथा पिछड़े वर्ग से सम्बन्धित छात्रो को निम्मलिखित शिक्षा सुविधाएं भिन्न–भिन्न योजना के अधीन प्रदान की जाती है रू–

1 छात्रवृत्तियां ।

2. ट्यूशन फीस तया अन्य अनिवार्य शुल्क एवं निधि से छूट ।

3 परीक्षा प्रवेश शुल्क को प्रति पूर्ति ।

4 हरिजन छात्राओ को नौवीं, दसवीं तथा ग्यारवी कक्षाओं में उच्चतर दर से विशेष योग्यता छात्रवृत्तियां ।

5 छात्रावासी छात्रो को अतिरिक्त मुक्त छात्रवृत्तियां ।

6 प्राईमरी स्कूल के छात्रो को मुक्त पाठ्य–पुस्तकों तथा लेखन– सामग्री ।

(ख) अनुसूचित जाति तथा पिछड़े वर्ग के बच्चों के माता–पिता की अधिकतम आय सीमा निम्न प्रकार है :

	पूर्व मट्रिक स्तर	मैट्रिक उपरान्त स्तर
(1) अनुसूचित जाति के छात्र	1507/–	मासिक 500/–
(2) पिछड़े वर्ग के छात्र	150/–	मासिक 150/–

(ग) हां सरकार ने अभी–अत्री आय सीमा 150 रुपये मासिक से 350 रुपये मासिक करने का निर्णय ले लिया है ।

चौधरी फूल चन्द (मुलाना) : क्या मवी महोदया यह बताने का कष्ट करेंगी कि इस बढ़ती हुई प्राइसीज को देखते हुए क्या सरकार छात्रवृत्तियां बढाने पर भी विचार कर रही है? दूसरा यह है कि जैसे कोई स्टूडंट फेल हो जाता है तो उसकी फीस लग जाती है तो क्या उसकी फीस एक साल के लिए और माफ करने पर विचार करेगी ?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : जहा तक छात्रवृत्तियां बढ़ाने का सवाल है वह तो हमने सन् 1970–71 में 12 लाख 47 हजार की दी हैं, 1971– 72 में 17 लाख 70 हजार की, 1972–73 में 22 लाख 10 हजार को और सन् 1973– 74 में 24 लाख 65 हजार रुपया दिया है ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मंत्री महोदया बतायेंगे कि यह जो राशि बढती जा रही है यह स्टुडैन्ट को संख्या बढ़ने से बढ्ती जाती सैं या वजीफे की दर वढायी जा रही है?

शिक्षा मंत्री (चौधरी माडु सिंह) : स्टूडैन्ट्स की तादाद भी बढ्ती जा रही है दूसरे हमने दर भी बढ़ायी है । छः रुपये से 8 रुपये कर दी है ।

चौधरी राम लाल वधवा : क्या मत्री महोदय बतायेंगे कि सन् 1972– 73 में कुल कितने स्टूडैन्ट्स को लाभ हुआ?

श्रीमती प्रसनी देवी : 3678 छात्रो को छात्रवृत्तियां दी गई हैं और जो छात्र होस्टलों में रहते हैं उनको 15 रुपये प्रति छात्र के हिसाब से अलग दिया है । इस तरह से 275 छात्रो को होस्टल में रहने वालों को दिया है ।

श्री जगजीत सिंह टिक्का : क्या इस दर को और बढाने को सम्भावना है?

श्री माडू सिंह मलिक : स्पीकर साहिब अभी पिछले साल ही छः रुपये से 8 रुपये यह दर को है ।

चौधरी दल सिंह : जैसा कि मंत्री महोदय ने अपने जवाब में कहा कि बैकवर्ड और शिडयुल्ड कास्ट के बच्चों को जो यह छात्रवृत्तियां दी वे । मैं यह जानना चाहता हू कि जो ऐसे तालबेलम हैं जिनकी अपनी जमीनें नहीं है, वे शिडयुल्ड कास्टस

या बैकवर्ड क्लास के नहीं हैं तो क्या उन स्टुडैन्टस को भी यह रियायतें देंगे?

श्री माडू सिंह मलिक : 1800 रुपये से कम सालाना आमदनी वाले सभी बच्चों को फीस से छूट दी जाती है ।

चौधरी पीर चन्द : क्या मंत्री महोदय यह बताने को कृपा करेंगे कि जो राशि हरिजन वच्चो और दूसरे स्टुडैन्टस को सोशल वैलफेयर डिपार्टमैंट की तरफ से दी जाती है क्या यह वजीफे वाली राशि उसमें शामिल है?

श्री माडू सिह मलिक : उससे अलहदा है ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि यह राशि सन् 1967– 68 मैं कितनी दी जाती थी?

श्री माडू सिंह मलिक : उसके लिए तो नोटिस चाहिए ।

Import of Raw Material

***711. Shri Girish Chander Joshi :** Will the Minister for Industries be pleased to state—

(a) the number of Essentiality Certificates issued alongwith the value thereof for the import of raw material in the State during the period from 1st April, 1968 to 31st March, 1973, separately ;

. (b) the names of the main scarce raw materials for which the said certificates were issued during the period as

referred to in part (a) above; and

(c) whether there is still some scarcity of raw materials as referred to in part (b) above; if so, the steps taken by the Government to remove the scarcity ?

Industry Minister (Shri Harpal Singh)

(a), (b)&(c) A statement is laid on the table of House.

(a) The number of Essentiality Certificates issued alongwith their value from 1-4-68 to 31-3-73 years-wise is given below :—

	Year	No. of Essentiality Certificates issued	Value recommended
1.	1968-69	292	Rs. 45,97,469/-
2.	1969-70	664	Rs. 1,35,14,792/-
3.	1970-71	1149	Rs. 4,49,75,647/-
4.	1971-72	889	Rs. 4,92,97,251/-
5.	1972-73	922	Rs. 2,93,52,000/-

(b) The names of main imported scarce raw

materials are Copper, Zinc, Lead, Tin, Marcury, Stainless Steel Sheets and Strips, Die Steel, Alloy Steel, Wire rods, various types of Fine Chemicals, Organic Inorganic Chemicals like Titanium Dioxide, Lithophone, High/Low density Moulding powders etc.

(c) There is still scarcity of imported raw materials and Government of India have, therefore, allowed their continued import.

श्री गिरीश चन्द्र जोशी : क्या मंत्री महोदय बतायेगे कि जो (सी) पार्ट के जवाब में बताया गया है कि असैसियेलिटी सर्टिफिकेट दिया है, क्या अब भी कच्चे माल की स्केयोरिटी है और अगर है तो किन चीजो की है

Shri Harpal Singh : Sir. I have already stated in answer to part (c) of the question that t here is still scarcity of imported raw-materials and Government of India have, therefore, allowed their continued import.

चौधरी राम लाल वधवा : क्या मत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कितने ई0 सी 0 रिकमैड किये जाते हैं उन सव को इम्पोर्ट का लाइसेंस मिल जाता है?

श्री हरपाल सिंह : स्पीकर साहब, मेरे पास फिगजं हैं, वह मैं पढ़ कर सुना देता हूं । 1968–67 में 292 को इम्पोर्ट

लाइसैंस मिला जो कि रिकमैड किये हुए थे, 1979– 70 में 664 को, 1970– 71 में 1149 को, 1971– 72 में 889 को और 1972– 73 में 922 को इम्पोर्ट लाइसैस मिला ।

चौधरी राम लाल वधवा : दया मंत्री महोदय यह बताने को कृपा करेंगे कि क्या यह ठीक है कि हरियाणा से जितने ई ं सी ं रिकमैंड किए जाते ह उतनों को इम्पोर्ट –लाइसंस मिलता नहीं है? क्या सरकार इस सुझाव पर विचार करेगी कि फरीदाबाद में एक ऐसा सैल खोल दिया जाए जो इंडस्ट्री वालों को इ म्पोर्ट लाइसेस दिलवाने में सहायता करे–?

श्री हरपाल सिंह : स्माल स्केल इंडस्ट्रीज के लिये जो असैशीयेलिटी सर्टिफिकेट होते हैं, वह हमारा डायरंक्टर स्पोन्सर करता हैं । लार्ज स्केल और मीडियम स्केल इंडस्ट्रीज के लिए डायरे स्टर जनरल आफ टेक्तीकल डिवैल्पमैंट जो देहली मे है, असैशीयेलिटी सर्टिफिकेट स्पोन्सर करता है । सरकार का जो काम होता है वह सिर्फ स्पोन्यर करने का होता हूँ । अगर किसी इडछियलिस्ट कोई डिफीकल्टी आये और वह हमारे नोटिस में लाये तो हम उसको बाकायदा परन्तु करते हैं । हमारे नोटिस में ऐसी कोई डिफींकल्टी नहीं आई है ।

श्री अमर सिंह : क्या मंजे महोदय यह बताने की कृपा करेगे कि यह जो रा– मैटीरियल इम्पोर्ट करने के लिए गवर्नमैंट

असैंशिर्यीलटी सर्टिफिकेट रिकमंड करती है इसका काइटेरिया क्या है यानी किस आधार पर रिकमैडशन की जाती है?

श्री हरपाल सिंह : स्पीकर साहब, इस बारे में पोजीशन यह है कि गवर्नमैंट आफ इंडिया हर साल फर्स्ट अप्रैल को अपनी इम्पोर्ट और ए क्सपोर्ट की पालिसी अनाउन्स करती है, उसकी एक रैड बुक बन जाती है । उसमें यह सब कुछ दिया होता है कि अगले साल के लिए यहु–यह पैटर्न होगा–इम्पोर्ट–ऐक्सपोटे के लिए और क्या–क्या आईटम्ज होंगी, कौन सी इंडस्ट्री को प्रायरिटी पर कन्सीडर किया जाएगा और कौन–कौन सी आईटम्ज इ म्पोर्ट हो सकेंगी । ये सारी डिटेल्ड उस किताब मै प्रिन्ट कर दी जाती हैं और उसमें जो पालिसी दी होती है उसके मुताबिक ही डायरैक्टर यह देखकर कि कितनी मशीनरी की वैल्यु है, कितनी उसकी कैपेसिटी है और क्या वह इंडस्ट्री प्रायरिटी में आती है, अपनी रिकमैडेशन करता है ।

चौधरी राम लाल वधवा : क्या मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि इस बात को देखते हुए सब से ज्यादा हमें आयरन और स्टील की जरूरत रहती है, सरकार इस कमी को दूर करने के लिए पब्लिक सैक्टर में कोई कारखाना हरियाणा में खोलने पर विपार करेगी?

श्री हरपाल सिंह : स्पीकर साहब, अभी हम एक स्टील बिलेट्स का कारखाना हिसार में शुरू कर रहे हैं और इसी तरह

से एक और कारखाना स्पंज आयरन का खोलने के बारे में दम ऐग्जामिन कर रहे हैं । टैक्नीकल नो–हाऊ ऐक्सपर्ट्क्ष से इस बारे में अशोरेन्य भिलने पर हम स्पंज आयरन का एक प्रोजैक्ट हरियाणा में चालू करने जा रहे है ।

चौधरी पीर चन्द : क्या मंजई महोदम यह वताने की रुपा करेंगे कि यह सच है कि 1972–73 और 1973– 74 के अन्दर यहां से चमड़ा बाहर के देशों को बहुत गया है जिसकी वजह से मजदूर लोग काफी बेरोजगार हो गए है? मेरे ख्याल में इसको और इम्पोर्ट न करें तो अच्छा है ।

गृह मन्त्री (थी के 0 एल 0 पोसवाल) : यह तो ऐक्सपोर्ट का मामला. हे?

श्री हरपाल सिह : स्पीकर साहब, चौधरी पीर चन्द जी को तो चमडे का ही ख्याल लगा रहता है । यह तो आयरन और स्टील से सम्बन्धित सवाल है ।

Mr. Speaker : The Question hour is over.

अतारांकित प्रश्न एवं उत्तर

अतारांकित प्रश्न संख्या 274

विषय–अतारांकित प्रश्न नं 0 274–चौधरी राम लाल, एम 0 एल0 ए 0

अतारांकित प्रश्नों की 16– 1– 1974 की सूची में चौधरी राम लाल, एम 0 एल 0 ए0 के नाम दर्ज विधान सभा अतारांकित प्रश्न संक्या 274 का उत्तर अभी तैयार नही हुआ । ज्यों ही सम्बंधित सूचना इकटठी हो जाएगी, अपेक्षित उत्तर भेज दिया जाएगा ।

ह/0 महा सिह

कार्यकारी मन्त्री ।

सेवा मै

अध्यक्ष

हरियाणा विधान सभा,

चण्डीगढ ।

अशाः क्रमांक डी० पी० जी०–4–74/2227 चण्डीगढ, दिनांक 15 जनवरी, 1974''

Haryana Bhawan

275. Chaudhri Dal Singh : Will the Chief Minister be pleased to state :—

(a) the number of officers of Haryana Government stayed at Haryana Bhawan, Delhi, since its completion to date year-wise i.e. on official duty and on private work;

(b) the amount of rent recovered from the officers who stayed at Haryana Bhawan, Delhi, as referred to in part (a) above;

(c) the total expenditure incurred by the Government on the maintenance of the said Bhawan and on the Government employees working in Haryana Bhawan, Delhi, during the year 1971-72 and 1972-73, separately; and

(d) the number of M.L.As. and private persons who stayed at Haryana Bhawan, Delhi, alongwith their addresses in official or private capacity during the years 1971-72 and 1972-73, separately, and the amount of rent charged from each of them for that period ?

मुख्य मंत्री (चौधरी बंसी साल) :

(ए) वर्ष अधिकारियों की सरकारी गैर–सरकारी संख्या

1970–71	1018	921	97
1971–72	2366	2231	135
1972–73	2931	2811	129
1973–74	1969	1879	90

(1–4–73 से

31–12–73 तक)

(वी) वसूल किया गया किराया

वर्ष	सरकारी यात्रा पर	गैर–सरकारी यात्रा पर
	रुपये पैसे	रुपये पैसे
1970–71	7964–67	528–00
1971–72	1957–00	2058–00
1972–73	21700–00	2731–00
1973–74	23056–500	1642–00

(1 –4–73 से

31 – 12– 73 तक)

(सी) मेंटीनैंस पर आया खर्च

वर्ष	रुपये	पैसे
1971–72	3,17,725–	00
1972–73	3,97,220–	00

अस्टैबलिशमैंट पर आया खर्च

वर्ष	रुपये	पैसे
1971—72	1,10,554—	00
1972—73	1,06,301—	00

(डी) सूचना इकट्ठी करने में जो समय और परिश्रम लगेगा उससे विशेष लाभ न होगा ।

Mr. Speaker : Secretary will now make an announcement.

सचिव द्वारा घोषणा

Secretary : Sir, I have to inform the House that the Haryana Minerals (Vesting of Rights) Bill, 1973, which was passed by the Haryana Legislative Assembly in its last session on the 14th November, 1973, has been assented to by the President.

कार्य मंत्रणा समिति का चौथा प्रतिवेदन

Mr. Speaker : I report the time table fixed by the Business Advisory Committee in their Fourth Report in regard to various business as under :

The Committee met in the Chamber of the Speaker on Tuesday, the 15th January, 1974, at 4.00 P.M.

"The Committee, after some discussion, recommended that the business on the 16th, 17th and 18th

January, 1974, be transacted as follows:—

16th January, 1974

1st Sitting at 9.30 A.M.

1. Questions Hour.

2. Fourth Report of the Business Advisory Committee.

3. Laying of the Haryana Requisitioning and Acquisition of Immovable Property Rules, 1973, on the table of the House.

4. Resumption of General Discussion on Budget.

2nd Sitting at 2-00 P.M.

1. No. Questions Hour.

2. Discussion and voting on Demands for Grants on Budget.

17th January, 1974

1st Sitting at 9.30 A.M.

1. Questions Hour.

2. Nonofficial Business.

2nd Sitting at 2 P.M.

1. No Question Hour.

2. The Haryana Appropriation Bill on Budget.

(One Hour only)

3. Other Legislative Business.

18th January 1974, (9-30 A .M.)

1. Questions Hour.

2. Motion under rule 16 regarding adjournment of the Assembly sine-die.

3. Presentation of Preliminary Report of the Committee of Privileges.

4. Papers/Reports, if any, to be laid on the Table of the House.

5. Motion regarding the extension of the term of the Committee on the Welfare of Scheduled Castes and Scheduled Tribes.

6. Legislative Business."

Home Minister (Sh. K.L. Poswal) : Sir, I beg to move—

That this House agrees with the recommendations contained in the Fourth Report of the Business Advisory Committee.

Mr. Speaker : Motion moved—

That this House agrees with the recommendations contained in the Fourth Report of the Business Advisory Committee.

Mr. Speaker : Question is—

That this House agrees with the recommendations contained in the Fourth Report of the Business Advisory Committee,

The motion was carried

सदन के पटल दर रखे गए कागज पत्र

Mr. Speaker : Now a Minister will lay on the Table a copy of the notification.

Home Minister (Sh. K. L. Poswal) : Sir, I beg to lay on the Table a copy of the notification No. G.S.R. 3/H.A. 35/73/S. 25/74, dated the 4th January, 1974, regarding the Haryana Requisitioning and Acquisition of Immovable Property Rules, 1973, as required under section 25(3) of the Haryana Requisitioning and Acquisition of Immovable Property Act, 1973.

वर्ष 1 974—75 के बजट पर सामान्य चर्चा (पुनरारम्भ)

Mr. Speaker : Now the House will resume discussion on the Budget. Shri Girish Chander Joshi may please resume his speech.

श्री गिरीश चन्द्र जोशी (यमुनानगर) : अध्यक्ष महोदय, मैं कल यह कह रहा था कि सरकार ने और वित्त मंत्री महोदय ने जो बजट अनुमान हमारे सामने रखे हैं, उसके पीछे एक मैंसे बड़ी (अच्छी) भूमिका यह है कि हम बचत करें । हम जानते हैं कि फिजूलखर्ची को दूर करके बचत की जा सकती है । वेस्टफुल

ऐक्सपैडीचर जो है, वह तो नहीं होना चाहिये लेकिन गेनफूल ऐक्सपैडीचर जरूर होना चाहिये क्योंकि उसके बिना हम आगे नही बढ़ सकते । गेनफुल ऐक्सपैंडीचर उन्ही मदों पर होगा जो प्रोडक्टिव हैं, ऐम्पलायमैंट ओरियेन्टिड हैं, जिनसे हमारे प्रदेश में रोजगार बढेगा और जिनसे हमारी प्रोडक्शन को प्रोडक्टिवीटी बढ़ेगी । हमारी यह कोशिश हो कि हम गेनफुल ऐक्सपैडीचर की बुनियाद पर अपने देश में जराये पैदा करे,अपने देश मैं ऐसे साधन पैदा करैं ताकि हम इकोनोमी को री–ओरीऐन्ट करें और री–जमरेट करें । कोशिश सिर्फ सरकार से ही नहीं, जनता की तरफ से भी होनी चाहिये । सरकार ने तो अपनी देश से इस ओर इशारा किया है और इसके साथ ही साथ जनता की तरफ भी इशारा किया है यह वे भी अपने खर्च में बचत करें । खर्च मे बचत करने से खुद जनता को फायदा होगा । बचत तरफ जनता सरकार को भी फायदा कर सकती हुं । यदि जनता अपने खर्च में बचत करेगी तो सरकार उस पैसे को बिजली की तरफ या दूसरे भलाई के कामों में लगा सकेगी जिनकी तरफ जनता खर्च करना चाहती है या उसकी खर्च करवाने की ख्वाहिश है । बचत करने के लिये हमें आस्टैरिटी रखनी पड़ेगी । हमें अपनी जरूरत की चीजों के अलावा ऐसी चीजों को नहीं लाना होगा जो इस वक्त हमें दरकार नही हँ या जिनसे इस वक्त काम चल सकता है । हमें हर तरीके से बचत करनी पड़ेगी और इस बचत की बुनियाद पर जो सेविंग हम करेंगे, अगर हम वह सेविंग सरकार को दें तो सरकार के पास इन्वैस्टमैंट करने का एक साधन पैदा होगा और उसकी सहायता में

सरकार जनता को वह चीजे उपलब्ध करायेगी जो जनता के फायदा के लिये हो । यह एक बुनियादी असूल वित्त मंत्री जी ने अपने बजट अनुमानों में हमारे सामने रखा थैं इसमें सरकार की विकास के सिलसिले में स्ट्रैटजी बतायी गयी है जो फिफ्थ फाईव ईयर प्लान के लिये है । हमारे विकास की. यह स्टैटजी होनी चाहिये कि प्रोडक्टिव ऐम्मलायमैट को आगे बढाया जाये । हमारी ऐम्मलायमैंट ऐसी हो जो प्रोडक्टिव हो । हमारी ऐसी स्टैटजी हो कि लोगों को ऐम्मलायमैंट भी मिले और प्रोडक्शन भी बढ । ऐम्मलायमैंट भी दो तरह की होती है एक प्रोडक्टिव ओर एक अन–प्रोडक्टिव । हमारी कोशिश यह होनी चाहिये कि हम जो ऐम्पलायमैंट दें वह अनप्रोडक्टिव न हो ताकि देश के जरायों में तरक्की हो सके । हमें रोजगार ऐसे देने चाहियें जिनसे प्रोडक्शन बड़े और हमारी जो आर्थिक स्पिति है, वह मुदृढ हो, मजबूत बने । हमारा इस तरफ विशेष व्यान होना चाहिये । इस समय इस बात की सख्त जरूरत है कि हमारी प्रोडक्शन ज्यादा से ज्यादा बढे । आज हरियाणा के अन्दर एक करोड़ से भी कुछ अधिक की आबादी है । अगर ऐम्पलाईज स्टेट इश्योरैन्य स्कीम के तहत जो आर्गेनाइज्ड लेबर है, उसका नम्बर लिया जाये तो वह सवा लाख के लगभग है । यह वे लेबरर्ज हैं जो ऐम्पलाईज स्टेट इंश्योरैन्य स्कीम के अन्डर रजिस्टर्ड हैं । अगर अन–रिकोग्नाईजड लेवर की तादाद ली जाये तो वह दो लाख से भी ऊपर है । यह बह लेबर है जो हरियाणा में प्रोडक्शन के काम करती है और हरियाणा में अन–रिकोग्नाज्ड रहते हुए भी मौजूद है । वह मजदूर हमारे

हरियाणा के अन्दर मौजू द है । हरियाणा को एक करोड़ की मैन पावर में अगर लेबर मैन पावर को लें तो वह दो प्रतिशत तक पहुंचती है । स्पीकर साहब, अगर अपने देश की आबादी को देखते हुए अगर लेबर की ऐवरेज देखे तो वह डेढ़ परसैन्ट नहीं बैठती लेकिन हरियाणा के अन्दर लेबर मैन पावर दो प्रतिशत बैठती है । इसका मतलब यह है कि हरियाणा के अन्दर प्रोडेक्टिव लेबर, प्रोडेक्टिव मैन पावर बढ रही है लेकिन आज हालात ऐसे हैं कि जहां हरियाणा कृषि प्रधान प्रदेश है और अस्सी प्रतिशत आबादी देहातों में रहती है । इसलिए कारखानों से ज्यादा बिजली के मामले पर, नहरों के मामले पर और खेती के मामलो पर ज्यादा पैसा खर्च करना है । जब हम इन पर ज्यादा खर्च करने की बात करते हैं तो इसका मतलब है कि आज हमें बिजलीकी सप्लाई ज्यादा चाहिये । अगर हमे एग्रीकल्चर को आगे बढ़ाना है तो फैक्टरियों पर कुछ बैलेन्स रखना पड़ेगा । इकोनौमी के तीन सैक्टर है एक प्राईमरी सैक्टर जिसे एग्रीक्लचर सैक्टर कहते हैं दूसरा सैकंडरी सैक्टर जिसे इंडस्ट्रियल सैक्टर कहते है और तीसरा सर्विस सैक्टर । इन तीनों सैक्टरों में आपसी संतुलन, आपसी मेलजोल होना बहुत जरूरी है । चूंकि हमारा देश कृषि प्रधान देश है अगर यहां पर अन्न की कीमत बढ जाती हैं तो सब चीजों के दाम बढ़ जाते है । इंगलैड कृषि प्रधान देश नहीं पैं वह इंडस्ट्रियल कटरी है वहां ऐसा नहीं होता कि अगर अन्न की कीमतें बढ़ जाएं तो दूसरी चीजों को कीमतें भी बढ जाएं । लिहाजा अन्न के सिलसिले में हम पहले से ज्यादा मजबूत हुए हैं

। अन्न के मामले में हम खुशहाल हुए हैं । हम केवल आत्म निर्भर ही नही हुए बल्कि हमने अन्न को दूसरे इलाकोंको भी भेजा है । यह हमारी पिछली योजना का एक समावेश है जो पिछले बजट में आया और उसका उल्लेख राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में किया गया । उन्होंने अपने अभिभाषण में कहा कि एग्रीक्लचर सैक्टर को और बजवा वे रहे हैं । इसलिए यह जरूरी है कि जो इंडस्ट्रियल सैक्टर है उसमें भी कुछ बैलेन्स रखा जाए जिसके लिए मेरा एक सुझाव है । जहां फैक्टरियों में बिजली की कटौती की गई है कोई बिजली बन्द नहीं है, बिजली को कमी नहीं है बल्कि 60 प्रतिशत कट की गई है और इसका नतीजा यह है कि जहां पहले दो शिफ्टें चलती थी वहां अब एक शिफ्ट चलेगी जहां पहले एक खिफ्ट चलती थी वहां अब लेबर को ले–आफ करना पड़ेगा । इंडस्ट्रीज को बिजली की मिकदार इस ढग से तय करनी चाहिए कि लगातार इस वक्त से उनको बिजली मिल सके और मालिक और मजदूर आपस में बैठकर इस ढंग से काम करें कि मजदूरों को कोई दिक्कत न हो । एक बहुत जरूरी चीज जिसके लिए यह सरकार और केन्द्रीय सरकार बहुत जोर दे रही है कि अगर अधिक उत्पादन किया जाए और उसका सही वितरण न किया जाए तो उत्पादन का कोई मतलब नहीं रहता । हमारे देश की प्रधानमन्त्री लगातार कह रही हैं कि देश के अन्दर अधिक उत्पादन करना बहुत जरुरी है । उन्होंने कहा है कि अगर अगली पंच वर्षीय योजना के अन्दर हमको अगम–निर्भर बनना है तो उत्पादन बढाना बहुत आवश्यक है. और उत्पादन के साथ–साथ उसका इक्वीटेबल

डिस्ट्रिब्यूशन भी बहुत जरूरी है नहीं तो अमीर और अमीर हो जाएगा और गरीब और गरीब हो जाएगा । डिस्ट्रीब्यूशन इस प्रकार होना चाहिए कि जो निचला तबका है उसको सब से ज्यादा वितरण होना चाहिए । अगर हम निचले तबके कोऊपर उठाना चाहते हैं, देश से गरीबी को हटाना चाहते है तो निचले तबके को, गरीवी को ज्यादा चीजों का वितरण किया जाए बजाए इमके कि जो ऊंचे बैठे हैं उनको ही ज्यादा चीजें सप्लाई करें । ऐसा करके ही हम देश के अन्दर से गरीबी को दूर कर सकते हैं । वितरण मेंयह ख्याल रखा जाना चाहिए और हमारी सरदार का ख्याल इस तरफ है । अगर इस तरह किया जाएगा तो एक अमीर दौर गरीब के अन्दर जो इन्कम का फर्क है, इम्बेलैन्स है बह खत्म हो जाएगा । मैं तो कहता हूं कि अमीरों की अमीरी गरीबों में बांट दो और गरीबों की गरीबी अमीरों मैं गैट दो तो अपने आप ही अमीर गरीब का फर्क मिट जाएगा और गरीब की गरीबी का बटवारा हो जाएगा और अमीर की अमीरी का बंटवारा हो जाएगा । यह लेबर के बारे में एक चीज थी जो मैंने कही है ।

स्पीकर साहब, पिछली चतुर्थ पंचवर्षीय योजना का ओरिजनल प्लान आउट–ले 225 करोड रुपए का था जोकि बढकर 232 करोड़ रुपए हो गया यानी कि सात करोड रुपए हम आगे बढ़ गए । स्पीकर साहब, अगर हम देखें तो 1969– 71, 1970– 71, 1971–72, 1972–73 और 1973– 74 हर साल ही हम आगे बढे है । हम किसी भी सैक्टर, चाहे इरीगेशन सेक्टर, रोड ट्रांसपोर्ट

सैक्टर को लें और चाहे लेबर और एम्पलाएमैंट को लें, हम आगे बढ़ है और हमने अपना खर्चा बढाया जै । इसका मतलब है कि हर अदारे में काम बड़ा है, किसी भी अदारे में कमी नहीं रखी हूँ लेकिन होता यह है कि जितना काम बढ्ता है उतनी ही ख्वाहिश बढती है । यह होता है कि अगर आदमी की आमदन बड़ती है तो उसी अनुपात्त में उसका खर्च भी बढ जाता है । आज बिजली .की आमद के मुकाबले खपत दुगनी हे गई है । अगर आज लेबर के वेजिज बढ़ाए जाएं तो प्राईसिज बढ जाती हूँ । इसलिए यह जरूरी हं कि इन बढती हुई कीमतों को रोकें । जहां तक बजट का सवाल हूँ आमदन के मुकाबले खपत बढ़ी है । इसलिए इस खपत को अपने रिसार्मिज के जरिए अपने साधनों के जरिए पूरा करना है । लेकिन जहां तक इन चीज की प्राईसिज का ताल्लुक है वे लगातार बढ्ती जाती हैं और इसी कारण आज हड़तालें है, लाक आउट्स हैं । इमलिए मंहगाई को रोकना बहुत जरुरी है और इसके बारे में मैंने लेबर ऐडवाइजरी बोर्ड की मीटिंग मे भी एक सुझाव रखा था कि जितनी भी बडी–बडी फैक्टरी हैं वहां हरेक में एर फेयरप्राईस शाप होनी चाहिए और जो छोटी फैक्टरीज हैं उनको पांच–छह को मिलाकर रक फेयर प्राईस शाप होनी चाहिए । आज हमारी मांग ज्यादा पैसे की नहीं होनी चाहिए बल्कि हमारी मांग कीमतों को रोकने की होनी चाहिए । आज तो हो यह रहा है कि जब भी लेवर को ज्यादा पैसा मिलता है दूसरे ही दिन प्राईसिज बढ जाती हैं और उस पैसे का कायदा उतना नहीं होता । लिहाजा महगाई लेना उतना लाभदायक नहीं, जितना कीमत

रोकना है । मैं कह रहा था कि फेयर प्राईस शाप खोली जानी चाहिएं और वहां पर सस्ती चीजें मिले, सस्ता कपडा मिले उन फैक्टरियों के मालिकों को कहा जाए कि दुकान का किराया. दुकान कार खर्चा वे बीयर करें और ज्रूरत की हर चीज मजदूरों को सही ठीक दार में और सही कीमत पर सप्लाई की जाए । इसका नतीजा यह होगा कि हर मजदूर अपना बजट बनाएगा और वह उन्ही चीजों पर खर्च करेगा जो उसकी जरूरत को चीजें हं ।

स्पीकर साहब, इस प्रकार इसके दाद वे लोग कुछ बचाकर सरकार को देगे । सी ०टी० डी० एकाउंट मे वह पैसे जमा होगे । यह भी एक स्माल सेविंग है और सरकार इस पैसे को इस्तेमाल कर सकती है और जनता की भलाई के लिये भी यह पैसा खर्च कर सकती है ऐसा कोई अपनाया जाना चाहिये जिससे कीमतें भी एक जगह पर खड़ी रह सकती हे । कीमतो, बढाने के लिये चीजो को दबा लिया जाता है ओर बाजार में तब लाई जाती है जब कीमत को जाती हैं । मैं यमुनानगर में था, नमक नहीं मिलता था, दियासलाई नही मिलती थी और जब बरसात हई तो नमक बाहर निकल आया कि खराब न हो जाए कहने का मतलब यह है कि हमारे यहां देश में सभी चीजें हैं लेकिन यही पर ऐसे लोग हं कि जो चीजों को दवा कर रख लेते फैब, यही वजह है कि चीजों की कीमतें बढ़ जाती हैं लेकिन यहां पर कितनी नुक्ताचीनी सुरकार के बारे की जाती है हमने यहां पर देखा कि हमारे कितने भाई ऐसे है जो कि नुक्ताचीनी मे लगे रहते हैं कभी

जनता के हित के लिये, जनता को आगे बढाने के लिये उन्होने योगदान दिया है? सिवाये इसके कि खड़े होकर बड़े –बड़े भाषण दे दिये और सरकार की खूब नूक्ताचीनी कर दी और कोई तामीरी बात नही करते हैं । और हमारे जनसंघ के भाई फिर यह पर मजदूरो को बातें करते है, ट्रांसपोर्ट की बात करते है, टीचर्ज को बात करते है, लेकिन जब वे खुद ट्रान्सपोर्ट के मालिक थे, उस समय वहां के मजदूर अपने हितों के लिये सुप्रीम कोर्ट तक गये तो उस समय इन भाईयों के दिलों मे मजदूरों कैं प्रति कोई दर्द नहीं था, अब यह दर्द इनके दिल मे उठा हूं जबकि इनकी प्राइवेट ट्रान्सपोट्रस बन्द कर दी गई है और नेशनेलाई कर दी गई हैं स्पीकर साहब, आज ट्रान्सपोर्ट को नेशनेलाईज कर दिया गया है, और सारे हरियाणा प्रान्त में इलैक्ट्रिसिटी का जाल बिछा दिया गया वै और हमारी हरियाणा सरकार ने चप्पे–चप्पे पर सड़के पहुचा दी है, बसे पहुंचा दी हैं । स्पीकर साहब, इन सब चीजो के करने से बहुत फायदे हुए हैं जब तक यह क्रूाम नहीं किये गये थे, तब प्राइवेट ट्रान्सपोर्ट वाले, जैसे करनाल में तीन प्राइवेट ट्रान्सपोर्टस थी, तक इंडियन करनाल ट्रान्सपोर्ट, करनाल–कैथल द्वारा ट्रांसपोर्ट कोआपरेटिव सासाइटीज, करनाल कोआपरेटिव पापुलर ट्रान्सपोर्ट इन मै से एक ट्रान्सपोर्ट वह थी, जिसके एक हिस्सेदार विधायक हमारे जनसंघ के भाई थे एक दफा का जिकर है कि अम्बाला से जगाधरी दा रेल ट्रेफिक फ्लड के कारण बिलकुल बन्द हुआ पड़ा था । लोग बसो के द्वारा जा रहे थे तो मैं और एक करनाल कोआपरेटिव ट्रान्सपोर्ट के मैनेजिग डायरैक्टर

सरदार नक्षत्र सिंह उसी वस में सफर कर रहे थे, बस खचाखच भरी पड़ी थी, तो उस वक्त मैनेजिंग डायरैक्टर ने क्या किया कि सभी सवारियों से पैसे लेकर अपनी जे ब मे डाल लिये । यह तो इन का रुतबा था सारी टिकटों के पं से खा गये, गवर्नमेन्ट का टैक्स भी खा गये, इसलिये इनको सरकार की इस नशनलाईजेशन से दर्द हो रहा है, और किसी बात से किसी मजदूर के नाम से कोई दर्द नहीं हो रहा है स्पीकर साहब, मैं क्या बताऊं, उस समद प्राईवेट की हालत थी एक दूसरे की पिस्तौल लेकर कतल करने की कोशिश 'करते थे। इन लोगो तो इसलिए दर्द हो रहा है यह सारे पैसे अब उनकी जेबी मैं नहीं जा सकते। लेकिन जब से ट्रान्सपोर्ट का नैशनलाईजेशन हो चुका है लोगो को बड़ा आराम हो गंया है पब्लिक बडे आराम से से चल फिर सकती है , किसी किस्म की लोगो को आने जाने मे कोई दिक्कत नही है और रात को ट्रान्सपोर्ट के चालू करने का सपीकर साहब यह भी एक प्रतीक है कि हरियाणा प्रान्त के अन्दर ला एण्ड आर्डर की सिचुएशन जो है, वह काबिले तारीफ है । आप अपनी प्राइवेट कारे भी रात के वक्त जहां मजी चाहे हरियाणा में ले जा सकते है आप पडौसी स्टे्टस को ही देख लिजिये कि वहां पर ला एण्ड आर्डर की क्या हालत है । लेकिन एक हरियाणा ही एक ऐसा प्रान्त है कि जहां कोई डकैती नहीं चोरी नहीं कतल नहीं, मतलब कि पब्लिक को हर तरह से आराम है और ऐसा तभी हो ' सकता है कि जब किसी प्रान्त. को लो एण्ड आडर की स्थिति सदृढ हो । ला एण्ड आर्डर को मेनटेन करने के लिये हमारी पुलिस के पास वायरलैस

सैटस दिये गये, जगह जगह पर टेली फोन वगैरह दियें गये ताकि अपराधो को रोका जा सके और ऐसी स्थिति हरियाणा प्रान्त में है भी लेकिन यहां परं यह कहा जाता है कि यू ही पुलिस के ऊपर इतना पैसा खर्चा किया जा रहा है, भाई चश्मा बदल करके देखा करो जिनकी आखो मैं पीलिया हो तो उनको तो हर चीज पीली ही पीली नजर आएगी । अगर पुलिस से हर तरह की फैसिलटीज न दी जाएं तो ता एरण्ड आर्डर केसे रह सकता है । स्पीकर साहब दूसरा आज प्रोडक्टिव अदायरो मे पैसा खर्च किया जाता है जिसकी हमें जरूरतं है जैसे टूरिजम वगैरह । इस से हमारे हरियाणा की तरक्की के बारे रोशनी पड़ती है । हमारे हरियाणा में जब बाहर की कमेटिये के मैम्बर साहबान आते है जैसे पिछले दिनों यहां पर केरल से रिसीर्सिज कमेटी आई, बेदाकिस्मती से उस कमेटी कै चेयरमैन चौधरी चांद राम थे, वह वहां पर सिर झुकाकर बैठे रहे, उनको बात नहीं आई । अगर चौधरी सुरजीत सिंह मान, कैप्टन सीस राम जी जैसे वहां न होते तो हमारे हरियाणा प्रान्त की इज्जत डूब जाती तो आप देखिये कि ये कर क्या सकते हैं, यह लोग तो असम्बली के अन्दर बोल सकते है कि फलां जगह यह हो गया, फलां जगह सरकार ने यह कर दिया, केवल नुक्ताचीनी ही कर सकते हैं । चौधरी चांद राम जी तो बबैन से मुश्किल से कुछ वोटों से जीत कर आये है, अगर डा० ओम प्रकाश साहब के बहनोई इनकी मदद न करते तो आज यह यहां पर न होते

चौधरी फूल चन्द (रोहट) : स्पीकर साहब, मेरा प्वायट आफ आर्डर है! जोशी साहब ने जैसे फरमाया चौधरी चांद राम जी रिसोर्सिज कमेटी के चेयरमैन थे, रिसोर्सिज कमेटी के चेयरमैन तो का गुलाब सिंह जैन हैं, वह तो एशोरंन्स कमेटी के चेयरमैन हैं, यह गल्त कह रहे है

Mr. Speaker : This is no point of order, This is People of information

Shri Chander Joshi : I meant the 'Assurance committee.

In correct myself. तो मैं कह रहा था कि यह हालात आज हमारे देश के अन्दर है । हमररे ओपोजिशन के भाई कहते है कि सेविंग धक्के से करवाई जाती है, टीचरों के मामलो मे उनको पता ही नही है जैसे हमारे वित्त मन्त्री महोदय ने अपने बजट मैं जो रिसोर्सिज बताये है, उनके स्माल सेविग भी एक सोर्स बताया गया है और अपिको यह सुन कर खुशी होगी कि हमारे देहाती हल्का के लोगों ने भी इसमे बढ़–चढ कर भाग लिया है और दूसरी तरफ हमारा मजदूर अदारा क्या, गवर्नमेंट सर्वेन्टस क्या, सभी ने मिलकर इस सेविंग में योगदान दिया है टीचरो की बात कर रहा था जब तक इस समाल सेविग में टीचरों का तीन करोड़ से ऊपर रुपया जमा है, जी0पी0 एफ 0 में भी तीन करोड से उपर पैसा जमा है तो यह सब समाल सेविग ही तो है जिसको गवर्नमेट

भलाई के कामो के लिए यूज कर सकती है । यह उन्हीं टीचरों की ही कमाल है, जिनके बारे. हमारे यहां आपोजीशन के भाई बातें करते है कि टीचरॉ के साथ बड़ा धक्का हो रहा है टीचरो को यू ही गुमराह किया जाता ऐ और वे लोग यहा पर बैठे हुए है जो टीचरों को यूही गुमराह करते है और वे तब तक यहां पर बँठे रहेंगे जब तक कि उन्हें ऐसा करने का मौका मिलता रहेगा लिहाजा मैं कह सकता हूं कि हमारे टीचर्ज बहुत समझदार है, हुमारे एम्पलाईज बहुत समझदार है वे अब इन लोगो के बहकावे में नही आ सकते आकर साहब, टीचर्ज के बारे में एक । और यहा पर कहूंगा कि इस समय टीचरों को जो गवर्नमैंट की तरफ से आने जाने मैं सहूलियतें दी हुई है उनको महीने में 40 सिंगल फेयर आने–जाने के लिये देने पड़ते है मैं यह चाहता हूं । कि 40 की बजाए उन्हें 30 सिंगल फेयर देने पड़े तो ठीक रहेगा ताकि उनकी और थोड़ी सी बचत ह। सके। दूसरी बात जो टीचर्ज के लिए हरियाणा सरकार ने की है वह बै कि उनको अपने हिस्ट्रिकट पर रखा है लेकिन कईयों को गांवों में रखा गया है और शहरों मै साढ़े सात से साढ़े बारह परसैंट का उन्हें अलाउंस दिया जाता है, मेरी सरकार से पुरजोर दरखास्त है कि अगर यह चीज. में भी कर दी जाए औरदेहाती मे नौकरी करने वाले टीचर्ज को यह इनसैटिव हो तो वे लोग जो देहातो मे जाने से कतराते हैं, वहा पर जाने के लिए तैयार हो जाएंगे । दूसरी बात है कि आज जो टीचर्ज का डी 0ए 0 कट किया जा रहा है उसको रेस्टोर किया जाए, इस सारी बात को एग्जामिन किया जाए, बेशक उन्हें

यह नकद पैसे न दिए जाए उनके जी0 पी 0 फण्ड में जमा हो जाएं और बाद में सरकार इन पैसो को अपने इस्तेमाल में ला सकती है, कम से कम यह होना चाहिए । इससे आगे चलकर मैं एक बात और कहूंगा कि रोडवेज एम्पलाइज, टीचर्ज, गवर्नमैट सर्वेन्टस वगैरह जो है, इन लोगो की जो अलग–अलग यूनियन्ज बनी हुई है इनकी एक प्वायंट मैनेजमैंट कौन्सिल बनाई जाए, उसके चेयरमैन बेशक चीफमिनिस्टर साहब हों, ऐसा करने से आपस मे ताल–मेल रहेगा और आगे के लिए दोनों तरफ कोई दिक्कत नहीं होगी इस से ऐसा होगा कि और को भी, चाहे हमारे रोडवेज के कर्मचारी हों, एम्पलाइज हों, या कोई तबके के लोग हो, गुमराह करने का मौका नही मिलेगा यह मैं चाहता हूं कि प्वांयट मैनेजमेंट कौंसिल जिमको इग्लैड में ब्हाइटले कौंसिल कर। जाता है उसकी स्थापना की जाए तो बहुत अच्छा हो सकता है मैं अपने टीचरों रुपए और मुलाजमो को मुबारिकबाद देता हू कि वे बड़े शांत ढंग से अपना काम कर रहे है । इसके विपरीत हमारे पड़ौसी राज्य पजाब में आपको पता है कि कितनी जद्धोजहद और परेशानी हो रही है इसलिये मैं अपनी मरकर से भी निवेदन करूंगा कि वह ग्रपने मुलाजमो को जायज मांगों की तरफ जल्द से जल्द गौर करे । अगर सरकार जल्दी कोई माकूल फैसला करेगी तो इसमें हमारी भी भलाई होगी और मुलाजमों की भी भलाई होगी । ऐसा करने के लिए सरकार से मेरी मांग भी है और अपील भी है । लेबर के सिलसिले मे मै कुछ कहना चाहता है यहां पर इलैक्ट्रिसिटी बोर्ड के बारे मैं कहा गया कि उसमें बैलेंस लाने की

जरूरत है यहां पर कहा गया कि फरीदाबाद में यह हो गया, वह हो गया यह भी कहा गया कि वहाँ पर एक लाख मजदूर बेकार हो गये है मैं अपने भाइयो को बतलाना चाहता हूं कि फरीदाबाद के अन्दर 65,000 से ज्यादा मजदूर नही है और वहा पर 440 से कापर फैक्ट्रियां है सारे हरियाणा है अन्दर 1,25,000 आर्गेनाइजड लेबर है तो अकेले फरीदाबाद में एक लाख कैसे हो सकती है अगर मजदूरो में आपसी तालमेल करने का तरीका हो तो उनको कम कष्ट हो सकता है इसके साथ ही मैं लेबर कोर्ट के बारे में थोड़ा सा कहना चाहता हू कि पहले हमारे यहा दो लेबर कोर्ट हुआ करती थी लेकिन मिस्टर ठुकराल के रिटायर होने के बाद यहां सिर्फ एक ही लेबर कोर्ट रह गई है । उसमे मिस्टर शर्मा है जो कि हाट के पेशियेन्ट है उनसे अकेले से इतना काम नहीं हो सकता इसलिये मैं सरकार से निवेदन करूंगा कि एक और लेबर कोर्ट खोली जाए ताकि मजदूरी और मालिको का तालमेल ठीक ढंग से रह सके (इस समय उपाध्यक्ष महोदया पदासीन हुई) आज अगर मजदूरों के साथ ठीक समय के अन्दर अन्दर न्याय हो तो देश में और उनमें यह एक जागरूकता की भी निशानी है मैं चाहता हूं कि मालिक और मजदूरों के सबंध आज और माडर्नाइज होने चाहियें । आजकल के माहौल मे हमें सबसे पहले अपने राष्ट्र और जनता के हित को देखना चाहिये । देश में आज अगर आर्गेनाइज्ड लेबर की तादाद एक या दो परसैंट है और वह अपने हकों को लेकर स्ट्राइक करना चाहते हों और दूसरी तरफ 98 परसैंट लोग जो हैं वह उन्हे एट–बे नहीं रख सकते तो उस वख्त

उन्हें भी यह सोचना चाहिये कि इन 98 परसैट का हित भी हमारे साथ है । लेकिन इसका मतलब यह नही कि मै लाक–आउट और स्ट्राइक के टोटली खिलाफ हूं और इनको बन्द कर दिया जाए, यह भी ठीक नहीं है । मैं तो यह चाहता हूं कि ऐसा तालमेल बनना चाहिये कि लेबर झगड़ा करने कीर बजाए अपने नैशनल हित को सोचे । लेबर का हित भी इसी में है और सरकार का हित भ्ाी इसी में है, ऐसा करने से दोनों कॉ भलाई होगी । इन शब्दों के साथ डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं आपका वहुत शुक्रिया अदा करता हूं और यह जो अनुमान और बजट हमारे वित्त मन्त्री महोदय ने सदन में पेश किया, उनका मैं अनुमोदन करता हूं ।

श्री धजा राम (सफीदों) : डिप्टी स्पीकर साहिबा, इससे पहले कि मैं कुछ कहूं मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं कि आपने मेरे को बोलने का टाइम दिया । डिप्टी स्पीकर साहिबा, पिछले तीन रोज से बजट पर डिस्कशन हो रही है कुछ भाइयों ने इस पर अपने कन्सट्रक्टिव सुझाव रखे और कुछेक हमारे आपोजीशन के दोस्तो ने डिस्ट्रक्टिव सुझाव रखे । ठीक है, ये हमारे अपोजीशन के भाई अपनी आदत से लाचार हैं । इनको ऐसी वात करना नहीं चाहिये थी लेकिन जैसा यह कहते है ठीक है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, इसे पहले कि मैं बजट पर बोलूं, सबसे पहले मैं इन भाइयों को यह बताना चाहता हूं कि आजादी से पहले हिन्दुस्तान में आजादी के लिये कितनी कुर्बानी दी गई यह सब लोगों के सामने हूँ । 15 अगस्त, 1947 को हिन्दुस्तान आजाद

हुआ । हर शहरी ने यह सोचा कि हम आगे बढेगे, तुम तरक्याांई करेंगे । इसमें कोई शक नही है हिन्दुस्तान मे काफी तरक्की हुई, यह सब लोगों के सामने हे और इसे डिटेल मे बताने की जरूरत नहीं है । लेकिन हमारा हिन्दी स्पीकिंग एरिया या मौजूदा हरियाणा की वात मै करनां चाहता हूं । हमारी यह वदकिस्मती रही कि प्वांयट पंजाब में हर लिहाज से हम इग्नोर किये जाते रहे चाहे इडस्टरी ले लो, डिवैल्पमैंट लेलो, एजुकेशन ले लो रोड ट्रांसपोर्ट ले लो यानी हर तरह से हमें इग्नोर किया जाता रहा लेकिन आज हमारी पोजीशन यह है कि हमने इन सब अदायरे मे दिन दुगनी और रात चौगुनी तरक्की की हैं । उन दिनों 'मे चाहे कोई भी चीफ मिनिस्टर आया, चाहे सच्चर साहब की वजारत आइ, चाहे भार्गव साहब की आई, चाहे कैरों साहब की जाई और चाहे कामरेड रामकिशन की वजारत आई, ये भाई उन दिनों ट्रैंजरी बैंचिज परं बेठते थे, यानी सरकार के साथ होते थे लेकिन इनमे यह हिम्मत नही होती थी कि मौजूदा हरियाणा में डिवैल्पमैट के कामों के लिये मागं करें । लेकिन आज ये इस सरकार को क्रिटिँसाइज करते है । ठीक है, करने दो, यह इनकी आदत है । 1 नवम्बर, 1966 को जब हरियाणा' वजूद में आया तो उसवक्त पंडित भगवत दयाल 'जी चीफ मिनिस्टर बने और उनको' मिनिस्टरी मैं. चौधरी दल सिंह जी भी 'मिनिस्टर थें । तो डिप्टी स्पीकर साहिबा मैं इस भाई से पूछना चाहता हूं कि इन्होने अपनी वजारत के अन्दर क्यों किया मैं आपको बताना चाहता हू कि कि जिसे वक्त हरियाणा बना तो–हमारे देश 'के के अर्थ–शास्त्री थे

उनका यह ख्याल था कि हरियाणा एक छोटी सी स्टेट है और इसके पास कोई सोर्स आफ इंकम नही है इसलिये हरियाणा तरक्की नही कर सकेगा, हरियाणी आगे नहीं बढ़ सकेगा और ऊपर नहीं उठे सकेगा । डिप्टी स्पीकर साहिबा, हुआ भी ऐसा हीं कि डेढ साल तक हंमार्री यह बदकिस्मती रही कि हरियाणा । में डिवैल्पमैंट का कोई भी काम नही हुआ और वहां फिरकापरंस्ती की बातें चलती रही । इसके इलावा हरियाणा कर लींडर शिप ऐसे लोगों के हाथों में आई जोकि तंगदिल से बात करते थे और जनता को गुमराह करते थे । इसलिंए मैं इन भाइयों से पूछना चाहताहूं' कि ये उस वक्त सरकार में शामिल थे, इन्होंने हरियाणा प्रान्त के लिये यो हरियाणा की डिवैल्पमैंट के लिए क्या किया 1967 मैं हरियाणा में जनरल इलेक्शन हुए जिसमे कि कांग्रेस के 48 एम 0 एल 0 एज0 बने । मिनिस्टरी बनने के बाद 13 दिन बाद सरकार टूट गई । उसके बाद राव बीरेन्द सिंह जी की सरकार बनी और वह भी 8– 9 महीने बाद टूट गई । मेरे कहने का मतलब यह है कि डेढ साल तक हरियाणा में कोई भी काम नहीं हुआ । मई 1968 के बाद जब चौधंरी बसी लाल जी इस प्रद्रेश, के मुख्य मंत्री बने तब असली मायनो में हरियाणा के अन्दर काम हुए और जो आप लोगों के सामने हैं । इसमें कोई शक नही कि इनके टाइम मे हरियाणा की दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की हुई है । इसी वजह से आज हरियाणा का नाम केवल हिन्दुस्तान में ही नहीं बल्कि सारी दुनिया मे मशहूर है । हरियाणा आज हिन्दुस्तान के नक्शे पर सब से पहली स्टेट है जिसने कि इतने टाइम मैं

इतनी तरक्की की । अपोजीशन के भाइयों ने एक बात रखी कि हरियाणा में कुछ नही हुआ, हरियाणा में नहरें नही निकल रही है । मैं उनको बताना चाहता हू कि आज हरियाणा में कितने काम हुए हैं? आज इरीगेशन को ले लीजिये । इन्दिरा गांधी कैनाल बनी, चक्रवर्ती कैनाल बनी, झज्जर लिस्ट स्कीम बनी, हांसी ब्रांच पक्की बनी, सुदर. ब्रान्च पककी बनी और भालोट ब्रांच पक्की बनी । इन सब नहरो को पक्का किया जा रहा है और अब किसानो को पहले' से डेढ गुना पानी दिया जा रहाहै । इतना कुछ होने के बावजूद भी ये भाई कैसे कह सकते है इरीगेशन के काम मे तरक्की नहीं हुई? इसके अलावा मैं इनको बतानी चाहता हूं कि जिस वक्त हरियाणा बना उस बक्त हरियाणा में केवल 27,000 टयूबवैल्ज थे और आज 1,23,000 टयूबवैल्ज हैं । सरकार ने किसानों को टयूबवैल्ज लगाने के लिये फैसेलिटी दी है और भी दी जा रही है । मेरा कहने का मतलब यह है कि चौधरी बसी लाल की रहनुमाई में हरियाणा दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की कर रहा है अब मैं अपने हल्के के बारे में कुछेक बातें कहना चाहता हूं । डिप्टी स्पीकर साहिबा, मेरे हल्के के साथ से एक जोशी ड्रेन निकलती है । हर साल इसमें ओवर–फलो और ब्रीचिज होने की वजह से वह आटा, टीटो खेड़ी और कर सिन्धु इन तीनौ गांवो की लाखों रुपये की फगल बर्बाद होती है डिप्टी स्पीकर साहिबा. मैं आपके जरिये सरकार से यह सुझाव देना चाहता हूं कि वहां पर एक –डेढ़ –दो मील की छोटी ड्रेन निकाली जाए और उसे

इन्दिरा गांधी कैनाल में डाला जाए ताकि हर साल जो लोग बाढ से पीड़ित होते हैं वे अपनी फस्लें बचा सकें ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा अब मैं अपने हलके की रोड्ज के बारे में कुछ बातें कहना चाहता हूं । मेरे हलके में जामनी से पीलूखेडा मंत्री तक का लगभग डेढ़ मील सडक का टुकड़ा बनाया जाना निहायत जरूरी हं क्योंकि इस वक्त अगर हम जामनी से पीलू खेड़ा मंत्री जाएं तो वाया जींद जाना पड़ता है जिस में तकरीबन 40 मील का चक्कर पड़ता है और जिला करनाल के जो गांव जींद डिस्ट्रिक्ट में आए हैं जैसे गांगट हेडी, पोपडा व रटौली से जामनी तक सडक बन चुकी है । इस लिए इन गांवों का पीलू खेड़ा मंडी से लिंक वनाने के लिए भी वह टुकडा बनाया जाना निहाघत जरूरी है इस के इलावा टोटो खेड़ी में बरडौद बरडौद से खातला, और खातला से मुसलाना की सड़के भी बनाई जानी बहुत जरूरी है । इसी तरह से एक दौर सड़क सफीदों। से डडवाडा गांव तक वाया निमनाबाद, हाट से अचरा खुर्द ओर अंचरा खुर्द से अंचरा कलां तक अगर सड़क बना दी जाए तो सफीदो से गोहाना जाने के लिये बहुत छोटा रास्ता बन जाता है और इस के बनने से लोगों को बहुत सुविधा होगी । इस लिए मे निवेदन करूंगा कि सरकार इन सड़कों को बनाने के लिए जल्दी से जल्दी प्रबंध करे ।

हमारे वित्त मंत्री साहब ने यह बजट बहुत अच्छे ढंग से पेश किया है इस में कोई शकोशुबा की बात नहीं है। उन्होंने हर

डिपार्टमैंट के लिए बजट में फण्ड्ज प्रोवाईड किए हैं चाहे वह एजूकेशन का हो, चाहे ट्रांसपोर्ट का हो, चाहे इन्डस्ट्री का हो मेरा कहने का मतलब यह है बजट बहुत अच्छे ढग से तैयार किया गया है । चौधरी दल सिंह जी ने यहां पर कहा कि खेती के बारे मे हरियाणा में कोई तरक्की नही हुई ? मैं उनको बताना चाहता हूं कि 1966 में जब हरियाणा बना था उस समय एक्रू लाख टन अनाज हरियाणा सैट्रल दल से लेता था लेकिन आज 12 लाख टन हम सैट्रल पूल में दे रहे हैं । इस लिए मैं उन से यह पूछना चाहता हूं कि क्या जो हम इतना सरप्लस अनाज पैदा करके सैट्रल पूल में भेजते है इस से बड़ा तरक्की का सबूत और क्या हो सकता बै । डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं समझता हूं कि उन्होंने बिलकुल बेबुनियाद नुक्ताचीनी की है । इस के इलावा उन्होने हरिजनों के बारे में कहा कि उनके लिए कुछ नहीं किया जा रहा । मुझे मालूम नहीं कि वे कब से हरिजनों की भलाई चाहने लगे हैं । डिप्टी स्पीकर साहिबा, इन के खुद के गांव की बात है कि यह अपने जिस आदमी को सरंपच बनाना चाहते थे उसको वहां के हरिजन वोट नहीं देना चाहते थे । वहां झगड़ा भी हुआ था जिस में कि इन के आदमियों को भी चोटें आई थी और केस भी रजिस्टर हुआ था । हरिजन चूंकि चौधरी दल सिंह के आदमी को वोटें देना नहीं मानते थे इसलिए इन्होंने उनका शामलात में और खेको में जाना बंद कर दिया ओर वे बेचारे 10/15 दिन तक अपने अन्दर ही टट्टी पेशाब करते रहे । जब हरिजनों के साथ यह ऐसा सलूक करते रहे है तो आज यहां पर उनकी हमदर्दी का कैसे

दम भरते है । मैं समझता हूं कि यह मगरमच्छ के आंसू बहाने वाली बात है वर्ना इनको हरिजनों के साथ कोई हमदर्दी नही है हमारी सरकार ने इस बजट मे हरिजनों को फैसिलीटीज के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रोविजन किया है और जो हरिजन निगम है उस के जरिए इन को हर प्रकार के लोन दिये जाते है और पांच साला एलान में 10 करोड़ रुपया खर्च किया जाएगा

चौधरी पीर चन्द : आन ए प्वांयट आफ आर्डर मैडम, डिप्टी स्पीकर साहिबा इन्होंने मालूम होता है बजट को पढ़ा नही वैसे ही 10 करोड़ रुपया कह दिया है ।

Deputy Speaker : Please take your seat. This is no point of order.

श्री धजा रामः डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं निवेदन कर रहा था कि हरिजनो के लिए इस बजट में काफी फण्डज प्रोवाईड किए गए है अब मैं चन्द बातें को–आपरेटिव सोसाईटीजके बारे में कहना चाहता हूं । कोआप्रेटिव डिपार्टमैंट के जरिए लोगों की बड़ी तरक्की हुइं है, जो छोटा कहना था, गरीब हरिजन था और जो मजदूर लोग थे उन्होंने कोआप्रेटिव सोसाईटिया बना–बना कर ऊपर उठने की कोशिश की बै हमारी सरकार ने इस के लिए भी बजट मे काफी फण्ड्ज प्रोवाईड किए हैं । यहां पर चौधरी दल सिंह ने अपनी तकरीर करते वक्त कहा कि कोआप्रेटिव सोसाइटीज को बोगस लोन दिए जाते है । मैं उन से यह बात पूछना चाहता हूं कि यह सब टैक्टिक्स सिखाए हुए किस के हैं मेरा ख्याल है

जिन्होंने यह टैक्टिक्स अपनाया । मैं आप को एक मिसाल देता हूं इन की 'दी राम राए बिक क्लिन सोसाईटी' पहले राम राए मे थी उस को वहां से इन्होंने गवर्नमैट को परमिशन के बगैर जींद शिफट किया और उस के बाद जीद से बिशनपुरा में जोकि रोहतक रोड पर थै फिर शिफ्ट किया गया और वह भी गवर्नमैंट की परमिशन के बगैर । इस तरह इरैगूलेरिटी करने के आधार पर उस का लाईसैंस कैसिल हुआ और डिप्टी स्पीकर साहिबा इस सोसाइटी में जो कार्यवाही वगैरा की गर्ड वह सारी बोगस है । उस सोसाइटी में, चौधरी दल सिंह, शायद इनके परिवार का मैंबर भी उस में कोई हो और एक आध कोई दूसरा मैंबर, कई बार इस के मैंबर बनते रहे औरकई बार निकलते रहे । तो फिर यहमेरी समझ में नहीं आ सका कि

गवर्नर एर्डेस पर बोलते हुए उन्होंने यह कैसे कह दिया कि मेरा कोई भट्ठा नहीं हं । डिप्टी स्पीकर साहिबा, यही नहीं इन्होंने स्टेट बैंक आफ पटियाला से आन बीहाफ आफदी सोसाइटी रुपए ड्रा किए । मैं उन से पूछना चाहता हूं कि किस आधार पर उन्होंने यह रुपया बैक से ड्रा किया था । मैं डिप्टी स्पीकर साहिबा, उनको इस बात के लिए चौलेंज करता हूं वह उस सोसाइटी के रिकार्ड को हाउस में पेश करें और अगर यहां नहीं तो हाउस से बाहिर उस को एग्जामिन करवा लिया जाए, उस में चौधरी दल सिंह ने खुद अपने पांव के अंगूठे लगा रखे हैं और वह सारी बोगस कार्यवाही है । उस रिकार्ड को देख का सब कुछ

पता चल जाएगा कि यह कितने ईमानदार हैं । इस के बाद मैं ला एंड ऑर्डर की तरफ आता हूं डिप्टी स्पीकर साहिबा ला एंड आर्डर हरियाणा में बहुत अच्छा है इस मे कोई शकोशुबा की बात नहीं है हमारी दूसरी जो नेबरिंग स्टेटस है, यू ० पी ० है, राजस्थान है, पंजाब है, आंधप्रदेश और उड़ीसा वगैरा जो हैं, वहां कोई न कोई आन्दोलन चलता ही रहता है और गड़बड़ रहती है । लेकिन हमारे यहां कोई इस किस्म की बात नही दिखाई देती और अगर मैं कहूं कि हमारी स्टेट से क्लीन एडमिनिस्ट्रेशन किसी और स्टेट की नहीं है तो गलत न होगा डिप्टी स्पीकर साहिबा, हरियाणा बनने से पहले खामी गांव से जब मुजारों को उजाड़ा गया उस वक्त वह भाई सरकार के साथ था । मैं उन से पुछना चाहता हूं कि क्या उस समय उन्होंने सरदार प्रताप सिंह कैरों, पंडित नेहरू या गवर्नर साहब को इस बात के लिए एप्रोच किया था कि उन गरीब मुजारो को न उजाड़ा जाए । उस समय उनका ला एंड आर्डर कहा गया था औरमुझे समझ नही आता आज वह ला एंड आर्डर सी बात कैसे कहते हैं, और हरिजनों और मुजारों की हमदर्दी की बात कैसे करते है फिर उन्होंने कहा कि जींद डिस्ट्रिक्ट में ज्यादा चोरियां होती हैं डिप्टी स्पीकर साहिबा चोरियां तो सब जगह होती हैं लेकिन जींद मेंजो चोरिया होती हैं उन में चौधरी दल सिंह का हाथ कुछ जरूर है । जींद के पास एक राजपुरा गांव में बिजली की मोटर चुराई गई उस का दो महीनों तक इन्होंने केस रजिस्टर नहीं होने दिया लेकिन उस के बाद वह लोग एस0 पी 0 वगैरा को मिले तो उनका केस रजिस्टर हुआ और फिर वह केस सी 0आई

0ए 0 वालों को दिया गया और उन्होंने चोर को पकड लिया और जब उस के खिलाफ केस रजिस्टर होने लगा तो चौधरी दल सिंह पर्सनली गए और यह कह कर केस फाईल करवा दिया कि गांव में पार्टीबाजी है इसलिए चोरी उस के नाम लगाई गई है । अब आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि चोर पकडा जाने पर भी इन्होंने उसके खिलाफ केस रजिस्टर नही होने दिया तो इस से साफ जाहिर है कि उस के पीछे इनका हाथ था ।

Deputy Speaker : No personal remarks please, otherwise, he will demand time for personal explanation from me.

श्री धजा राम : डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं ला एंड आर्ड र के बारे में बोल रहा हूं । ला एंड आर्डर हरियाणा का बहुत अच्छा हँ, इम में कोई शकोशुबा की बात नही है । मैं आपको एक बात बताना चाहता हूं और यह बात 1952 की है । उस वक्त चौधरी दल सिंह जी एम 0 एल ० ए ० हुआ करते थे इनके गांव में एक अध्यापिका पढाया करती थी । उसको इन्होंने कैसे जबरदस्ती अपने घर में रखा है यह बात हाउस में बताते हुये मुझे शर्म आती है । जो आदमी खुद इस तरह की हरकतें करता हो वह अगर ला एंड आर्डर के खराब होने की बात करे तो यह अफसोस की बात है...

Deputy Speaker : I would again request the hon. Member that he should not go personal, otherwise he will demand time for personal explanation from me.

श्री धजा राम : हमारे चीफ मिनिस्टर साहब ने हाउस के सामने एक सुझाव रखा और बताया कि सरकार हर जिला हैडक्वार्टर पर और सब–डिवीजनल हैडक्वार्टर पर धर्मशाला बनाना चाहती है । यह बहुत अच्छी बात है जो सरकार करने जा रही है और इस में शक नहीं कि हर आदमी को इन में ठहरने की जगह मिलेगी लोकिन जींद के बारे में मैं चीफ मिनिस्टर साहब से गुजारिश करूँगा कि अगर वहां पर कोई धर्मशाला बनायें तो उसका इन्तजाम सरकार को सकती से अपने हाथ मैं रखना चाहिए क्योंकि चौधरी दल सिंह को धर्मशालाओं पर कमा करने की बड़ी आदत है । इनके गांव राम राये में करसिंधू के बणिये ने धर्मशाला बनवाई थी लेकिन चौधरी दल सिंह ने उस पर कक्का करके अपनी आटे की मशीन लगा ली और आज भी इन के परिवार का कब्जा है । तो मैं अर्ज करता हूं कि जीद धर्मशाला बनाई जाये तो उसका इन्तजाम जरा सख्ती से होना चाहिए कही ऐसा न हो कि वह उस पर कब्जा जमा लें क्योकि कब्जा करने में वह बहुत तगडे है, ...कभी जमीनों पर कब्जा तो कभी धर्मशालाओ पर कब्जा कर लेते हैं.....

Deputy Speaker : No personal remarks please.

Shri Amar Singh : On a point of order, Madam. The hon. Member against whom personal remarks are being made, is not present in the House. और रुह रिमार्कस भी ऐसे हैं जो शोभा वाली बात नहीं है । अगर हाउस क्षा तैयार इस तरह का हो गया किए एक मैंबर दूसरे मैंबर के बारे में ऐसे रिमार्क्स करेगा तो

इससे हाउस की शोभा नहीं बढेगी अरि यह मामला और आगे बढ़ेगा ।

Deputy Speaker : Order please. I have already requested the Member that he should not go personal.

Chaudhri Partap Singh Daulta : And, whatever has been utter against him should be expunged,

श्री धजा राम : मे तो सच्चाई बता रहा हू अगर इसे' भी महसूस करते हैं तो ठीक है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं ला एंड आर्डर की बात कर रहा था और सच्चाई बता रहा था । एक बात और कहना चाहता हूं कि लाइफ में तीन स्वाद होते हैं । दुनिया मे चाहे पालिटिक्स मे कह लो या दूसरी आम लाईफ मैं भी कहे लो । एक तो खुजली का स्वाद दूसरे ब्याज का स्वाद, और तीसरे राज का स्वाद और यह तीनों बहुत खतरनाक बीमारियां और स्वाद है। जब आदमी खुजली करता है तो उसे बहुत स्वाद आज है मीठा मीठा और जब तक खून न निकल आये वह खुजली करने से रुकता नहीं है । दूसरी है ब्याज की बीमारी और स्वाद जो आदमी ब्याज पर रुपया देता है वह न कोई दूसरा बिजनैस कर सकता है, न अपने बच्चो को हायर एजूकेशन दे सकता है और न अपना रिर्गवेग स्टैडर्ड ऊपर उठा सकता है बस ब्याज में पैसा लगा कर ही स्वाद लेता रहता है । तीसरा स्वाद या बीमारी है राज की जो कि बहुत हीं खतरनाक है । चौधरी दल सिंह चार

महीने स्टोर 13 दिन वजारत की कुर्सी पर बैठे हैं इसालिए उन को हर वक्त उसी कुर्सी के ही खाब आते रहते हैं ।

Deputy Speaker ; Please address to the Chair. Also, please do be-personal.

श्री धजा राम : डिप्टी स्पीकर साहिबा, तो मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि वह भाई जिस वक्त ताकत में आये तो उस वक्त तो कुछ किया नहीं लेकिन आज यह बातें करते हैं कि हरियाणा में कुछ हुआ ही नहीं है । मैं उन से कहूंगा कि अगर उनके दिमाग में फर्क है तो उस भाई को अमृतसर जा कर अपना दिमाग ठीक करवा लेना चाहिये । आज सारा भारत जनता है कि हरियाणा ने कितनी तरक्की की हैं और सारे देश में हरियाणा की तारीफ ढ़ो रही है । हमे इस बात पर बहुत फख सै कि हमें इतना तगडा और मजबूत चीफ मिनिस्टर मिला है कि जिसकी रहनुमाई में हरियाणा तरक्की कर रहा है । चौधरी दल सिह ने जिला जींद के कुछ गांव का जिंकर किया कि वहां पर उन गांव मे पानी नहीं मिल रहा है । मैं मानता हूं कि बडौदी, रूपगढ, कैरखेडी, अहीरका, झाजकला, झाज खुर्द, दरियावाला, खेडीजाजो और गांवों वाजवान में पानी वारा दे और नहर का पानी भी वाम लगता है । अगर सामदो माइनर को चार बुरजी तक ऐक्सटैड कर दिया जाये तो उन सभी गांवों को पानी मिल सकता है । लोकिन मैं हैरान हूं कि चौधरी दल सिंह को अब उन गांव का कैसे ख्याल आ गया जब पावर में थे तो कभी उन्हौंने उन गांवो के बारे में नहीं सोचा

। 1972 के बाद सब से पहले उन्होंने इन गांवों के बारे में सोचा और नारा लगाया कि उन गांवों में पानी खारा हूँ । इसकी क्या वजह है वह मैं बताता हूं । दरअसल बात यह है कि इन्होने कैरखैडी गांव में जमीन ले रखी है और यह गांव इन गांवों के साथ लगता है । उन को इन गांवों वो बारे में इन्ट्रेस्ट यह है कि अगर इन गांवों को पानी मिल गया तो इस गांव में इनकी जमीन को और ज्यादा पानी मिल जायेगा । उन्होने वहा टयूबवैल भी लगा रखा है लेकिन हर एक आदमी चाहता है कि उसे ज्यादा से ज्यादा और अच्छी से अच्छी चीज मिले और चौधरी दल सिंह तो हर चीज अच्छी और ज्यादा अपने लिये चाहते हैं । ..... (विघन)... .हर आदमी अच्छी चीज पसंद करता है (हंसी)..

Deputy Speaker ; Again personal. These words may be expunged from the proceedings.

श्री छजा राम : डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं गुजारिश कर रखा था कि इन गांव को वाकई पानी की तकलीफ है और वहां पर पानी देने को बहुत जरूरत है क्योंकि वहां पर पानी बीज अच्छीं है ओर लोग खुद वहां बोरिंग करवा भी नहीं सकते हैं क्योंकि वहां पानी बहुत गहरा है । इसलिये मेरा सरकार से सुझाव है एक वहां एर रिंग मशीनों से गहराई तक खुदाई करवा कर सरकारी तौर पर टयूबवैल्ज लगाये जाये और इस तरह से लोगों को पानी दिया जाये । अन्त में अव आपका धन्यवाद करता हूं जो आपने बोलने के लिये मुझे टाईम दिया है ।

राव दलीप सिंह (कनीना) : डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं आपका मशकूर हूं कि आपने मुझे बोलने के लिये टाइम दिया । हरियाणा प्रांत एक छोटा सा प्रदेश है और इसकी आबादी ज्यादातर किसानों काशतकारो की है जो कि तकरीबन 85 फीसदी है । यहां का किसान भी बहुत मेहनती और ईमानदार है । यहां का किसान इतना मेहनती है कि दिन रात खेत में काम करता है, उसकी औरत काम साथ करती यूं और बच्चे काम करते हैं । मैंने बजट में देखा है कि एग्रीकल्चर एंड अलाइड सैक्टर में 985 लाख रुपया रखा गया है और इरीगेशन एंड पावर के लिये 4,613 लाख रुपया खर्च के लिये रखा है मै इस बात को देख कर बहुत खुश हूं कि एग्रीकल्चर और इरीगेशन के लिये जो खर्च रखा गया है वह किसी हद तक ठीक ही रखा गया है होना तो यह इससे भी ज्यादा चाहिये था लेकिन फिर भी आबादी के प्रोपोर्शन को देखते हुए यह खर्च जो इन मदॉ के लिये रखा गया है किसी हद तक ठीक है और मै इस के लिये सरकार की सराहना करता हूं कि यह सरकार चाहती हँ कि हरियाणा का किसान ऊपर उठे और उसका स्टैंडर्ड आफ लिविंग ऊंचा हो । इसके साथ–साथ इस में यह भी ध्यान म्बा गया है कि जो बैकवरै एरियाज हैं जहां पहले से ही पीने का पानी नहीं मिलता आया है, जहां पर आने–जाने के साधन। रोडज के नहीं है और हर लिहाज से वह पिछडे हुये है पहले तो पंजाब में सारा हरियाणा ही बैकवर्ड रहा लेकिन अब भी हरियाणा में ऐ से अलाके है जो बैकबर्ड हैं, उनको राहत दी जाये सरकार ने जो अब उन बैकबर्ड अलाको कॉ तरफ ध्यान दिया है मैं

उसकी सराहना करता हूं और इस बात की तारीफ करता हूं कि सरकार के दिमाग में यह बात है कि रीजनल इम्बैलैंसिज को दूर किया जाये और ऐसा करने की कोशिश की भी दे इसको दूर करने की कोशिश की गई, मैं इस बात का तहेदिल से शुक्र गुजार हूं । डिप्टी स्पीकर साहिबा, आज किसान को बिजली की जरूरत है पानी की जरूरत है । जहां तक मेरे जिले का सवाल है मैं अपने जिले का नाम इस लिए नही लेता कि मैं इससे ताल्लुक रखता हूं, बल्कि इसलिए कह रहा हूं कि हर एक मैम्बर, हर एक आदमी जो हरियाणा प्रान्त का रहने वाला है, अगर वह सही मायनों में अपने आपको इन्सान कहलाने का हकदार है तो उसको जरूर महसूस करना चाहिए कि जो बैकवर्ड इलाके हैं, जिनको बिजली और पानी की बहुत जरूरत है उन को सबसे पहले देनी चाहिए । मैं यह नहीं कहता कि जो इलाके आगे बढ़ गए है उनकी तरफ ध्यान न दिया जाए, लेकिन जो इलाके बहुत पिछड़े हुए है जहां पानी नही मिलता उनको पानी न मिले तो बड़े शर्म की बात है, हमें शर्म आनी चाहिए । मै गवर्नमैंट की इस बात पर सराहना करता हूं कि गवर्नमैंट ने इन पिछडे हुए इलाको की तरफ ध्यान दिया । डिप्टी स्पीकर साहिबा, पावर प्रोजैस्ट के लिए 3356 लाख रुपया रखा है, यह काफी बड़ी अमाउंट है । इतनी बड़ी रकम खर्च करने के बावजूद भी हमारी बिजली की मांग पूरी नही हो सकती, इसमें डैफिशिएंसी रहेगी यह डैफिशिएंसी 1973–74 के आखिर तक 879 मैगावाट के करीब रहेगी । इस डैफिशिएसी को पूरा करने के लिए सरकार द्वारा और कदम उठाए जाने चाहिएं अगर बिजली की

डंफिशिएंसी चलती रही तो इंडस्ट्री और एग्रीकल्चर दोनों सफर करेगे । पिछले साल हमारे यहा कहत पड़ा । आप यकीन मानिए हमारे डिस्ट्रिक्ट मे, बैकवर्ड एरिया के नाते से बिजली बोर्ड ने काफी बिजली दी । पूरी बिजली तो नही दे सके लेकिन फिर भी अगर बिजली बोर्ड हमारी हैल्प न करता तो हम जिन्दा नहीं रह सकते वे, हमें कायम रखने के लिए बिजली बोर्ड ने बड़ा सहयोग दिया । इस साल भी किसी हद तक बिजली ठीक जा रही है, मैं यह नहीं कहता कि नही जा रही, जा रही है लेकिन उस पर कट है । हालांकि सी 0 एम 0 साहब ने कहा था कि कट नही एं । जब मैंने एस 0 डी 0 ओ 0 से कहा तो उन्होंने बताया कि हमारे पास डिपाटेमैंट की तरफ से कोई कट नहीं है लेकिन भाखड़ा मैनेजमैंट की तरफ से इक्टूक्शन्ज आ जाती हैं और हमे करना पड़ता है । इसलिए मैं सरकार से अर्ज मैं चाहता हूं कि इस सर्दी के टाईम में जहा कोल्ड वेव चल रही है इससे सरसों की फसल खराब हो जाएगी अगर बिजली पर कट लगेगी । जमीदारों ने छोटे छोटे ट्यूबवैल लगाये हु वे तबाह हो जाएगे । मैं सरकार से उम्मीद करता हूं कि वहां पर कोई कट नही लगेगी ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, जवाहर लाल नेहरू कैनाल पर 30 करोड़ रुपया खर्च होने जा है वह इलाका जो पानी के लिए तरसता था, लोग सोचते थे कि हमारे खेतों में नहर आएगी पानी आएगा, खेत लहरायेगे और उनके बच्चे भी मुस्करायेंगे, कपड़ा भी पहनेंगे किस्म की भावना उनके मन में थी । इसके साथ–साथ मैं

यह कहना चाहूंगा कि इस बजट मे स्कीम के लिए जो रुपया रखा गया वह कम है सिर्फ 36 3 लाख रुपया रखा गया है मुझे पता चला है कि शायद सैन्टर से इस के लिए हैल्प मिलेगी । मैं कहना चाहता हूं बजट में ज्यादा रुपया रखना चाहिए जैसा कि सी 0 एम 0 साहब ने वायदा था कि स्कीम को दो साल में एग्जिक्यूट कर दे– गे, तो दो साल में एग्जिक्यूट करने के लिए 36 लाख दो बजाये 10/15 करोड रुपया रखना चाहिए मैं समझता हूं कि यह नाकाफी है और ज्यादा से ज्यादा रुपया रखा जाना चाहिए । इसके इलावा रोहतक–भिवानी–रेल–लिक के लिए कुछ रुपये की डिमांड को गई है । मैं समझता हूं कि यह लिंक बनना चाहिए बैकवर्ड इलाके में ब्राड–गेज लाईन ले जानी चाहिए, बड़ी अच्छी बात थै क्योंकि लोहारू, भिवानी, तोशाम वगैरा इलाके ज्यादा बैकवर्ड है । लेकिन मैं चाहता हूं कि इसकी एक्सटैन्शन महेन्द्रगढ तक की जानी चाहिए तभी इससे पूरा फायदा हो सकता है हर डिस्ट्रिक्ट को ब्राड–गेज लाइन कवर करती है लेकिन महेन्द्रगढ को कवर नही करती । जब तक यह लाईन नही होगी तब तक वहा इंडस्ट्री डिवेल्प नहीं कर सकती ब्राड–गेज लाइन होने से कोयले को लाने ले जाने में सहुलियत मिलती है इंडस्ट्री एस्टेवलिश करदे में सहायता मिलती है, और भी कई प्रकार की सहूलियतें मिलती है । इसलिए मेरा सरकार से निवेदन है कि इसको महेन्द्रगड तक एक्सटैड किया जाए ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, हमारे प्रान्त में जे0 बी 0 टी0 टीचर्ज बहुत है जो चार–चार साल से बेरोजगार फिरते हैं । एक मामूली दुकानदार अपने लड़के को जे ० बी ० टो ० करवाकर सर्विस करवाना चाहता है, थोड़े से मोल्ड का आदमी होता है, अगर उसका लडका चार चार साल तक घर बैठा रहे तो सरकार के लिए बड़े शर्म की बात है । इन प्रोफैशनल स्कूलों में इस प्रकार को ट्रेनिंग होनी चाहिए जिससे इतने नम्बे अर्से तक ये बेरार न चे । इस क्सि्म की ट्रेनिंग होनी चाहिए कि जब जे 0 बी 0 टी 0 कालेज से लडका बाहर आता है तो वाहर आते–आते वह एबजार्ब होता जाए । इसी तरह से इंजीनियरिग के लड़के फिरते है । जिन लडकी ने कुरुक्षेत्र और चण्डीगढ़ से इंजीनियरिंग पास की हुई है उन को सविंस नही मिलती, बेकार फिरते है । इसलिए मैं सरकार से अर्ज करूंगा कि एस्पैशली उन लडको को जो प्रोफैशनली ट्रेंड हैं, उनको अन–एम्पलायमैंट का, बेरोजगारी का भत्ता दिया जाए, उनकी आने–जाने के लिए खर्चा दिया जाए मेरी सरकार से प्रार्थना है कि ऐसे नड़को को भत्ता जरूर दिया जाए ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, यह वायदा किया गया है कि सरकारी एम्पलाईज को डीयरनैस अलाउंस देंगे । मैं समझता हूं कि हरियाणा सरकार को भी बपने एम्पलाईज को डीयरनैस अलाऊस देना चाहिए जबकि दूसरी स्टेटों की सरकारो ने दे दिया है खास कर उन लोगों की देना जरूरी है जो छोटे–छोटे मुलाजम है, छोटी–छोटी तन्खाह लेते हैं, जो अपने बच्चों का गुजारा नहीं

चला सकते दस–बीस मुलाजम मुझे मिले और कहने लगे –नमक के साथ खाना खाकर भी हम गुजारा नही कर सकते, इनको इमिजिएट डीयरनैस अलाउंस दिया जाए लेकिन बजट में इनके लिए कोई प्रोवीजन नही रखा गया । बजट में 18 करोड़ का डैफिसिट है । अगर डीग्रनैस अलाउन्स देंगे तो डैफिसिट और बढ़ेगा 300 करोड़ का पब्लिक डैट है जो कि बहुत ज्यादा है और इसको रिड्यूस करने के लिए सरकार द्वारा कदम उठाए जाने चाहिएं

इसके इलावा बैकवर्ड एरियाज के लिए बैकवर्ड एरियाज में डिवैल्पमैंट करने दो लिए सरकार ने प्रायरिटी नहीं दी है । कुछ ध्यान. रखा गया है, इस में शक की बात नहीं लेकिन? जो ज्यादा प्रायरिटी देनी चाहिए, वह नही दी गई । कल पग्सों एक सप्लीमैंटरी का जवाब क्कै हुए सी ० एम ० साहब ने फरमाया था कि नारनौल मैं सीमेंट फैक्टरी जो लगा रहे थे बस नहीं लग रही क्योंकि इससे जो सीमेंट पैदा होगा वह दूसरे प्रान्तों में जाएगा इसलिए वहां मे चूना बनायेगे । डिप्टी स्पीकर साहिबा, जो फैक्टरी हम लगाते हैं और जो माल वह फैक्टरी बनाती है वह बाहर भी जाना चाहिए आप देखें, हरियाणा से कितना माल बाहर जाता है? गेहूं पैदा करते है वह बाहर जाता है, और भी कई चीजें बाहर जाती है । इसी तरह से अगर यह फैक्टरी लग जाती तो इससे भी माल बाहर जाता जो भी फैक्टरी लगती उससे जाता । नारनौल में बहुत सीमेंट तैयार हो सकता है क्योंकि वहां लाईम–स्टोन बहुत है

। मैं सरकार से प्रार्थना करूंगा कि इस को दोबारा एग्जामिन कर लें और वहां सीमेंट फैक्टरी जरूर लगाई जाए, वह इलाका बड़ा बैकवर्ड है । प्वायट पंजाब में आयरन–ओर की फैक्टरी 10 करोड़ रुपये की लागत से लगाने का विचार था लेकिन वह खत्म हो गई । वहां यह प्लांट लग सकता था क्योंकि रा–मैटीरियल महेन्द्रगढ से निकलना था अगर लगा लेते तो बहुत अच्छी बात थी क्योंकि वहां मिनरल निकालने के लिए माईन्ज है अगर फैक्टरी लग जाती तो बहुत अच्छी बात होती । वहां कौपर की माइन्ज हैं, इसको एक्सपलोरेट करना चाहिए और इससे हरियाणा के रिसोर्सिज बढ़ सकते है

डिप्टी स्पीकर साहिबा, रोडज पर बड़ी चर्चा हुई और सरकार ने कहा कि हम रोड्ज पर इतना ध्यान नही देंगे । लेकिन दो तीन रोड्ज ऐसी हैं जिनका बनाया जाना निहायत जरूरी है । गाव की पंचायतों ने पांच–पांच, दस–दस हजार रुपया कंट्रीब्यूट किया है और जमा किए हुए पांच–पांच साल हो गए है लेकिन नही बनीं जो सड़कें बननी हैं उन के नाम हैं–कनीना टू ककराला और गुधा टू रसालपुर । तो मेरा निवेदन है कि जिन पंचायतो ने दस हजार का या पांच हजार का कंट्रिब्यूशन दिया है उनकी सड़कें जरूर बननी चाहिऐ ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, वाटर सप्लाई के ऊपर 176 लाख रुपये सरकार खर्च करने जा रही है । मैं यह कहूंगा कि यह रकम बहुत मामूली है । डिस्ट्रिक्ट महेन्द्वगढ का सारा डिस्ट्रिक्ट

ऐसा है जहां पीने का पानी अच्छा नहीं है । बहुत कम गांव ऐसे है जहां मीठा पानी है । वहां या तो बारिश का पानी लोग पीते हैं या फिर उन जोहड़ों को लोग इस्तेमाल करते हैं जिनका पानी हैवान भी नहीं पी सकते । तो ऐसी कोई स्कीम होनी चाहिए जो सारे महेन्द्रगढ को पानी सके

डिप्टी स्पीकर साहिबा, वहां एक दोहान नदी है । उसने पीछे आस–पास के इलाके को बडा नूकसान किया जो अच्छे खेत थे उनको स्वायल इरोजन से या तो काट दिया या उनमे रेत ही रेत डाल दिया । तो उससे आस–पास के खेतों और महेन्द्रगढ शहर को बड़ा खतरा इसलिए मेरा निवेदन हँ कि वहा तुक छोटे डैम को शकल मे या दीदार की शकल में कोई ऐसी चीज बनाएं जिससे इस खतरे को टाला जा सके.

डिप्टी स्पीकर साहिबा, इसके साथ ही साथ मैं एक बात और कहना चाहेगा इस प्रान्त में काफी काम हुहा इसमें कोई दो राय की बात नही जै लेकिन साथ–साथ कुरप्शन भी कुछ बढ़ती गई है इस कुरप्शन को दूर करने ले लिए भी सरकार को सख्ती से कदम उठाने चाहिए । आज और बातों के अलावा गवर्नमैंट सवैंन्टस जीपस का मिसयूज भी बहुत करते हैं. आज चुंकि पंट्रोल की कमी भी हें और मंहगाई भी है इसलिए हमें इस मिसयूज को भी रोकना चाहिए ।

जहां तक शिक्षा का ताल्लुक है डिप्टी स्पीकर साहिबा, इसके द्वारा जब तक करैक्टर की भावना हम बच्चों के अन्दर पैदा नहीं कर सकेगें तब तक मैं समझता हूं कि हम ज्यादा डिल्पमैंट नही कर सकेंगे । किसी प्रान्त या नेशन की ग्रेटनैस उसके नैचुरल रिसोर्सिज से ही होती या दूसरे कारणों से नहीं होती बल्कि उसके अच्छे सिटिजन्ज से होती है । जिस देश या प्रान्त में महान सिटिजन्ज रहते है वही देश या प्रान्त महान होता है । तो हमें चाहिए कि हम शिक्षा के द्वारा ऐसे विद्धान सिटिजन्ज पैदा करें जो महान हों, करैकटर के आदमी हों और आगे चल कर बड़ी हिम्मत ओर ईमानदारी के साथ डिवैल्पमैंट का काम करें । इन शब्दों के साथ,

डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं ।

श्री गुलाब सिंह जैन (हिसार) : डिप्टी स्पीकर साहिबा, इस सदन में तीन रोज से बजट पर डिसकशन चल रही है । गवर्नर साहब का जो अभिभाषण है उस पर बोलते हुए मैंने हरियाणा ने जो फिनौमिनल तरक्की की है इन आल रिसपैक्टस उसकी तरफ सदन का ध्यान दिलाया था । मेरे काबिल दोस्त श्री दौलता साहिब जब बोलने के लिए खड़े हुए तो उन्होंने मुझे मुबारिकबाद दी । पहली बात, डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि मैं उनसे मुबारिकबाद लेना नहीं चाहता कारण कि गलत आदमी की मुबारिकबाद कभी अच्छी नही होती । ये

दोस्त ये चाहेगे कि एरसे शब्द मैं क्यों कह रहा हूं । मैं उनका ध्यान एक बात की तरफ दिलाना चाहता हूं । शायद उन्हें हमारे मुख्य मंत्री साहब से कोई पर्सनल शिकायत हो । मैंने जिस वक्त हरियाणा की तरक्की की तसवीर खेची थी उसके तीन फैक्टर्ज मैंने अर्ज किए थे डिप्टी स्पीकर साहिबा, अव्वल यह कि हरियाणा में तरक्की इसलिए हुई कि हरियाणा बना, दूसरा यह कि तरक्की इसलिए हुई कि आज सरकार काग्रेंस पार्टी के हाथ में है जिसका प्रोग्राम प्रोग्रैसिव सोशलिजम लाने का हूँ और गरीबो की भलाई का है । तीसरा मोस्ट इम्पौरटैन्ट फैक्टर जो है वह यह है कि उस प्रोग्राम की पालिसी की ऐक्सिक्यूशन आज चौधरी बसी लाल कर रहे है अगर बंसी लाल जी न होते तो यह तरक्की न होती । क्यो? हरियाणा बनने कर बाद मेरे दोलत भी सरकार मे रहे लेकिन तरक्की नही हुई बल्कि हरियाणा का नाम बदनाम हुआ फिर हरियाणा बनने के बाद कुछ दिनों तक हरियाणा सरकार की बागडोर ऐसे शक्स के हाथ में रही जो कि कांग्रेस पार्टी के लीडर थे, काग्रेस पार्टी के चीफ मिनिटर थे लेकिन उस समय भी तरक्की नहीं हुई । इसलिए सिर्फ हरियाणा बनने से या सिर्फ काग्रेस पार्टी की हकूमत होने से तरक्की नहीं होती बल्कि जब तक ऐक्मिक्यूटर अच्छा न हो, ऐडमिनिस्टैटर अध्यक्ष न हो उस वक्त तक तरक्की नही होती डिप्टी स्पीकर साहिबा, आपको तो मालूम ही कि जैनीज्म मे सालवेशन के लिए तीन फैक्टर्ज जरूरी है । नम्बर एक, राईट नालेज, नम्बर दो। राईट थीकिंग और नम्बर तीन जो कि मोस्ट इमपोरटैन्ट है वह ठुँ राईट ऐक्शन । ऐक्शन के बगैर सालवेशन

नही होती इसलिए जब तक ऐक्शन करने वाला आदमी प्रौपर न हो तरक्की नहीं होगी मैं एक बात और अर्ज करूगा दौलता साहब, एक अच्छे वकील समझे जाते है लेकिन कोई भी वकील अच्छा नहीं समझा जाता यदि वह एट दी बार किसी विटनैस की एवीडैंस को या किसी रूलिंग को गलत कोट करे । मैंने तीन बातें दही थी । अगर इन. तीनों बातों के बारे में ये कुछ कहते तो मैं उसका अन्दर करता लेकिन' अगर चीफ मिनिस्टर साहब से उनकी कोई जाती शिकायत हो उसमें मुझे ये कोट न करे, मुझे आयंदा बीच में न लाएं, यह मेरी इनसे मुअदबाना गुजारिश है ।

चौधरी प्रताप सिह दौलताः डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं इनकी तीनो बातो से ऐग्री करता हूं ।

श्री गुलाब सिंह जैन : थैकयू । डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं बजट पर मजीद बोलने से पहले अपने मुख्य मंत्री जी का तमाम ट्रेडिग कम्यूनिटी की तरफ से शुक्रिया अदा करता हूं कारण कि पिछली दफा जब हाउस मे सेल्ज टैक्स से बारे मे बिल आया तो मैंने कुछ आपत्तियां उठाई थी और मेरे मुख्य मंत्री जी ने अश्योरैंस दी थी कि ऐसी बातें जिनके बारे में ट्रेडिंग कमयूनिटी समझती हैकि वह उनके साथ ज्यादती है उनको सरकार दूर करेगी । कल हाउस में एक अमैंडिग बिल डिस्ट्रिब्यूट हुआ और उसे जब मैंने पढ़ा तो मुझे खुशी हुई कि हमारे मुख्य मंत्री महोदय ने जो अश्योरैस यहां हाउस में दी थी या हाउस के बाहर जब व्यापारी उनसे मिले और अपनी मुश्किलात उनके सामने रखी और इन्होने

फराखदिली से वायदा किया था आज उस वायदे को पूरा करते हुए सरकार अमैडिग बिल हाउस के सामने लाई है इसके लिए मैं उन्हें बधाई देता हूं और मैं उनका मश्कूर हूं । इसके बाद मैं अपने वित्त मंत्री साहब काभी मश्कूर हूं क्योंकि उन्होने हिसार की डिवैल्पमैंट को तरफ खास तवज्जुह दी है । हिसार ओवर ब्रिज का गवर्नर अभिभाषण में और तक स्पीच दोनों में जिक्र है । वाक्या ही इसकी वहा बड़ी जरूरत थी. हिसार की डिवैल्पमैंट बगैर नामुक्कमल थी. इसी तरह से जुडीशियल कंप्लैक्स, जिसका उदघाटन अभी गर्वनर महोदय करके आए हैं, भी देखने के लायक चीज है । अगर मैं कहूं कि सारे हिन्दुस्तान में मूकाबले काजुडीशियल कंप्लैक्स नहीं है ते शायद गलती पर ने हूं ' मुझे अपने प्रोफैशन वजह से तमाम हिन्दुस्तान में घूमने का मौका मिलता है लेकिन मैंने उस तरह का वैल– डिवाइन्ड, वैल प्लान्ड और वैल कंस्ट्रक्टिड जयूडीशियल कंप्लैक्स कही नहीं देखा तो उसके लिए भी मैं सरकार को मुबारिकबाद देना चाहता हूं । हिसार के लिए वजट स्पीच में डिप्टी साहिबा, एक और चीज का जिक्र भी है और वह यह है कि हिसारके अन्दर रिक्रिएशन के लिए चक्रवर्ती की तरह की एक लेक बनाई जाएगी । इसके लिए भी मैं सरकार को बधाई देता हूं और का मैं मश्कूर हूं । वहां ये मिल्क प्लाट भी बनाने जा रहे हैं, उसके लिए भी मैं सरकार का मश्कूर हूं ।

इसके बाद, डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं चन्द बातें जो बड़ी जरूरी हैं कहना चाहूंगा । तो यह है कि बजट के ऊपर डिसक्रशन करते हुए मेरे दोस्त श्री राम लाल जी ने, जो जनसंघ का मैम्बर हैं, एक बात कही । जब वे बात कह रहे थे, उससे पहले मैं उनकी इज्जत करता या लेकिन उस बात के कहने के बाद मैं सोचने लगा कि या तो वे बजट को समझ नहीं रहे है या फिर वे मिस–स्टेटमैंट आफ फैक्टस कर रहे हैं जो कि जनसंघ वालों की आदत है । दोनो में से कोन सी बात दुरूस्त है यह मुझे पता नही । (विध्न)

Please do not disturb me. When you speak, I do not disturb.

Deputy Speaker : No Interruptions please.

श्री गुलाब सिंह जैन : तो मैंने एक अर्ज करनी है । उन्होंने कहा कि किसी बजट को देखते हुए हमें देखना पड़ता है कि उसका रैवैन्यू कितना है और उस रैवैन्यू की कुलैक्शन और रियालाइशन में परसैंटज आफ एकसपेडींचर क्या सैं क्योकि बजट का एक का सूत्र है कि सरकार अगर ऐसा टैक्स लगाए जिसकी कुलैक्शन में वहुत ज्यादा खर्च आए वह टैक्स लगाया नही जाना चाहिए । यह एक असूल है औंर इस असूल को हमको देखना पडता थै । एक साहब ने एक दो परटीकुलर आइटम्ज का जिक्र करके यहां कहा कि कुलैक्शन पर पचास परसैन्ट खर्चा होता है । डिप्टी स्पीकर साहिबा मैं आपके द्वारा सदन में आकडे रखना

चाहता हूं हमारा जो टोटल बजट है उसके तीन हिस्से होते है । पहला हिस्सा होता है टैक्स रैवैन्यू, दूसरा हिस्सा होता है नान टैक्स रैविन्यू और तीसरा होता है ग्रान्ट इनऐड । जो खर्चा रियलाइजेशन का होता है, टैक्स रैवैन्यू होता है । ग्रान्ट इन ऐड और नाल–टैक्स रैवैन्यू पर नहीं होता । हमारा टैक्स लाख 90 करोड़ और 56 लाख हँ । इसमें से अगर हम वह आइटम जो 9 करोड़ और 46 रैवेन्यू 90 रुपये की है, वह घटा दे, जो कि हमे सैन्टर से आता है और जिसकी रियलाइजेशन हरियाणा सरकार को कोई खर्चा नहीं करना पड़ता तो हमारा कुलैक्शन पर केवल दो करोड़ और 78 लाख रुपया रह जाता है यह 35 परसैन्ट बनता है

डिप्टी स्पीकर साहिबा जो हमारे अपने एक्साइज एन्ड टैक्सैशन मिनिस्टर है उनको मुबारिकबाद देना चाहता हूं क्योंकि हरियाणा का टैक्य रैवैन्यू का एक बड़ा हिस्सा एक्साइज ड्यूटी और सेल्ज टैक्स से आता है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, अगर मैं यह अर्ज करूं कि एक्सपाइज ड्यूटी को कुलैक्शन का एक्सपैडीचर इतना कम है जो कहीं भी नहीं है तो गलत नहीं होगा । मैं खुद उसकी परसैन्टेज निकाली है । मैं तो देख कर हैरान हुआ कि 15 करोड़ 50 लाख रुपया आता है श्रौर जो खर्चा होता है वह उस पर 2 लाख 72 हजार रुपए है । यह खर्चा 0.8 परसैन्ट बनता है यानी एक परसैन्ट से भी कम है डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैंने दूसरी स्टेट के बजट भी देखे हैं और मुझे सैन्टर गर्वनमैट का बजट

स्टडी करने का भी मौका मिला है इतने लो एक्सपैसींज, इतने कम रियलाइजेशन एक्सपैशनसीज आज तक कही भी हिन्दुस्तान की किसी स्टेट में नहीं हैं । डिप्टी स्पीकर साहिबा, हमारे सेत्ज टैक्स का जा कुलैक्शन एक्सपैक्ट करते हैं वह 32 करोड़ है और उसके अगेन्सट में जो उसकी कुलैक्शन पर एक्सपैनसीज है वे केवल 65 लाख है । कितने कम हैं यानी दो परसैन्ट है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, यह कहना कि हरियाणा के अन्दर जो टैक्स. लगाये जा रहैं है वे बहुत ज्यादा हैं और उनकी कुलैक्शन पर जो खर्च किया जा रहा है वह बहुत ज्यादा है । यह गलत है । दरअसल क्या वजह है? जिन्होने यहां पर लैन्ड रैवैन्यू का जो जिक्र किया है उनका अगर इस बात का नालेज नही है तो मैं आपके जरिए उन दोस्तों को बताना चाहता हूं कि लैन्ड रेविन्यु का जो खर्चा है वह कुलैक्शन का खर्चा नही है, दरअसल लैन्ड रैवैन्यू डिपार्टमेंट मल्टीफीरियस काम करता बै । उसका जो मैन फंक्शन है वह लैन्ड रैवैन्यू रिकार्ड ठीक रखने के लिए होता है । उसका काम कोई टैक्स वसूल करना नहीं है । उसका काम तो कुरैक्ट लैन्ड रिकार्ड मेनटेन करना है । वह जो भी खर्चा है वह कोई टेक्स कुलैक्शन का नही ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं यह बात अर्ज करना चाहता हूं जो कि यहां हाउस में बोलते हुए, मेरे एक माननीय सदस्य चौधरी चान्द राम जी ने कही । मुझे उनकी जात से कोई शिकायत । नहीं, कभी मेरा उनके साथ ज्यादा वास्ता नही रहा ।

कुछ असूल की बातें उन्होंने कहीं और, असूलन ही मैं कहना चाहता हूं उन्होंने कहा कि अगर काग्रेस पार्टी को हरिजन स्पोर्ट न करे तो रह ही क्या जाता है । मैं यह कहता हूं कि अगर हरिजनों को कांग्रेस स्पोट न करे तो हरिजनो के पास है क्या? आज हरिजनों की जो पोजीशन है वह कांग्रेस की वजह से ही है । सर्दियो से ये लोग दबे हुए थे । ब्राह्मणो ने इनको उठने नहीं दिया । आज भी अगर वे उन्हें नही उठाने दें तो फिर उनकी क्या हालत हो? अगर उनके लिए महात्मा गाधी जी ने आवाज नहीं उठाया होती और काग्रेस पार्टी ने आवाज न उठायी होती तो मैं यह दावे के साथ कहना चाहता हूं जो। मेरे दोस्त उधर बैठे हुए हैं, जो बढ़–चढ़ कर हरियाणा की बहबूदी की बातें करते हैं, उन्हें चौलेन्ज करता हूं वे कुछ नहीं कर सकते थे । सब से पहले हिग्दुस्तान में आज के युग से जिस शख्स ने हरिजनों के हक में जबान खोलने का साहस किया था वह कोई हरिजन नही था, बह स्वामी दयानन्द था जो कि एक ब्राङण कुल में पैदा हुआ था । उन्होने हिम्मत की और उन्होंने रुब्लणिज्य के खिलाफ आवाज उठायी थी । डिप्टी स्पीकर साहिबा आपको भी पता है इसी तरह से लार्ड महाबीर ने आवाज उठायी थी, लार्ड बुद्धा ने आवाज उठायी थी और आचार्य शकराचार्य ने उनको हिन्दुस्तान से बाहर फेका । सिर्फ जैनिज्म हिन्दुस्तान में रहा वह भी ब्राह्मणिजम का लवादा ओढ़ कर रहा । मुझे यह कहने में ताम्मुल नहीं कि अगर कोई दूमरी शख्सीयत थी जिन्होंने हरिजनों के लिए अपनी जान को बाजी लगायी वे थे महात्मा गान्धी । अगर कोई पार्टी है जो

हरिजनों की भलाई चाहती है वह केवल कांग्रेस पार्टी ही है । मैं एक बात अर्ज करना चाहता हूं कि उनके वे दिन न रहें अगर हिन्दुस्तान में कांग्रेस के अलावा किसी और पार्टी का राज हो । मैं अपने काबिल दोस्त से यह पूछना चाहता हूं कि वे किस पार्टी का राज चाहते हैं । क्या वे कांग्रेस के अलावा जनसंघ का राज चाहते हैं । अगर कांग्रेस पार्टी का राज न रहे, क्योंकि डैमोक्रेटिक गवर्नमैंट बदलती रहती हैं । क्या वे मेरे दोस्त जनसघ का राज चाहते हैं जिसको मैं ब्राह्मण पार्टी मानता हूं । मेरे एक दोस्त हैं जो कलकत्ता मे वकील है । वे बड़े जनसंघी हँ । मैंने उनसे पूछा कि बम्बई स्टेट में जहां पूना में जनसंघ का हैडक्वार्टर है, जहां पर दस हजार ट्रेन्ड वरकर्ज हैं और कलेम करते है कि हमारी बड़ी ताकत है फिर भी आप वहां इलैक्शन में हार जाते है उसका क्या कारण है? उन्होने वडा ईमानदाराना जवाब दिया कि हम इसलिए हारते हैं कि वहां पर हमें एक ब्राह्मण पार्टी समझा जाता है और जो नान–ब्राह्मण है वे हमें वोट नही देते हैं । अगर इसके बाद ऐसा हो कि देश में कभी इस पार्टी की हकूमत बने, तो मैं अपने दोस्त को बतला देना चाहता हूं कि उनका इस हकूमत मे हरिजनो के साथ इतना गलत ट्रीटमैट होगा जिसके बारे में ब्यान नहीं जा सकता है । जो पिछड़े हुए लोग हैं, जो गरीब लोग हैं, क्या वे राइटिस्ट पार्टी उनका भला कर सकेगी? क्या बी० के० डी ० पार्टी, स्वतन्त्र पार्टी उनकी मदद कर सकती हैं और दूसरी आल इंडिया पार्टी है कम्युनिस्ट । क्या आप उनका राज चाहते हैं । वे यह कहने की साफ तौर पर हिम्मत करें । डिप्टी स्पीकर साहिबा,

जो भाई दूसरे देशों से हो कर आये हैं उन्होंने डैमोक्रेटिक वे आफ लाइफ को देखा कब और टोटेलीटेरियन सिस्टम आफ गवर्नमैंट का भी अनुभव होगा । हमारे यहां तो वे आफ लाइफ डैमोक्रेटिक सिस्टम आफ गवर्नमैंट है । कांग्रेस पार्टी से कोई और बढिया पार्टी हो नही सकती है । हरिजनों का जितना कांग्रेस पार्टी ख्याल रखती है उतना कोई ख्याल मार्ग रखता हैं । जैसा कि हमारे मुख्य मंत्री साहब ने हाउस में बोलते हुए कहा था कि श्रीमती इंदिरा गान्धी से ज्यादा और कोई भी हरिजनों का इतना भला चाहने वाला नही हो सकता । मै यह कहने मैं तामुल नहीं करता कि हरियाणा के मुख्य मंत्री जी का हरिजनों की तरफ गरीबो की तरफ जितना ध्यान है और किसी का हो नहीं सकता । हरियाणा सरकार की जब वे से चौधरी बंसी लाल के हाथ में बागडोर आयी है तब से उन्होंने हरिजनों को काफी ऊंचा उठाया 'है । अगर यह कहा जाये कि जो कदम उठाये हैं वे थोड़े हँ तो मैं' मान सकता हूं । कोन–कौन सी ऐसी जातियां है जिनको कितनी ही सदियों से हजारों सालों से ऊपर नही उठने दिया गया, वे अपने हको से वंचित रहे । ऐसी जातियों को ऊपर उठाने में समय लगता है उनके लिए जितना भी किया जाये थोड़ा है । मुझे कोई इतराज नहीं है लेकिन यह कहना कि चीफ मिनिस्टर साहब का इधर ख्याल ही नही है, मैं इस बात को बिल्कुल मानने के लिए तैयार नही हूं ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, किसी भी जाति को उठाने के लिए सब से पहले उसकी तालीम की तरफ ध्यान रखा जाता है । वह बहुत जरूरी है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं आपके द्वारा सदन को बतलाना चाहता हूं कि जब से यह सरकार आयी है तब से तालीम का खास ख्याल रखा गज है । सैझल गवर्नमैंट ने होस्टल में दाखिल होने वाले हरिजनों के लिए स्कालिरशिप रखा, लेकिन हमारी सरकार ने उसको कम समझा । हमारी सरकार ने 15 रुपये महीना देना शुरू कर दिया । जहां तक फीस माफी का सम्बन्ध है वह भी सर्भा हरिजनों को लाभ हो चा है । आज हमारे हरिजन भाई वी ० ए ० और एम ० ए ० कर चे हैं । जब मै पड़ता था तो मेरी क्लास में केवल एक हरिजन लड़का होता था । कोई भी उसके साथ नहीं बैठता था एक बेच हाता था योर उस पर दो सीटें होती थी । मुझे गर्व है कि वह मेरे साथ ही बैठता था, वह मेरे बैन्च पर बैठा करता था क्योंकि वह भी गरीब था और मैं भी गरीब था । जो आज गुलाब सिंह है यह उस वक्त नहीं था जो आज है । शायद उन लोगों ने जिन्दगी में गरीबी देखी हो लेकिन मैंने गरीबी को चखा है । मुझे पता है कि गुरबत क्या होती है, मुझे पता कि गुरबत में क्या तकलीफ होती है । मेरी उन दोस्तों के साथ पूरी सहानुभूति है जो गरीब की भलाई की बातें करते हैं और हरिजनों को भलाई की बातें करते हैं । मुझे उनसे पूरी पूरी सहानुभूति है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, यहां पर भंहगाई के बारे में भी जिक्र किया । मैं मानता हूं कि देश में मंहगाई है ।. (व्यवधान).

चौधरी प्रताप सिह दौलता : डिप्टी स्पीकर साहिबा, गुलाब सिंह जी किसी की स्पीच में इप्ट्रप्ट नहीं करते हैं इसलिए इनकी स्पीच में यदि कोई इस्ट्रप्ट करे तो इन्हें और टाईम मिलना चाहिये । ये जनसंघ वाले साथी इनको इन्ट्रप्ट करते रहते हैं ।

Deputy Speaker : Order please. No interruptions. Please take your seat.

श्री गुलाब सिंह जैन : डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं यह कह रहा था कि यहां पर मंत्री का जिक्र किया गया । मैं मानता हूं कि देश में मंहगाई है और मंहगाई को हटाया जाना भी वहुत जरूरी है । हम प्रोडक्शन के आंकड़े देखें कि 1947 में जब देश आजाद हुआ, उस वक्त देश में प्रोडक्शन की पोजीशन क्या थी और आज प्रोडक्शन की क्या पोजीशन है । अगर मैं वह आबाडे बतलाने लगू तो उनसे यह नज्र आयेगा कि देश में बहुत तरक्की हुई है इस तरक्की के दौरान जहां हमने प्रोडक्शन को बढ़ाया है दही उसके साथ–साथ इनफ्रा–सट्रक्चर को भी रंदा किया है । हमारे देश की पापुलेशन वढती जा रही है । हमने फैमिली पलानिंग की तरफ भी ध्यान दिया । मुझे कह दाहने में के।इा हिचकिचाहट नहीं है कि परसुएशन से फैमिली प्लानिंग होने वा ली नहीं है । जो सोशल रिफार्मर होते हैं वे किसी देश में किसी गवर्नमैंट के हाथे मजबूत करने के लिये एक माहौल पैदा करते हैं ताकि सरकार स्ट्रोन्ग ऐक्शन ले सके । फैमिली प्लानिंग के प्रोपेगन्डे के जरिये आज यह माहौल है कि हर आदमी इस बात

को समझता है कि फैमिलीय्लार्निंग होनी चाहियें । मेरा इस बारे में यह सुझाव है कि इसे कानूनन लागू करना चाहिये । जव तक फैमिली–प्लानिंग को कानूनन लागू नहीं करेंगें या इसके रियि कोई कानून नहीं बनेगा, तब तक यह पापुलेशन की जो ऐक्सपलोजन है, वह रुकने वाली नही है । अगर पापुत्रे छान कर ऐ क्सप्लोजन नहीं रुकती हँ तो हम चाहे कितने भी प्रोडक्शन बढ़ाते जायें उसका कोई फायदा नहीं होगा । हमारी प्रोडक्शन अगर उस प्रोपोरशन से नहीं बढ़ती है जिस प्रोपोरशन से पापुलेशन बढती जा रही है तो मंहगाई बढती जायेगी, इसलिये इस ओर खास ध्यान दिया –गाना चाहिये ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं एक और प्लैलीकेट सच्चौक्ट टच करना चाहना हूं । जो आज देश में आथिंक संकट नजर आता है उसकी वजह सट्राईक भी है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं यह मानता हूं कि लेवर का स्ट्राईक करने का राईट है । मैं उनको इस राईट से वंचित नहीं करना चाहता । लेकिन हमें यह देखना चाहिए कि जिस वक्त ये ट्रेड–यूनियनें वनी और लेबर को स्ट्राईक का हक दिया गया उस वक्त उसके पीछे रीजन क्या ढ़ग था । As against captalists, unorganised labour is weak. उस वक्त यह रीजन था कि जस कैपिटलिस्ट की ऐ क्सप्त्रायटेशन से लेबर को बचाने के त्ग्यए लेवर जो हो, वह आर्गेनाइज्ड हो मैं इस प्रिंसीपल को मानता हूं। लेकिन आज इस देश जै अन्दर हालात क्या है? हालांकि काग्रेस पार्टी की अन्मनी पालिसी लेबर के फेवर में है

काग्रेस पार्टी आज देश से गरीवी को दूर ण्रना चाहती लूँ सोशलिस्टिक पं टर्न लाना चावृती है, क्लासलैस सोसाढटी क्रिकेट करना दाहती है तो क्या वजह है आज स्ट्राईकस करायी जा रही हैं । डिप्टी स्पीकर साहिबा, जप जानते हैं कि लेबर के फायदे की जो बात है, वह गवर्नमैंट खुद सोचती है । डिप्टी सीकर साहिबा, सारे देश की जो पापुलेशन है वह लरज 550 मिलियन है और इसका 80 प्रति– शत हिस्सा देहात में रहता है । आपको पता है कि देहाती स्ट्राईक क्ग्रता नहीं है, हमारी जो फार्म लेबर है, वह भी स्ट्राईक नही करती । आज हमारे यहां जो गवन मैट में, चाहे पब्लिक सैक्टर में हों या प्राइवेट सैक्टर में हो, कुल मिलाकर जो ऐम्पलाईज हँ, वे 18 मिलियन हैं इन 18 मिलियन ऐम्पलाईज के दायरे के अम्बर ही ये सारी गड़बड़ होती है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, आज सीमेंट की कमी होती है । किस लिये? इसलिये या तो सीमेंट की फैक्ट्रीज मे स्ट्राईक की वक्ह से प्रोडक्शन कम होती है या फिर रेलवे में स्ट्राईक होने की वजह से माल पहूचता नहीं हँ । आज वैजीटेबल भी की भी यही पोजीशन बनती जा रही है दु:ख उस वक्त है जब हमारी मेजर पब्लिक यृटेलिटी सर्विसिज के अन्दर स्ट्राईक होती है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं आपको 1971 के आकड़े बताना चाहता है कि कितना ग्रौस नैशनल लास हुआ है रन अन–नेरुंसरी स्ट्राईकस की वजह से । हमारे 12,07,50, 244 वर्किन्ग डेज वेस्ट हुए हैं अगर इन वर्किन्ग डेज को प्रोडक्शन के हिसाब से देखा जाये तो यह पता चलेगा कि कितना बडा प्रोडक्शन सं लास हुआ है । इससे आप अन्दाजा लगा सकते हैं

कि इससे देश को क्तिना नुकसान उठाना पड़ रहा है । आज जब देश में रेलवे में या किसी दूसरी जगह स्ट्राईक होती है मे उससे जो डेज लास होते हैं, उसका इफैक्ट ओवर–अम्ल हमारी प्रोडक्शन पर पडता है । से लोगों तक कोल नहीं पहुंचता । फैक्ट्रीज तक नेसैसरी रा–मैटीरियल नहीं पहुंचता जिसकी वजह ले लोगों तक फिनीशड गुड्ज नहीं पहुंचती । इसका इस प्रकार से दो तरफा नुक्सान है । मैं आपके द्वारा यह अर्ज करूंगा कि हरियाणा सरकार को इसके बारे में कोई रास्ता दिखाना चाहिए । मैं मजदूर के खिलाफ नहीं हूं । मैं सरकारी मुलाजिम के भी खिलाफ नहीं हूं । मेरी यह क्न्यीक्शन है डिप्टी स्पीकर साहिबा, आज जो सट्राईक्स होती हैं, इनकी बैंक मे कुछ और ही चीज है । वह मजदूर की भलाई को बात नहीं है । मैं स्ट्राईक्स और लाक–आउटस दोनों के ही खिलाफ हूं। खाली स्ट्राईक के ही नही, वाक–आउट के भी खिलाफ हूं । हमें कोई ऐसा रास्ता निकालना पड़ेगा जिसके द्वारा हम स्ट्राईक्स को आगे के लिये बन्द कर सके । मैं चाहता हूं कि कम से कम हम उन लोगों को परसुऐशन से स्ट्राईक्स से हटायें जो स्ट्राइक्स की तरफ जाते है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, एक चीज मैं और अर्ज करना चाहता हूं । हमारे, यहां हिन्दुस्तान में तीन–चार बड़ी ट्रेड यूनियनें हैं, वे हैं इंडियन– नैशनल ट्रेड यूनियन काग्रेस, आल इंडिया ट्रेड यूनियन काग्रेस, हिन्द मजदूर सभा और यूनाइटिड ट्रेड यूनियन कांग्रेस । इनकी अपनी ही इन्टरनल पौलिटिक्स की वजह से कितनी ही जगहों पर स्ट्राईक्स होती है और उसका रिजल्ट यह होता है कि देश का नुक्सान

होता हूँ । वे नैशनल इट्रैस्ट में नहीं की जाती, वे मजदूर के इट्रैस्ट में भी नहीं होती, जो स्ट्राईक्स होतीं है, उनके पीछे मुद्दा कुछ और ही होता है । इसलिये इस के बारे में हमें कुछ इफैक्टिव स्टैप्स लेने पड़ेंगे । जो मजदूर की जायज मांग है, जो मजदूरों की बेहतरी की बात है, जौ मुलाजिमों की बेहतरी की बात है, उसको सरकार के द्वारा ही किया जाना चाहिये । कल कुछ भाई मेरे से मिलने आये थे । अगर हम लैजिस्लेटज उनकी जायज तकलीफ को दूर नहीं करते हैं तो हमें ऐग्जीस करने का कोई राईट नहीं है, हमें स्टैड करने का कोई राईट नहीं है । We should be of use to all right persons to vindicate their right purposes. डिप्टी स्पीकर साहिबा, यहां पर सरकारी मुलाजिमों की बात कही गयी ।

उपाध्यक्षाः गुलाब सिंह जी, आप जरा जल्दी वाईन्ड अश्व करने की कोशिश करें ।

श्री गुलाब सिंह जैन : डिप्टी स्पीकर साहिबा, आपने मुझे आधे घंटे का टाईम दियां है, मैं आधे घंटेसे ज्यादा नही लूगा । मैं सरकारी मुलाजिमों के बारे में कह रहा था । मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारी सरकार सरकारी मुलाजिमों को तकलीफों को बहुत अच्छी तरह से समझती है । इस महंगाई के जमाने में उनकी जो तकलीफे हैं, वे सरकार सब समझती there are hardest hit अर्थ–शास्त्र का एक प्रिसीपल है और वह यह है कि जब कीमते ऊंची ती हैं तो जो फिक्सड इन्कम ग्रुप है, उनको सबसे ज्यादा

तकलीफ होती है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं आपके द्वारा सरकार से यह अर्ज करना चाहता हूं कि आप इन–टर्मर्ज आफ करेन्सी उनकी चाहे कितनी भी बढ़ाते म्बे, उनके मसले का हल नहीं निकलेगा. मैं सरकार को यह सुझाव देना चाहता हूं कि आपने अगर सरकारी मुलाजिमों को खुशहाल करना है, उन्हे खुश रखना है तो आप इन–टम्ज आफ कमोडिटीज उनकी पे का कोई हिसाब बनायें । ऐसा करना एक बड़ी अच्छी बात होगी । डिप्टी स्पीशर साहिबा, मैं. एक बात इलैस्ट्रिसिटी के बारे में भी कहना चाहता हूं । हमारे यहां जो इलैक्ट्रिसिटी की कन्जम्पशन का अनुमान लगाया गया है उसका बजट में. जिक्र है और वह 450 मेगावाट का है । अब तक हम जो जराये पैदा कर पाये हैं और जिनका इस बजट में भी जिक्र किया गया है, उनके मुताबिक हमारे जो प्रैजेंट रिसोर्सिज हैं वे 232 मैगावाट के हैं ओर उन के अलावा फरीदाबाद, पानीपत और वैस्टर्न जमुला कैनाल से जो हम विजली पैदा करने जा रहे है इस. सब को मिला कर टोटल 617 मैगावाट बनती हँ । मैं सरकार को आपके द्वारा यह सुझाव देना चाहता हूं कि आम तौर परे बिजली की खपत का जो अनमान लगाया जाता है, उसके मुकाबले में बिजली की डिमान्ड बहुत तेजी से बढती है । आप जानते हैं हरियाणा के अन्दर ला एण्ड आर्डर बहुत बढ़िया है । आज हरियाणा सरकार का तमाम देश के अन्दर यह इमेज है कि यहा पर ला एण्ड आर्डर बहुत ही बढ़िया है । इसलिये हरेक इडस्ट्रियलिस्ट हरियाणा में आकर इंडस्ट्री लगाना चाहता है । इडस्ट्री लगाने के लिये इलैक्ट्रिसिटी का होना सबसे पहली चीज

है जिसकी उसे जरूरत पड़ती है । इसलिये मैं आपकी मार्फत सरकार से यह अर्ज करना चाहता हूं कि उन्होने जो 617 मेगावाट तक बिजली उपलब्ध करने का अन्दाजा लगाया है, उसको किसी न किसी तरीके से बढा कर एक हजार मैगावाट तक ले जाने के लिये प्रोविजन प्रोवाईड करें तब ही हरियाणा पहले हिन्दुस्तान का और फिर दुनिया का एक अहमतरीन प्रदेश बन सकता है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, तालीम के बारे में मैं एक बात कहना चाहता हूं वैसे तो जो तालीम के बारे में रजोल्यूशन चल रहा है उस पर बोलने का जब मौका मिलेगा तो मैं डिटेल में बोलूगा, इस वक्त एक ही बात कहना चाहता हूं कि तालीम की क्वालिटी बढ़नी चाहिए । सरकार ने यह ठीक कदम उठाया है जो उसने अपग्रेडिंग अउफ स्कूल बंद किया है और ज्यादा नए स्कूल खोलना बंद किया हूँ । तालीम के फील्ड में जो कुछ काम किया गया है उसी को सालिड करना है । तालीम के बारे में आगे जो कुछ सरकार करे वह सिर्फ इतना करे कि उसकी क्वालिटी को इम्प्रूव कर और यह करना बहुत जरूरी है । अब मैं चन्द बातें अपनी कांस्टीचूएसी वो बारेमें कहना चाहता हूं । डिप्टी स्पीकर साहिबा, .इरीगेशन के वारे में हमारी सरकार का खास ध्यान वै । हरियाणा एक कृषि प्रधान देश हे इसमें कोई दो राय नही हो सकती । सरकार ने लिफ्ट इरीगेशन स्कीम बनाकर वह काम किया है ऐसी जगह पर पानी पहुंचाया है जिनके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था । पांच–पांच सौ फुट ऊंचा पानी पहुंचाया है, यह सरकार का बड़ा सराहनीय काम है । मेरे हल्के में तीन ऐसे इलाके हैं जहां लिफ्ट

इरीगेशन के बगैर पानी नही पहुंच सकता । काफी एरिया हिसार प्रापर, जुगलान और एक गांव हँ शाहपुर । मे री गुजारिश है कि इन इलाकों के अन्दर पानी पहुचाने के लिए छोटी–छोटी इरीगेशन स्कीभें चालू की जाए । इसके अलावा पीने के पानी का जिक्र आया । डिप्टी स्पीकर साहिबा, मेरे हल्के में खासतौर पर दो गांव ऐ से हैं जहा पीने के पानी की बड़ी तकलीफ है और 1974– 75 के साल मैं मैं सरकार सें गुजारिश करुंगा कि एक गांव तलवंडी राना है और दूसरा गाव गंगूआ है वहां पर जटर वर्कस लगाया जाए और लोगों के लिए पीने के पानी का इन्तजाम किया जाए । कुछ नहरो पर पुलों और ब्रिज बनाने का जिक्र आया है । मैं इसके बारे में भी अर्ज करना चाहताहूं । डिप्टी स्पीकर साहिबा, आप जानती होगी कि हिसार का पशुओं का मेला हिन्दुस्तान भर में मशहूर है । जहां यह मेला लगता है उस जगह का नाम सात रोड खूद है । यह जगह वैस्टने जमुना कैनाल की तरफ आती है । जो लोग अपने डंगरों को लेकर आते है वे वैस्टर्न जमुना नहर को पार करते आते हैं क्योंकि अगर वे लोग नहर में से पशु गुजारते लाएं तो वह जगह जहा मेला लगता है, नजदीक पड़ती है । इसलिए मेरी प्रार्थना है कि वहा पर एक पुल जरूर बनाया जाए । इसके अलावा कुछ और जगह जैसे बरवाला मेन कैनाल है वहां अगर बड़े पुल न वनाए जाएं तो बहा पर घोड़ा रुलिया जरूर बनाई जाएं । टूरिज्म की बाबत मैं एक बात कहना चाहता बेर कि हिसार के अन्दर एक डीयर पार्क है उरुको एक्सटेंड किसी जाए किसी जबने मे यह जगह लखाडार के नाम से मशहूर थी । राहा

जाता है कि वह बहुत हिरन रहते थे और जब दे गुजरते थे ले रास्ता बन्द हो जाता था क्योंकि हिरनों की बाबत कहा जाता है कि एक हिरन जिधर को चल देता है उसी तरफ को सारे हिरन चल देते हैं । आजकल तो वहां हिरन नहीं है लेकिन वह जगह उनके नाम से मशहूर है । इसलिए मेरी गुजारिश है कि इस डीबर पार्क को एक्सटैड किया जाए । इन शब्दो के साथ मैं अपनी स्पीच खत्म करता हूं ।

श्री फतेह सिंह (जुलाना) : डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं आपका बहुत आभारी हूं कि आपने मुझे समय दिया ।

श्री अमर सिंह : आन ए प्वायंट आफ आर्डर, डिप्टी स्पीकर साहिबा, क्या वित्त मंत्री महोदय के बोलने से पहले मुझे टाईम मिलेगा या नहीं?

Deputy Speaker : This is no point of order. I will see and if there is time you will he given time to speak.

श्री अमर सिंह : आश्वासन तो दे दे. ।

उपाध्यक्षा : मैं आश्वासन अभी कैसे दे सकती हूं ।

श्री फतेह सिंह : डिप्टी स्पीकर सहिबा, 1974– 75 के वजट पर बहस हो रही है इसके बारे में मैं भी कुछ कहना चाहता हूं । वैसे तो मेरे साथियों ऐं इसके बारे में बहुत कुछ रोशनी डाल दी है लेकिन फिर भी मैं कुछ बातों को ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहुंगा । हमारी गवर्नमैंट ने जो यह बजट बनाया

है यह बड़ा ही सराहने योग्य है । हमारे फाईनेस डिपार्टमैंट ने हर पहलू पर गौर करके, विचार करके, हरियाणा के हित को ध्यान में रखते हुए बडा मेहनत के साथ यह बजट तैयार किया है । इसकी जितनी भी ज्यादा तारीक की जाए वह थोड़ी है । हमारे बिरोधी भाईयों ने कुछ बातें नुक्ताचीनी कैं लिए कही उनके मुताल्लिक खासतौर से जिला जींद के बारे में चौधरी धज्जा राम ने चौधरी दल सिंह की बाबत बता दी हैं । मैं तो सिर्फ इतना ही कहूंगा. कि चौधरी दल सिंह को तीन महीने के लिए गवर्नमैंट में मिनिस्टर रहने का मौका मिला था । उस वक्त ' इन्होने न हरियाणा के लिए औरर न ही जिला जीद के लिए कुछ डिवैल्पमैंट का काभ क्रिया ये जिस तरह भोले–भाले जमीदारों को गल्तफहमी में डालते हैं, जिस तरीके से बरगलाते हैं, वह बड़ा ही खराब है । मैं कोई नुक्ताचीनी नहीं करता लेकिन इस सदन के अन्दर हरेक एम 0 एल 0 ए 0 के सामने लिखा हुआ है कि झूठ बोलना बहुत बड़ा पाप है इसलिए कुछ भाई जो यहां पर झूठ बोलते हैं उनको झूठ नहीं बोलना चाहिए । हरियाणा सरकार ने जो काम किए हैं वे छिपाए नहीं जा सकते । आप 1968 से पहले के हरियाणा को ले लें और आज के हरियाणा को देखें । जमीन और आसमान का अन्तर है । इसकी जितनी तारीफ करें वह थोड़ी है । इस सरकार से पहले न सडके थीं, न नहरें थीं और न ही अस्पतालो का कोई इन्तजाम था और खास तौर से हमारा जिला जींद तो इतना पिछडा हुआ था कि जिसका अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता क्योंकि जो जींद का महाराजा था उसके जमाने में कोई डिवैल्पमैंट का काम नहीं हुआ,

उसके बाद हम पैपसु में इग्नोर होते रहे और फिर ज्वायंट पंजाब में इग्नोर रहे और कुछ हमारी भी बदकिस्मती रही कि दल सिंह जैसे लीडर रहे जिन्होंने डिवैल्पमैंट की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया । डिप्टी स्पीकर साहिबा, जब इस सरकार ने हमारे इलाके में कुछ काम किए हैं तब बहां के लोगों को महसूस हुआ है कि असली मायने में आजादी अब आई है । अब मैं चन्द तकलीफें जो हमारे इलाके के लोगों को है उनका जिक्र करूंगा लेकिन इससे पहले मैं यह जरूर कहूंगा कि इस सदन के अन्दर आदमी को थोड़ा बहुत झूठ बोलने से कतराना चाहिए । डिप्टी स्पीकर साहिबा, जब अनाज का संघर्ष चला उस वक्त चौधरी दल सिंह ने लोगों को बहुत वरगलाया, लोगों से नेम करवाया कि मंडी में कोई आदमी सरकार को अनाज देने के लिए न ले जाए, मगर जब अनाज मडियो में आने लगा तो इसके एजेंटों द्वारा प्रचार किया गया कि जो भी ले जाए वह दल सिंह की दुकान पर ले जाए । हमारे लोगों से 50–60 हजार रुपया इक्ट्ठा किया । इन्होने अपना प्रोपैगन्डा करवाया कि दल सिंह ने जमींदारों के लिए यह किया वह किया । मैं कहता हूं कि इनके दिल में किसी की सेवा की भावना नहीं है ये तो भोले–भाले लोगों को गल्त रास्ते पर डालते हैं । जब टीचरो की हड़ताल चल रही थी तो उस वक्त भी इन्होने बच्चों के मां बाप से नेम करवाया कि वे अपने बच्चों को स्कूल में न भेजें –

Deputy Speaker ; Please do not be personal and speak on the Budget.

श्री फतेह सिंह : मैं तो यह बता रहा हूं कि वे क्या करते चे हैं । टीचरों की जव हडताल चल रही थी तो भोले–भाले बच्चों के वालदेन से नेम ले लिया और अपनी घरवाली को जो टीचर है 18 तारीख को स्कूल भिजवा दिया और कह दिया कि हड़ताल पर न जाना ।

12.00 बजे

Chaudhri Partap Singh Daulta ; On a point of order, Madam. Can a .conduct of an opposition. M. L. A. be the subject matter of . discussion the way in which it is being done ?

Deputy Speaker ; It is not the subject matter for him. He is just mentioning something. But I have already checked hi that he should not be personal and that he should speak on Budget.

The hon. member may please continue his speech and speak on 'the Budget.

श्री फतेह सिंह : डिप्टी स्पीकर साहिबी, मैं यह बिल्कुल फैक्ट्स बता रहा हूं गलत बात नहीं कही जा रही है । भोलेभाले जमींदारों को बहका कर अपना उललू सीधा करते रहे। दूसरी तरफ अपनी औरत से यह लिखवा कर दे दिया कि हड़ताल न करो और दूसरे लोगो को अपना उल्लू सीधा करने के लिये बहकाते न्हे । डिपटी स्पीकर साहिबा, मे रा कहने का मतलब यह है कि ऐसी ऐसी गल्त बातें तो ये लोग खु द करेसे रहे और सरकार का नाम

यू ही बदनाम करने को कोशिश कर रहे हैं –शोर– तो डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं कुछ अपने हल्के के मुताल्लिक यहां पर जिक्र करना चाहता हूं कि जुलाना एरिया जो है वह बहुत ही ड्राई एरिया है वहां 80, 70 हाथ के करीब पीने का जो पानी है, वह खारी है, तो आपके द्वारा सरकार से प्रार्थना करूंगा कि जिन गांवों में पीने का पानी नहीं है जैसे कमाचखेडा, करेला, झमोला, किरसोला गढ़वाली तथा खेड़ा बख्ता वगैरह–वगैरह, इन गांवो की एक बैल्ट सी बनाकर पीने के लिये मीठा पानी मुहैया किया जाए । इसके' साथ साथ जुलाना के लिये मैं कुछेक बातें और कहना चाहतीं हूं कि यह एक सब डिविजन बन गया है, एस ० डी ० ओ ' (सिवल), एस ० डी० ओ 0 नहर तथा बिजली बी एण्ड आर, पी ० डब्ल्यू० डी ० वहां है लेकिन वहां पर न ही दफतर है, और न ही कर्मचारियो के रहने के लिये कोई क्वार्टज हैं, तो इस तरफ मैं चाहूंगा कि सरकार पूरा–पूरा ध्यान दे और जुलाना ए क सैन्ट्रल ब्लेस है, ' वहां पर मन्डी भी है । इसके साथ यह होगा कि लोगों को हर तरह को सहूलियतें वहीं पर ही मिल जाएंगी । और वहां 'पर कुछ गांव ऐसे है जहां पर सैन्डी एरिया होने के कारण पानी नहीं पहुंचता है, वैसे यह कमाडिड एरिया है, वहां पर पक्के खाल बना दिये जाएं तो इससे जमींदारों को बहुत फायदा होगा । इसके लिये चाहे जमींदारों के ऊपर ही खर्चा क्यों न पडे तब भी वे लोग इस के लिये तैयार हैं । तो सरकार से आपकी मार्फत अपील करूंगा कि इस तरह करने से लोगों को हालत भी सुधरेगी । यह गाव है गतोली, कमाच खेड़ा, दांरड, मालवी, देस खैडा, करेला,

झमोला, किरसोला व झमोला के लिये पक्के खात बना दिए जाएं जिस से 5/6 हजार एकड़ रकबा फालतू आबपाश होगा । इसके साथ साथ बुचाना, बरारखेडा, इगरा और बेबलपुर के बारे मे भी जिक्र करना चाहता हूं । वह बरारखेडा, आर ० डी ० नं ० 4 और 7 के दरमियान से एक सब माईनर निकाल दी जाएं और खालों को पक्का' किया जाए तो इससे काफी फायदा ही सकता है। इसके साथ साथ अगर चाबरी माइनर को एक्सटैन्ड कर दिया जाए तो उससे नुडाना नडानी और पडाना इन गांवों को बहुत फायदा होगा और यह आबपाशी के लिये बहुत मुफीद साबित हो सकता है चीफ मिनिस्टर साहब ने इस बारे में एलाउस भी किया था । बराहे कलां और सुन्दर दूरी पर है गांवों में पक्की खालें बनाई जाएं तभी यहां पर रकबा आबपाशी हो सकेगा । इससे लोगो की पैदावार अधिक होगी । कई गाव ऐ से हैं जहां पर पीने का पानी नही है और दूरी पर है जैसे करेला झमोला, किरसौला व बुडा खेड़ा कई ऐसे गांव हैं, इन गांवों में पीने के पानी का इन्तजाम होना चाहिये । इसलिये यहां पक्के खाल बनाए जाने चाहिये और यहां तक कि इन गौवों के लोग अपने पास से इन सभी का खर्चा देने के लिये तैयार हैं तो मैं आपकी मार्फत सरकार से अपील करूंगा कि शीध्र ही इस तरफ ध्यान दिया जाए । डिप्टी स्पीकर साहिबा, एक मालवी गांव है इसके साथ ही थोड़ी दूर से मालवी माइनर गुजरता है इस गांव का सारा रकबा वैस्ट साइड पर है । इस माइनर पर एक पुल बना दिया जाए, गाँव वालों को बहुत दूर से घूम कर करना पड़ता है तो इसलिये गांव के साथ इस माइनर

पर पुल जरूर बनाया जाए । डिप्टी स्पीकर साहिबा, इसके साथ–साथ कुछ मीर गाँव जैसे अकालगढ, दौरड व कमाच खेड़ा, फतेहगढ, बामन वास इनको सब माइनर से मिलाया जाए, या इनके पक्के खाल बनाकर इनको नहर सुन्दर ब्रीच से आबपाश किया जाये ताकि पैदावार बढाई जा सके । इसी तरह से इगरा और बैवल पुर वगैरह को भी पक्के खाली से आबपाश किया जाए ताकि आबपाश में बढ़ोतरी हो सके । इसके साथ –साथ डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं यहीं पर कुछ सड़कों के बारे में कहना चाहता हूं जोकि बहुत छोटी छोटी सी हैं और अगर इन सड़कों के छोटे–छोटे टूकडो को पुरा कर दिया जाताहै तो जुलाना जो है वह बड़ी रोड से चारों तरफ से मिल जाता है इससे लोगों को आने–जाने में बड़ी सहूलियात होंगी । ये चार सउरके हैं :–

1. जुलाना से भिवानी, को कुनैक्ट करने के लिये देवरड से फरवाना ।

2. जूलाना से गोहाना को कुनैक्ट करने के लिये लजवाना–कलां से रिढाणा यह तो सिर्फ डेढ मील का टुकड़ा है ।

3. जूलाना से सफीदों को कुनैक्ट करने के लिये नन्दगढ से भैरों खेड़ा या लुदाना ।

4. जुलाना से हांसी को कुनैक्ट करने के लिये मालवी से बडछप्पड़ या करेला से ।

तो अगर इन सड़कों को, जिनके छोटे–छोटे टुकडे अभी बनने वाले हैं, बना देने से जुलाना मेन रोड से मिल जाता है इसलिये मैं आपकी मार्फत सरकार से यह पुरजोर अपील करुगा कि इन सड़कों को जल्द से जल बना दिया जाए । यह सारा टुकडा जो बनने वाला होगा वह करीबन ह मील का ही होगा तो इसके लिये सरकार को कोई भारी खर्चा भी नहीं करना पड़ेगा । इससे जुलाना की जो मण्डी है उसको और स्टेट को भी फायदा होगा और साथ में लोगो के आने–जाने के लिये कोई दिक्कत नहीं होगी । (घंटी)

डिप्टी स्पीकर साहिबा, बस मैं एक दो बातों की तरफ सरकार का ध्यान दिलाकर अपना भाषणा खत्म करूंगा । डिप्टी स्पीकर साहिबा, यह जो जुलाना और जींद का एरिया है,. यहां कमाद बहुत होता है, यह कमर्शयल पवांयट आफ व्यू से बहुत अच्छा है । सरकार को चाहिये की वहां की सर्वे करवाये और जींद और बुलाना के अन्दर गन्ने की एक एक मिल लगा दी जाए तो वहां लोगो की कुछ हालत सुधर सकती है और लोगों की भलाई के लिये यह एक अच्छा कदम होगा । इसके साथ साथ आगे मैं यह भी बता देना चाहता हूं कि जींद के साथ–साथ पडारा है, धार्मिक स्थान है टूरिजम विभाग की मारफत वहां पर ऐसी कोई न कोई धार्मिक चीजे बना दीं जाएं तो यह जुलाना और जींद की लोभा के लिये बहुत अच्छी बात होगी । इस से आगे मैं यह भी बतलाना चाहता हूं कि हरिजनों की बहुत सी चौपाले रुकी हुई है

और फायनैन्स कीं वजह से रुकी पडी हैं तो मैं आपके द्वारा सरदार से यह प्रार्थना करता हूं कि हरिजनों की निगम के द्वारा सहायता करवाएं जोकि उन गरीबों के लिये बड़ी लाभदायक बात होगी इसलिये अन्त में मैं फिर इन सारी बातों कॉ तरफ सरकार की तवज्जो दिलाना चाहता हूं कि मैंने यहां पर जो जो सुझाव अपने हल्के के मुताल्लिक रखे हैं, उन पर गम्भीरता के साथ विचार किया जाए और दूसरे कामों से पैसे की बचत करके हमारे इस इलाके को प्रैफरैन्स दी जाए ताकि वहा के रहने वाले गरीब हरिजनों, गरीब किसानों को फायदा हो सके ।

कृषि मन्त्री (चौधरी भजन लाल) : डिप्टी स्पीकर साहिबा, सदन में तीन दिन से बजट पर बहस हो रही है । इसमें बहुत से सदस्यों ने बहुत अच्छे–अच्छे सुझाव भी दिये और दो–तीन माननीय सदस्यों ने कुछ ऐसी बातें भी कहीं जोकि उनकी आदत के मुताबिक है हाउस में कभी घी ये वास को ठीक नहीं कहते । उनमें से चौधरी दल सिंह जी ने खास तौर से यह कहा कि अनाज की समगलिंग हुई और सीड में घपला हुआ है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं आपके द्वारा उनको यह बताना चाहता हूं कि जहां तक सीड का ताल्लुक है भारत सरकार के आदेश के अनुसार कि सर्टीफाइड सीड के ऊपर कोई पाबन्दी नहीं है वह सारे देश के अन्दर जा सकता है, इसमें प्रान्तीय सरकारों का कोई दखल नहीं है, पता नही चौधरी दल सिंह ने कहां से ऐसी वात सुन ली? जहां तक महकमे का ताल्लुक है महकमे ने कोई सीड प्रचेज नहीं

किया । अलबत्ता एग्रीक्लचर यूनिवसिटी का सीड महकमे ने जरुर बेचा है रोकि 160 रुपये के भाव से बेचा गया । लेकिन बाद भै सरकार ने महसूस किया कि यह भाव मंहगा है इसलिये हमने 160 से घटा कर उसे 125 रुपये के हिसाब से बेचा । लेकिन महकमे ने बाहर से सीड मंगवा कर कोई ऐसी बात नहीं की कि जिससे गड़बड़ हुई हो । इसलिये मैं तो यह कहूंगा कि जिस आदमी का जेसा ध्यान होगा, जैसा ख्याल होगा और जैसी विचारधारा होगी वह हर आदमी को वैसा ही समझेगा । ये या तो किसी सबूत के साथ बात कहते लेकिन जिस बात का सिर–पांव ही न हो, वह हाउस में कह ही जाए तो किसी का मूंह तो पकड़ा नहीं जा सकता । लेकिन इन्होंने हाउस में गल्ल बात कही कि हमने सीड देने में घपला किया । हमने सीड उनको दिया है जिनको भारत सरकार ने रिकमैंड किया था या उनको दिया जहां की सरकार ने नौमीनी मुकर्रर करके यहां भेजे लेकिन किसी किस्म की हेराफेरी वाली बात नहीं हुई । भारत सरकार ने हमें यह भी कहा कि दूसरे प्रान्तों में अच्छा बीज नहीं बनता है, आप के प्रान्त में ही अच्छा बीज बनता है । इसलिये आप अच्छा वीज बना कर आसाम, बिहार, वैस्ट बंगाल और महाराष्ट्र आदि को दें । हम इस बिना परसीड कार्पोरेशन भी बनाने जा चे हैं ताकि दूसरे प्रान्तों को भी अच्छा बीज दे सके और अपने यहां भी किसनो को अच्छा बीज मुहैया कर सकें । अच्छा सीड पैदा करके हमने अच्छा काम किया है कोई बुरा काम नहीं किया है । दूसरी वात यह है कि इस बार चने के सीड की बहुत कमी रही क्योंकि पिछले साल घना कम पैदा हुआ

। चना कम पैदा होनेकी वजह से हमने राजस्थान से 12,000 क्विटल चने का सीड मंगवा कर किसानों को 185 रुपये क्विटल के भाव से दिया जबकि उसकी मार्केट प्राइस 225 रुपये क्विंटल थी । हमने किसानों को ठीक और मुनासिब कीमत पर बीज देने की कोशिश की बै । जहां तक इन्होंने कह पैदावार में क्या इजाफा हुआ है? मै एक बात चौधरी दल सिंह जी को 67– 68 में भी 39.50 लाख टन अनाज हुआ था लेकिन इन्होंने यह नहीं सोचा कि कुदरत पर भी कुछ बातें डिपेंड करती हैं । 1967– 68 मे 12. 40 लाख टन चना हुआ था और 46.60 लाख टन बाजरा हुआ था । यह एक ऐसी क्राप है जो नेचर पर डिपेंड करती है । जिस समय अच्छी बरसात हो जाए या अच्छा सीजन लग जाए तो चना ते बहुतही अच्छा हो जाता है । मैं इनसे यह पूछना चाहता हूं कि उस समय गेहूं कितना पैदा हुआ और बाजरा कितना पैदा हुआ? 1966– 67 में साढ़े दस लाख टन गेहु पैदा हुआ । लेकिन पिछले साल भाखड़ा .में पली कम होने की वजह से बिजली को कमी रही और नहरों में भी पानी कम चला औत गर्म हवाएं चलीं उसके बावजूद भी हमने साढ़े इक्कीस लाख टन गेहूं पैदा किया और उससे पिछले साल 24 लाख टन गेहूं पैदा किया था और 1971– 72 में हमने साढ़े सैंतालीस लाख कमं अनारु पैदा किया । इसी तरह से धान को लो, 1966– 67 में जहां 2, 23,000 टन चावल पैदा होता था आज इस साल तह 560000 टन पैदा हुआ है । ये तो सिर्फ एक बात कोही लेकर चल पड़े लेकिन इनको पता होना चाहिये कि नेचर पर भी बहुत कुछ डिपेंड करता है । इसके

साथ–साथ इन्होने होल सेल ट्रेड मे सरकार की बड़ी भारी आलोचना को कि सरकार की यह गल्त पालिसी थी । तो क्या कोई बताने वाला है कि सरकार को क्या गल्त पालिसी थीं? हमने ठीक भाव पर अनाज खरीदा और ठीक भाव पर बेचा । अगर यह सरकार होल सेल ट्रेड टेक ओवर न करती तो पता है गरीबो की क्या हालत होती? गरीबों को आज गेहूं 3– 4 सौ रुपये क्विटल के भाव से मिलना था अगर ऐसा होता तो जिस गरीब आदमी ने अनाज मोल लेकर खाना है बताओ वह क्या करता ? चौधरी दत सिंह ले यहं भी कहा कि अनाज का टारगेट इसलिये पूरा नहीं हुआ कि अनाज को समगलिंग हाँ गई । मैं इनको बताना चाहता हूं कि पिछले साल जब 24 लाख टन लाख पैदा हुआ तो उस साल भी हमने 8 लाख 18 हजार टन प्रक्योर किया और 15/16 लाख टन स्टेट में अपने खाने के लिये रहता है । इस बार साढे 21 लाख– टन पैदा हुआ जिसमे से 5. 90 लाख टन हमने सैंट्रल पूल में दिया और 15– 18 लाख टन अपने खाने के लिये वे स्टेट में रहा है पिछले सालों की तरह इस बात से भी इन्कार नहीं करता कि हो सकता है कहीं पर थोड़ा सा अनाज समगल हो गया हो क्योंकि हमारे बिल्कुल साथ में राज–स्थान है और तीन– सौ मील लम्बा वार्डर इतने लम्बे वार्डर के ऊपर सभी जगह तो हमारे आदमी नहीं रह सकते इसलिये हो सकता है कि कोई ऊंट या सिर पर उठा थोडा बहुत अनाज ले गया हो, क्योंकि खेत के साथ खेत राजस्थान दिल्ली और हरियाणा का लगता है । 15 लाखा रुपये के करीब हमने अनाज पकडा जो वाहर जा रहा था । हमारे

फूड डिपार्टमैंट और पुलिस ने बड़ा अच्छा काम किया उन्होंने हर संभव कोशिश की कि अनाज समगल न होने पाए । इसलिये बड़े पैमाने पर कोई समगलिंग नहीं हुई, इनको तो गल्त बात कहने की आदत है ।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : अगर दो चार सेर अनाज चला भी गयी तों कौनसा पाकिस्तान चला गया, हिन्दुस्तान में ही गया होगा ।

चौधरी भजन लाल : डिप्टी स्पीकर साहिबा, मेरे कहने का मतलब है कि प्रक्योरमैंट भी हमने जो हमारी स्टेट में अनाज पैदा है उसके मुताबिक की । चाहे इस साल के आंकडे भी मिला कर देख लो और पिछले साल के देख लो, हमने ठीक किया है । एक बात चौधरी चांद राम जी ने कही कि जो हवाई छिड़काव हुआ गन्ने पर, उसके नीचे यानी हवाई छिड़काव के नीचे फिरते आदमी नहीं मरे, मैं उनको क्या कहूं या उनको दवाई के बारे में ही नहीं पता और या फिर ये खेतों में नहीं गये जहां छिड़काव हो रहा था । इनकी तसल्ली तो तभी होती अगर दो–चार आदमी मर जाते । मैं इनसे यह जानना चाहता हूं कि दवाई छिडकने से कीड़े मरे या नहीं मरे? अभार हम खेतों में दवाई न छिडकते तो गन्धे की फसल को बीमारी से बहुत ज्यादा नुक्सान हो जाता । डिप्टी स्पीकर साहिबा, दवाई– दो किस्म को होती है । एक दवाई इस किस्म की होती है जिसमें पानी नहीं मिलाया जाता उसका नाम है यू. सी. वी0 और लो वोलियम की है और दूसरी का नाम है एच .

वी. एस . यह हाई वौलियम को होता है और इममें पानी का मिलान होता है । तीसरी दवाई जिससे आदमी मर जाते है उसका नाम मलोथियन इसकी बदबे भी काफी गन्दी होती है और इसकी अगर आदमी सूंघ भी ले तो भी उसके मरने के चांसिज होते हैं लोकिन इन दवाईयों से आदमी नहीं मरते इससे सिर्फ कीड़े ही मरते हैं । गले पर हमने जो स्परे किया उससे गले की बीमारी नहीं रही । किसी भी खेत में अगर स्परे न होती तो गन्ने के अलावा दूसरी फसलों पर भी इस बीमारी का प्रकोप पड़ता । लेकिन इन्होंने पता नहीं कैसे बात कह दी । डिप्टी स्पीकर साहिबा, इस स्परे के काम पर भी 35 लाख के करीब खर्च किया गया है जिसमें से आधा खर्च हमने भारत सरकार से लिया है और आधा उस एरिया के मिलों से लिया है जहां छिड़काव किया गया था । किसानो के ऊपर हमने बहुत कम खर्च डाला है । अनाज के बारे में मैंने जैसे आपको बताया इन्होने काफी गश्त बातें को हैं । रूई में भी हमने बड़ी भारी प्रगति की है । 1966–67 में 2,88 हजार गांठें रूई की बनी आज साढ़े चार लाख गांठें रूई की बनती हैं 1 इसके साथ ही डिप्टी स्पीकर साहिबा, जहां तक खाद का ताल्लुक है इस बात को मैं भी महसूस करता है कि खाद की सारे देशे में कमी है और उस का कारण यह है कि बहुत सी खाद हमारे मुलक में बाहर के देशों से आती है और वहां पर भी चुंकि खाद कम बनती है इस लिए सैट परसंट कमी पूरी नहीं हो सकती । डिप्टी स्पीकर साहिबा, जिस वक्त हरियाणा बना था उस वक्त यहां पर 68 हजार टन खाद लगती थी और पिछले साल में खाद

की कभी होने के बावजूद भी व लाख 71 हजार टन खाद हम ने किसानों को दिया और इतना इस्तेमाल हुआ । इस साल हमने भारत सरकार से कहा था कि 9 लाख 80 हजार टन खाद हमें चाहिए हरियाणा के लिए लेकिन उन्होंने साढ़े सात लाख टन हमे अलाट किया है जिस में से 5 लाख टन हमें मिल भी गया है । भारत सरकार ने दूसरी ग्राटो के सिलसिले में भी हमारा पूरा ध्यान रखा है और वह हमारी पूरी–पूरी सहायता भी करती है । इस के साथ–साथ हमने पैडी बोने के समव खरीफ कैम्पेन चलाई, उस के लिए हम ने एग्रीकल्चर यूनिवसिर्टी से 100 एक्सपर्टस बुलाए और उनकी टीम मुकरर्र को ताकि वे लोगों को जा जा कर समझाए' कि पैडी को किस तरह से और कितना–कितना खाद देना है और उसमे किस तरह से बीमारियों बगैरा से बचाना है । यह उसी का ही नतीजे है कि आज हम सारे देश में चावल की पर एकड़ ईल्ड के हिसाब से सब से आगे हैं । इसी तरह से हम ने खूबी कैम्पेन के लिए भी तीन सी एक्सपर्टस एग्रीकल्चर युनिवर्सिटी से मंगवाए और एक हजार गांवों में किसानों को डिमौन्स्ट्रेशन के जरिए सारी बाते बताई कि किस तरह से और कितनी कितनी मिकदार मैं बीज और खाद का इस्तेमाल करना है । इस के अलावा हम ने पानी और बिजली की कमी को ध्यान में रखते हुए ऐसे किया कि जिस एरिया में पहले फसल बोई जानी है वहां पर उसी एरिया की क्राप और सोइग के लिए वैस्टर्न जमुना कैनाल का पानी भाखड़ा कैनाल में दिया और भाखडा कैनाल का पानी वेसटर्न जमना कैनाल मेदे दिया, जिस एरिया के लिए पानी चाहिए था वहां जरूरत के

मुताबिक पुरा पानी दे दिया, जहां पैडी के लिए चाहिए वहां पहले पैडी को दे दिया और अगर कौटन के लिए जरूरत पड़ी तो वहां का पानी वहां पर दे दिया और इसी तरह से हम ने बिजली भी दो ताकि किसान ज्यादा से ज्यादा पैदावार कर सकें । इस के अलावा वर्लड बैंक को मदद से हम ने पांच साल में 11 हजार टयुबवैल लगाने थे लेकिन हम वह दो साल मैं लगा कर सारे देश में अव्वल चे ।हम ए .आर .सी . स्कीम के तहत 30 हजार ट्यूबवैल और लगाने जा रहे हैं । हमारे प्रान्त में कुल 115 लाख एकड़ भू मि सै जिस में से 9 लाख एकड़ भूमि कलर और शोर की है और वह खराब हो गई है । हम उसको रिक्लेम करने जा रहे हैं । हम ने उस के लिए भारत सरकार से सहायता ली है । हमे 19 करोड़ रुपया ए.आर.सी. ने उस जमीन को रिकलेम करने के लिए दिया है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, इस के इलावा 6 लाख एकड़ भूमि और ऐसी है अगर उस को हम ने कंट्रोल न किया तो उस में भी शोर कलर और हो जायेगा । तो उस के लिए हम ने पहले प्रोग्राम बनाया है । हम ने पहले करनाल मैं रिक्लेमेशन का काम शुरू किया है, अगर कोई भाई देखना चाहे तो वहां पर जा कर देख सकता है कि कितना अच्छा काम होरहा है । हिसार जिला में 18 करोडु रुपया हम ने काटन की पैदावार बढाने के लिए रखा है । हम अढाई लाख एकड़में पहले से और ज्यादा 320 एफ काटन को काश्त करवाएंगे और इस के इलावा 320 एफ काटन का बढ़िया बीज लोगों को देंगे जिस से कि काटन की पैदावार हमारे प्रान्त में बहुत बड़ जाए गी । इस के साथ साथ हमारी जो एग्रीकलचर

युनिवर्सिटी है यह केवल हिन्दोस्तान में ही नहीं बल्कि जापान को छोड़ कर अगर मैं कहूं सारे एशिया में टोप पर है तो यह कोई गलत बात नहीं होगी । जहां तक मिल्क प्लाट का ताल्लुक है यह हम हर डिस्ट्रिक्ट हैडक्वाटर पर मिल्क प्लांट लगाने जा रहे हैंऔर हमारी जो प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का गरीबी हटाओ प्रोग्राम है उस को पूरा करने में इस स्कीम से बहुत मदद मिलेगी । इस में हर गरीब कदमी और छोटा किसान, चाहे वह हरिजन है चाहे और जाति का है, हर गरीब आदमी चार पांच भैसे रख कर दूध बेच कर अपना गुजारा कर सकेगा । इस के साथ–साथ मफाल और एस.एफ.डी.ए. के तहत हमारी कुछ स्कीमें हैं । इस के तहत हम 25 परसेंट से लेकर 33 परसेंट तक हम गरीब आदमियों को सबसिडी दे रहे हैं । और इन स्कीमों के तहत हम ने 10 करोड़ रुपए केलोन दिए हैं और भारत सरकार न हमारे इस काम की बहुत प्रशंसा की है । इसी तरह छोटे किसानों को सुविधा के लिए जो लोग ट्रैक्टर नहीं खरीद सकते उनकी मदद करने के लिए हम देहातो में एग्रो–ईडस्ट्रीज सेंटर खोल रहे हैं । हम हर ब्लाक में यह सैंटर खोलने जा रहे हैऔर उन सैंटरों में तीन तीन, चार–चार ट्रैक्टर रखे जाएंगे ताकि थोड़ी–थोड़ी जमीन वाले लोग ट्रैक्टर हायर करके खेती से पूरा फायदा उठा सकेंगे इस से भी लोगो को बहुत सुविधा मिलेगी । तकावी का जहां तक ताल्लुक है जिस वक्त डिप्टी स्पीकर साहिबा, हरियाणा बना उस वक्त किसानों को एक करोड 59 लाख रुपया. कर्जा मिलता था लोकिन आज 1972–73 मे हम ने 39 करोड़ रुपया किसानों को कर्जे के रूप में

दिया है, यह कोई छोटी बात नहीं है। बहुत बड़ी बात है । अब क्योकि टाईम थोड़ा है और मित्तल साहब ने बोलना है इस लिए मैं और ज्यादा नहीं कहना चाहता और आपका धन्यवाद करता हुं । जिन मैंबरों ने बेबुनियाद बातें कहीं एं उनको ऐसी बातें नही करनी चाहिए थी, वाकी चिन मैंबर साहिबान ने ठीक सुझाव दिए हैं उन के ऊपर सरकार विचार करेगी और जहां तक हो सकेगा उनके ऊपर अमल करने की भी कोशिश करेगी । इतना कह कर मैं अपना स्थान लेता हूं ।

वित्त मंत्री (श्री रामसरन चन्द मित्तल) : माननीय उपाध्यक्ष महोदया, इस बजट पर बोलते हुए ज्यादा तर माननीय सदस्यों ने इस का स्वागत किया है जिस के लिए मैं उनका बहुत आभारी हूं । विरोधी दल के और इन्डीपैंडैंट मैंबरो ने भी ज्यादातर इस का स्वागत किया है ।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : मित्तल साहब, मैं ने भी इस का स्वागत करना था इस लिए उस लिस्ट में मेरा भी नाम दर्ज कर लीजिए ।

श्री रामसरन चन्द मित्तल : आप का नाम भी दर्ज कर लिया है मैं ने अपनी लिस्ट में और मैं आप का भी धन्यवादी हूं जो आप दे इस को सराहना की है । डिप्टी सीकर साहिबा दो चार मैंबरो ने इस कॉ काफी नुक्ताचीनी की है, नुक्ताचीनी करना तो वैसे उनका हक भी है और सरकार को भी उनकी नुक्ताचीनी पर

पूरा ध्यान देना चाहिए । लेकिन नुकताचीनी कई प्रकार की होती है, एक तो महज नुक्ताचीनी के लिहाज से ही की जाती है और दूसरी होती है अगर कोई गवर्नमैंट की तरफ से कभी रह गई हो तो उस को दुरुस्त करवाने के लिए गवर्नमैंट का ध्यान दिलाया जाता है ताकि वह गलती ठीक कर दी जाए । लेकिन जो महज नुक्ताचीनी के लिए यहां बातें करते हैं उनकी तरफ ध्यान नहीं दिया जाता मगर जो कंस्ट्रिक्टिव नुक्ताचीनी हो उस पर सरकार विचार करती वै । मैं मैंबर साहिबान को यह बताना चाहूंगा कि हमारी हरियाणा को जो इकानोमी है वह बहुत साऊंड है बावजूद इस बात के कि. इस को कई प्रकार के धक्से लगे । आप जानते है कि जब जब देश के अन्दर जंग हुआ, जिस किसी ने वह जमाना देखा हो, 1914, 1918 की लड़ाई ओर उस के बाद फिर दूसरी जंगे स्कीम हुई और उस के बाद इन्डो–पाकिस्तान वार हुई, तो जव जब लड़ाईया हुई तो उस से चीजों को कीमतें बडी और मंहगाई हुई । तो हमारा देश भी इन बातों से खाली नहीं है । वार के बाद जब प्राइसिज बढ जाती है तो हर एक बजट पर उनका असर पड़ता है । इसके अलावा दो तीन फैक्टर्ज हैं जिनका हमारी इकानोमी पर असर पड़ा जैसे कि आबादी का बढ जाना और फिर इन्द्र भगवान का समय पर बारिश न करना और अगर करनातो कम करना । इन बातों का इकानोमी पर बहुत असर पड़ता है । हमारी इकानोमी पर इन तमाम बातों का असर पड़ा, पावर शार्टेज हुई और फूड ग्रैन्ज की प्रोडक्शन पर भी बुरा असर पड़ा लेकिन इन बातों के बावजूद हमारी हालत अच्छी रही क्योंकि हमने शुरू–शुरू

में जो इलैक्ट्रिफिकेशन हरियाणा में की और एग्रीकलचर को तरक्की देने के बारे में जो बातें की वजह से हमारी अर्थ व्यवस्था बुरे हालत के बावजूद भी बहूत अच्छी रही । आईसिज का बढ़ना न सिर्फ इस प्रदेश और देग का मसला है बल्कि यह आल वर्ल्ड फिनामेनन है हमारी प्रधान मंत्री जी ने भी इस बारे में कई जगह कहा है कि ऐसी चीजे जो हुई है इनका हमारे देश पर ही नहीं सारे संसार पर इनका असर पड़ा है । तोइस में घबराने की कोई नहीं है हमारी इकानोमी बहुत अच्छी है, साऊंड है, अच्छी रहेगी और ईश्वर ने चाहा तो ज्यादा भी अच्छी रहेगी क्योंकि हमारा वेस बहुत मजबूत हैं । बजट के बारे में यहां विरोधी दल के कुछ भाईयों ने कहा कि हमारे ऊपर कर्ज बहुत हो गया है और करोड़ों रुपऐ हमे सूद के देने पड़ते है । ठीक है जब कर्जा लिया है तो करोड़ों रुपए हिसाब से ब्याज के भी देने पडते हैं । लेकिन हमें एक बात को ध्यान में रखना चाहिए कि अगर हम अपने प्रांत की तरककी करना चाहते हैं और उम्रके लिये हमारे पास अगर साधन नहीं हैं पैसा नही हैं (इस समय श्री अध्यक्ष पदासीन हुए) तो हमें कर्जा लेना पड़ेगा और अगर नहीं लेगे तो तरक्की के काम नहीं कर सकेंगे. जब कोई आदमी नया नया अपना विजनैस सैट अप करता है तो जो उसके पास पैसा होता है बह अपने पास से भी लगाता है और फिर भी अगर काम न चले खो कर्ज भी लेता हैं । इसी तरह से सरकार भी करती है और तरक्की के कामों के लिये कर्ज लेकर काम चलाती है, उस रकम पर सूद भी देते हैं और फिर असल भी अदा कर देते हैं । हम भी प्राईवेट बिजनैसमैन की

तरह से काम करते हैं कि काम चलाने के लिये कर्ज लेते है । जब हरियाणा वना था तो हमारे पास रिसोर्सिज नहीं थे और उस वक्त लोग तो यह कहते थे कि हरियाणा तो बन रहा पैं लेकिन शायद यह अपने मुलाजिमों को तनखाह भी न दे सके । आज आप देखें हमारी इकानोमी कितनी अच्छी है और यही लोग जो ऐसी बातें करते थे हरियाणा के बारे में आज तारीफ कर रहे है और साथ में हैरान हो रहे हैं कि इतनी भारी तरक्की कर ली इस थोड़े से अर्से में अभी फायनैसं कमीशन ने कर्जो के बारे में कुछ हिसाब लगाया है कि हर स्टेट को कर्बे पर कितना व्याज देना पड़ता है और अगले पांच साला प्लान मे कितना कर्जा हो जायेगा और कितना व्याज देना पड़ेगा । उन्होंने पांच साल के लिये हिसाब लगाया है कि 64 करोड़ रुपये हम को देने पड़ेंगे लेकिन दूसरे प्रांतों पर यह रकम कितनी पडेगी वह मैं आपको बताना चाहता हुं ताकि आपको पता लगे कि उनके मुकाबले में हमारी पोजीशन क्या बै । तो राजस्थान के जिम्मे यह 375 करोड रुपये आयेगा, आध प्रदेश के 201 करोड, महाराष्ट्र के 246 करोड़, उत्तर प्रदेश के 270 करोड़ और वैस्ट बंगाल के जिम्मे यह रकम होगी 207 करोड़ रुपये होगी इसी तरह और प्रदेशों के फिगर्ज भी मेरे पास हैं लेकिन मैं उन सव में नहीं जाना चाहता । मेरे कहने का मतलव यह है कि कर्जा लेना और सूद उस पर देना कोई डैमेजिंग बात नहीं है यह तो तरक्की की निशानी है कि हम रिसोर्सिज जो हमारे अपने हैं उनको तो लगाते ही हैं लेकिन तरक्की के लिये कर्जा भी लेते ताकि बहबूदी के काम ज्यादा से ज्यादा हो । कर्ज अगर लेते हैं

तो कोई बुरी बात नहीं हे । लेकिन इस में देखने वाली बात जो है वह यह है कि जो कर्ज लिया जाता है वह खर्च कहां किया जाता है । अगर एक प्राइवेट आदमी कर्ज लेकर शादी विवाह पर खर्च कर देता है तो यह नुकसान वाली बात है लेकिन अगर उस पैसे को बिजनैस पर लगायेगा तो फायदा होगा । इसी तरह मैं अर्ज करता हूं कि हमने जो पैसा कर्ज लेकर इम्बैस्ट किया है वह प्रोडक्टिव कामों पर किया है जिससे प्रांत को फायदा पहुंचे प्रांत कीं पैदावार बढे और आमदनी बढे और हमें इससे जो फायदा पहुंचा है वह कहने की बात नही सब जानते हैं हर जगह तारीफें हो रही है प्रांतीय लेवल पर भी और नैशनल लेवल पर भी । चौधरी राम लाल जी ने ऐक्सप्लेनेटरी मैमोरैडम के पेज 18 को पढ़ कर उस पर यह एतराज किया कि उस में जो 8.06 करोड फिगर उसमें दस लाख कर डिस्क्रैपेंसी है । अगर वह उसकी डिटेल्ज में जाकर देखे तो उनको पता लग जायेगा कि ये फिगर्ज ठीक है और उसमें कोई डिस्क्रेपैसी नही है उसके।. डिटेल्ज यह है, स्टैम्पस और रजिस्टेरशन + 2 लाख प्रापर्टी टैक्स + 5 लाख इलैस्ट्रिसिटी ड्यूटी 3 लाख इस तरह सारी रकम हिसाब में आ जाती है । यह कोई डिस्क्रेपैसी ऐसी नही है जिससे यह ख्याल किया जाये कि बजट में कुछ कमी रह गई है जैसेकि चौधरी राम लाल जी ने कहा । अब में प्वांयट बाई प्वांयट अर्ज करता हूं । बिजली के बारे में यहां पर कई कुछ कहा गया । मैं समझता हूं कि शायद इस बारे मे मेरे कुछ कहने की' जरूरत भी नहीं है क्योंकि बिजली के मिनिस्टर साहब गुप्ता जी ने इस बारे में बड़ी

तफसील केसाथ बता दिया है लेकिन फिर भी है दो तीन बाते इस बारे में बताना चाहता हूं । जब ज्वायट पंजाब होता था और जब हरियाणा बना उस वक्त भी और जब तक यह बंसी लाल सरकार नहीं वनी थी उस वक्त तक भी यही होता था कि जब कोई किसान कुनैक्शन के लिये एप्लाई करता था तो हिसाब लगाया जाता था कि बिजली का खम्बा कहा पर है, और फिर उस किसान का घर कितनी दूरी पर वहां से है, कुनैक्शन देने पर खम्बों तारों ट्रांसफार्मर बगैरा पर किताना खर्च आयेगा और सारा हिसाब लगा का देखा जाता था कि क्या वह कुनैक्शन देना पेइंग प्रोपोजीशन है अगर है तो कुनैक्शन दिया जाता था वरना नही दिया जाता था । लेकिन जब यह सरकार आई इस ने इस सिस्टम को चेंज कर दिया और यह कर दिया कि टयुबवैल के लिये जब कोई कुनैक्शन' मांगे तो चाहे उसका गांव दस मील पर हो बगैर घाटा मुनाफा देखे उसे कुनैक्शन दिया जाये । मैं अर्ज करता हूं कि लगभग तीन चार साल हुये सारे भारत के बिजली के मिनिस्टर्ज की एक मीटिंग हुई थी और उस में यह फैसला हुआ था कि 1 980 तक सारे भारत में आधे गांव को बिजली जरुर दे दी जाये लेकिन वह 1980 आने में तो अभी वहुत देर लगेगी । हरियाण सरकार ने 1970. के आस पास ही हरियाणा के सौ फीसदी गांव को बिजली दे दी । इसका नतीजा यह हुआ कि हरियाणा जो पहले अनाज के बारे में डैफिसिट था सरप्लस हो गया । इस बारे मे से एक हीं जिला की मिसाल देता हूं । गेहूं का मामला में महेन्द्रगढ जिला हमेशा ही डैफिस्टि रहा है लेकिन 1972 में वही इतना अनाज हुआ

कि वह सरप्लस हो गया और अकेली नारनौल तहसील ने पचास हजार क्विटल गेहूं बाहर भेजा । अगर इस में महेन्द्वगढ और दादरी के फिगर्ज भी शामिल कर दूं तो यह फिगर्ज और ज्यादा हो जाते हैं । मेरे कहने का मतलब यह है कि बिजली देने का नजरिया जो पहले उसे हम ने बदल दिया । हम ने कह दिया कि एग्रीकल्चरल प्रोडकशन के लिये जितनी बिजली किसान मांगे मांगे जहां चाहे दे दी जा ये । यह ठीक है कि बिजली की कमी है लेकिन आप देखें विजली की डिमांड एग्रीकल्चरल, इन्डड़ीयल, डुमैस्टिक परपजिज और दूसरे कामों के लिये कितनी बढ गई है । इस लिये शार्टेज तो हे, नी ही थी जिसे मीट करने के इन्तजाम भी सोचे और किये जा रहे है । कुछ शार्टेज इस लि ये भी आई कि पानी कम बरसा इसलिये बिजली पं दा भी कम होने लग गई और यह सारी दिस्वरूत आई । लेकिन हम ने कहा कि एग्रीकल्चर के लिये प्रायर्टी दी जाये और इस के लिये जितनी बिजली की जरुरत है वह पहले पूरी की जाये सब से पहले किसान को बिजली दी जाये उसके बाद इन्डस्ट्री– यल और फिर दूसरे परपजिज के लिये दी जाये । मैं समझता हूं बिजली पर एतराज करना तो हरियाणा के साथ अन्याय करना है । आज कितनी बिजली पैदा होती है और कितनी हमें मिलती है उसकी डिटेल्ज मैं आपके सामने पेश करना चाहता हूं । मैं आपको डि टेल्ज देना चाहता हूं कि कहां–कहां से कितनी–कितनी बिजली मिलतीं है । भाखड़ा नंगल प्रौजैक्त से 28 लाख यूनिट प्रतिदिन, इन्दपरस्थ स्टेशन से 12 लाख यूनिट प्रति दिन–, बदरपुर थर्मल प्लांट से 4

लाख यूनिट प्रतिदिन, राणा प्रताप सागर अटोमिक प्लाट से 5 लाख यूनिट प्रतिदिन और फरीदाबाद थर्मल प्लांट और सूरजपुर प्लांट से 3 लाख यूनिट प्रतिदिन मिलती है । इस तरह से हमें 52 लाख यूनिट प्रतिदिन इलैक्ट्रिसिटी मिल रही है । इसके अलावा, जैसा आपने गुप्ता जी के भाषण में सुना होगा, हम फरीदाबाद और पानीपत में थर्मल प्लांट लगा रहे हैं और कोशिश यह की जा ची है कि आयदा के लिए बिजली की कमी न व्हे । लेकिन एक रोज में ये सब काम नहीं होते, हर एक चीज के लिए रुपये की जरूरत होती है, प्लांट लगाने में टाईम लगता है लेकिन यह बात जरूर है कि बिजली की कमी को पूरा करमे की कोशिश को जा रही हूं इसके अलावा जैसा कि मैंने अपने भाषण में शुरू में कहा था कि हम ने 50 लाख टन अनाज पैदा करने का टारगैट इस साल रखा हुआ है और इसको पूरा करने की जरूर कोशिश की जाएगी । फर्टिलाईजर की कमी भी मिलती है, इस कमी को पूरा करने के लिए भी कोशिश की जा रही है जैसा कि आपको कल बताया गया था ।

स्पीकर साहव, हमारे खर्चे के बारे में कुछ इतराज किए गए हैं । यह कहा कि साहब, एयर क्राफट के ऊपर इतना पैसा खर्च किया जा रहा है । दरअसल एयर क्राफ्ट को गलत तरीके से देखा गया है । यह 8 लाख रुपया महज एक ही हवाई जहाज के लिए नही है । इसकी डिटेल्ज आप देख लीजिए । 2 लाख 64 हजार रुपया सैलरी का है, इसी तरह से मशीनरी का है, एक्विपमैंट

का है, आफिसिज एक्सफैंसिज का है और इसी तरह की कई और चीजें है जिन का खर्च इसमें शामिल है । जैसे फ्यू ल आयल, रेडियो–एक्विपमैंट, इस्ट्रमैंट्स, मेन्टेनैसं चार्जिज, टेलिफोन, पोस्टेज वगैरा वगैरा सब बातें इसमें शा मिल है । जब तक आदमी एयर–माईडिंड न बने तब तक काम नहीं चलता आप देखें, दूसरे देशों में ऐरोप्लेन से बहुत ज्यादा काम लेते हैं । अगर वह यह कहे कि एरोप्लेन तब ले सकते हैं जव हमारे दूसरे काम पूरे हो जाएंगे तो काम नहीं चलेगा । इससे हमारे यहां बच्चो को ट्रेनिग दी जाती है । स्टूडैटंस ट्रेनिंग लेते हैं ताकि एयर सर्विसिज में जा सकें वरना हमारे लड़के दूसरी सटेटी के मुकाबले में पीछे रह जाएंगे । तो यह कहना कि एयर क्राफ्ट पर खर्चा ठीक नही तो यह गलत बात है. यह जरुरी चीज है, इसके अलावा जिसको एयर क्राफट इस्तेमाल करने कि जरूरत पड़ती है । वह इस्तेमाल भी करता है । तो जो खर्चा इस पर हुआ है इस पर एतराज करने वाली कोई बात नहीं है ।

स्पीकर साहब, कुछ माननीय सदस्यों ने अपने अपने इलाके की मांगे सदन में रखीं मैं उन मांगों पर इस वक्त जाना नहीं चाहता क्योंकि वे बहुत डिटेल में है, आफ हैंड कुछ नहीं कहा जा सकता । लेकिन जो मांगे उचित हैं, रुपये पैसे के हिसाब से अगर वे मांगे ठीक होंगी तो पूरी की जाएंगी लेकिन इसको अश्योरेस के तौर पर न लिया जाए कि सव बाते जो कह दी हैं, जरूर हो जाएगी । मैं ज्यादा न कह कर समाप्त करता हुं ।

Mr. Speaker : The House stands adjourned till 2-00 P.M today,

(The Sabha then adjourned till 2-00 P.M. on Wednesday, the 16th January, 1974)

12.47 बजे